04 -मानव की कीमत पर पशु प्रेम, क्या पशुता नहीं है

05- विधि जगत में वरिष्ठ अभिभाषकों का आशय अलग!

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 6 जून, 2023

06 पौधों की आरती और प्रसाद अभिनव पहल : हेमंत खंडेलवाल

07- 5 सप्ताह ,13 बावड़ी और 1 तालाब

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 20 अंक 270 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

प्रसंगवश

पुतिन की वजह से क्यों कूटनीतिक जाल में फंसा दक्षिण अफ्रीका

एंड्रयू हार्डिंग

पिछले कुछ महीने दक्षिण अफ्रीका के लिए कूटनीतिक लिहाज से असहज करने वाले रहे हैं। रूस-यूक्रेन युद्ध में मध्यस्थता के ज़रिए दक्षिण अफ्रीका खुद को गंभीर और संतुलित दिखाने की कोशिश कर रहा था, और गुट निरपेक्षता का अंतरराष्ट्रीय अगुवा बनने की कोशिश कर रहा था। लेकिन इस बीच ये देश अंतरराष्ट्रीय झगड़ों के भंवर में फंस गया है और अब देश की मुद्रा गिर रही है। दक्षिण अफ्रीका के रूस के साथ मधुर संबंध रहे हैं। जिसकी वजह से पश्चिमी देशों में एक धारणा बनी है कि दक्षिण अफ्रीका ने यूक्रेन युद्ध में रूस की मदद के लिए हथियार भेजे हैं।

लेकिन क्या यह धारणा सही है, और दक्षिण अफ्रीका की साख और इसकी नाज़ुक अर्थव्यवस्था के लिए इसके क्या मायने हो सकते हैं?

एक दक्षिण अफ्रीका अधिकारी मानते हैं कि कि 'ये एक बुरे सपने जैसा है।' वे इसी सप्ताह केपटाउन में ब्राज़ील, रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका वाले ब्रिक्स समूह के विदेश मंत्रियों की बैठक के इतर ऑफ़-द-रिकॉर्ड बोल रहे थे। पश्चिमी राजनयिक दबे शब्दों में यूक्रेन युद्ध पर दक्षिण अफ्रीका के रुख़ को लेकर नाराज़गी जता चुके हैं। उनका कहना है कि दक्षिण अफ्रीका खुद के 'निष्पक्ष' होने की बात करता है लेकिन इस मामले पर खरा साबित नहीं हुआ है।

केप टाउन में बसे एक रूसी शिक्षक इरिना फिलाटोवा कहते हैं कि, 'सरकार रूसियों के पक्ष में है। इसमें कोई शक़ नहीं है। उनका मानना है कि दुनिया अब पश्चिमी मुल्कों के हाथ से निकल रही है। उनका (दक्षिण अफ्रीका सरकार) मानना है कि रूस मज़बूत देश है और जंग जीत सकता है। वे एक रणनीतिक भविष्य के तहत नई विश्व व्यवस्था में निवेश कर रहे हैं।' लेकिन दूसरे जानकारों का ये कहना है कि पश्चिमी मुल्क इस मामले में ग़लत हैं, वो दक्षिण अफ्रीका के बारे में सही आकलन नहीं कर पा रहे और राजनयिक हलकों में इसे बड़ा मुद्दा बनाए हुए हैं। राजनीतिक विश्लेषक फिलानी एमथेम्बू कहते हैं, 'दक्षिण अफ्रीकी सरकार अमेरिका, ब्रिटेन या फिर यूरोपीय संघ से दूर नहीं जाना चाहती। ये सभी उसके महत्वपूर्ण व्यापारिक सहयोगी हैं। ये ग़लत आकलन के कारण खड़ी हुई परेशानी है जिसका कोई आधार नहीं।'

यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद दक्षिण अफ्रीका ने अपनी शुरुआती प्रतिक्रिया में रूस से तत्काल अपनी सेना को वापस लेने के लिए कहा था। लेकिन जल्द ही दक्षिण अफ्रीका ने अपना रुख़ बदल लिया और उसने संयुक्त राष्ट्र में रूसी सरकार की आलोचना करने से इनकार कर दिया था और रूसी हमले के प्रति तटस्थता की नीति अपनाई थी। लेकिन दक्षिण अफ्रीका की कई कार्रवाइयों और बयानों को उसके तटस्थ रुख़ से इतर पाया गया, जिसकी वजह से यूक्रेन के सहयोगी दक्षिण अफ्रीका से नाराज़ हैं। दक्षिण अफ्रीका ने रूसी हमले के साल भर होने के बाद रूसी नौसेना अभ्यास की मेज़बानी की।

दक्षिण अफ़्रीका ने क्रेमलिन के वरिष्ठ अधिकारियों का गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। इसके बाद अपने देश के सेना प्रमुख को युद्धाभ्यास के लिए मास्को भेजा।

इस देश के वरिष्ठ अधिकारी अक्सर रूसी सरकार की बातों को दोहराते रहे हैं कि कैसे अमेरिका एक 'परोक्ष' युद्ध छेड़ रहा है और कैसे पश्चिमी ताक़तों से लैस यूक्रेन अब रूस के लिए ख़तरा बन गया है।

पिछले दिसंबर में दक्षिण अफ्रीका में रूसी जहाज द लेडी आर के डॉकिंग की परिस्थितियों की जांच का आदेश दिया गया है। हाल ही में एक न्यूज़ कॉफ्रेंस में पश्चिमी कूटनीति की हताशा आख़िरकार सामने आ गई। जब अमेरिकी राजदूत रूबेन ब्रिगिटी ने दक्षिण अफ्रीका पर रूस को हथियार देने का आरोप लगाया। रूबेन ब्रिगिटी ने कहा, 'हमें विश्वास है कि उस जहाज़ पर हथियार लादे गए थे। मैं उस दावे की सटीकता के एवज में अपनी जान दांव पर लगा दूंगा।'

अमेरिकी राजदूत की टिप्पणियों से दक्षिण अफ्रीका के कई हलकों में गुस्से की झलक मिली। कुछ लोग इसे अमेरिका की औपनिवेशिक मानसिकता के तौर पर देखते हैं।

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी संघर्ष के प्रमुख चेहरे मावूसो सिमांग कहते हैं, यह जियो-पॉलिटिकल ब्लैकमेल है। दक्षिण अफ़्रीका के रक्षा मंत्री थांडी मोडिसे ने सरकार की हताशा को बयां किया है। दक्षिण अफ्रीका के कूटनीतिक गलियारों में दबे ज़बान ऐसी बात हो रही है कि अमेरिकी राजदूत ने मामले को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया है।

लेकिन जब अमेरिकी राजदूत ने कहा कि वो अपने बारे में किसी भी ग़लतफ़हमी को दूर करने के लिए तैयार हैं लेकिन ना तो उन्होंने अपने दावों का वापस लिया और ना ही माफ़ी मांगी।

दक्षिण अफ्रीका के साइमन टाउन के नौसैनिक बंदगाह के ज़रिए हथियारों को रूस भेजा गया था या नहीं इसके लिए राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा ने स्वतंत्र जांच की बात कही है।

इसके बाद से अपनी सरकार की तटस्थ छवि को दोबारा क़ायम करने के लिए उन्होंने मास्को और कीव में एक शांति प्रतिनिधि दल भेजने की योजना का ऐलान किया है। दक्षिण अफ्रीका के विदेश मंत्री नलदेई पंडोर ने एक स्थानीय रेडियो स्टेशन को बताया कि, 'ये आसान नहीं होगा लेकिन इसे करना ही होगा'।

इस बीच विपक्षी डेमोक्रेटिक एलायंस (डीए) ने अफ़्रीकी नेशनल कांग्रेस (एएनसी) पर रूस के क़रीब होने का आरोप लगाया है, क्योंकि मौजूदा सरकार ने देश को दिवालियेपन की ओर ढकेल दिया है और एएनसी पार्टी की सरकार रूस से मिलने वाली आर्थिक मदद को जारी रखना चाहती है। उलझी हुई कूटनीति की वजह से दक्षिण अफ़्रीका पहले से ही काफ़ी आर्थिक कीमत चुका रहा है। अमेरिकी राजदूत के साथ हथियारों की तकरार के बाद दक्षिण अफ़्रीकी मुद्रा रैंड अमेरिकी डॉलर के मुक़ाबले तेज़ी से गिरी। इसके अलावा विदेशी निवेश और विदेशी व्यापार सौदों के नुक़सान को लेकर भी चिताएं हैं। पहले से ही लचर ऊर्जा प्रणाली, बेरोज़गारी और ढहते बुनियादी ढांचे से जूझ रहे देश के लिए ये बुरी ख़बर है। और दक्षिण अफ़्रीका अब एक और कूटनीतिक जटिलता का सामना कर रहा है। सरकार यह तय नहीं कर पा रही है कि अगस्त में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में जोहानिसबर्ग आने के लिए राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन को दिए गए निमंत्रण पर कायम रहना है या नहीं।

उनका कहना है कि रूस ने दक्षिण अफ़्रीका का इस्तेमाल चालाकी से किया है। इस बात के संकेत बढ़ रहे हैं कि दक्षिण अफ़्रीका पुतिन की मेजबानी से बचने की राह तलाश रहा है। और इसके लिए शायद वो ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेज़बानी किसी दूसरे देश को सौंप दे।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

छाती पर कपास की मंडी का तगमा
गौरी के गाल पर जैसे तिल काला
उगती थीं ऐसे तिल्लियाँ
घुँघरुओं-सी बाजती थी पैरों मे मूँगफलियाँ
फटे लिबास पर पैबंद और फटे पैबंद पर
एक और पैबंद
इतना फटेहाल था हरसूद
बनिए पी जाते थे तिल-मूँगफली-बिनौलियों का तेल
पौनी-बातियों का ब्योपार था बड़ा फरेबी
गरीब़-गुरवों के लिए दाल बघारना मुहाल
उफ! इतना अँधेर
कहते हैं, इस नगर का राजा सत्यवादी हरिश्चंद्र था।

- वसंत सकरगाए

हर अभिभाषक वरिष्ठ नहीं!

अभिभाषकों को उम्र और अनुभव के आधार पर अक्सर वरिष्ठ अभिभाषक लिखा जाता है। जबकि, विधि के अनुसार यह गलत है। अनुभवी होने के बावजूद सबके नाम के साथ वरिष्ठ अधिवक्ता नहीं लगाया जा सकता। विधि जगत में वरिष्ठ अभिभाषक घोषित करने की एक अलग प्रक्रिया है।

पेज-5 पर विधि विशेषज्ञ विनय झैलावत के कॉलम में आज आलेख का यही विषय।

अमेरिका में बोले राहुल गांधी

पूछिए ओडिशा ट्रेन हादसा कैसे हुआ, वो कहेंगे कांग्रेस ने 50 साल पहले ये किया

नई दिल्ली(एजेंसी)। अमेरिका गए राहुल गांधी ने ओडिशा ट्रेन हादसे पर कहा कि भाजपा सिर्फ बहाने बनाती है, सच्चाई नहीं स्वीकारती। उन्होंने कहा कि ऐसी ही घटना जब कांग्रेस के केंद्र में रहते हुए थी तो प्रभारी

- **उनसे आप कुछ भी पूछो, वो पीछे की ओर देखते हैं**

मंत्री ने नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफा दिया था। राहुल ने कहा कि बीजेपी और आरएसएस भविष्य की ओर देखने में असमर्थ हैं। उनसे आप कुछ भी पूछो वो पीछे की ओर देखते हैं। उनसे पूछो ट्रेन एक्सीडेंट क्यों हुआ, वो कहेंगे कि कांग्रेस ने 50 साल पहले ये किया... टेक्स्ट बुक में से आपने पीरियॉडिक टेबल क्यों निकाल दिया... कांग्रेस पार्टी ने 60 साल पहले ये किया... फौरन उनका जवाब आता है कि पीछे देखो...। राहुल ने इसके बाद भारत को एक कार बताया और कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पीछे

देखकर कार चला रहे हैं। फिर सोचते हैं कि कार आगे क्यों नहीं बढ़ रही, बार-बार टकरा क्यों रही है...। राहुल न्यूयॉर्क में भारतीय समुदाय को संबोधित कर रहे थे।

कार, रियर व्यू मिरर और मोदी...

राहुल ने वहां मौजूद लोगों से कहा कि आप सभी कार से यहां आए होंगे। सोचिए अगर आप कार चलाते वक्त केवल रियर व्यू मिरर में देखें तो क्या होगा? क्या आप कार चला पाएंगे? आपका बार-बार एक्सीडेंट होगा। लोग आपसे पूछेंगे कि भाई क्या कर रहे हो... यही पीएम मोदी की सोच है। वो भारत की कार चलाना चाहते हैं लेकिन सिर्फ पीछे देख रहे हैं... वे सोच ही नहीं पा रहे कि कार आगे क्यों नहीं जा रही, बार-बार टकरा क्यों रही है... घर में दो विचारधाराओं के बीच लड़ाई चल रही है। एक जिसका हम प्रतिनिधित्व करते हैं और दूसरी जिसका भाजपा और आरएसएस प्रतिनिधित्व करते हैं। आसान शब्दों में इस लड़ाई को समझाया जाए तो एक तरफ हमारी विचारधारा महात्मा गांधी की है और दूसरी तरफ नाथूराम गोडसे की है।

पीएम मोदी के दौरे से पहले अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन का ऐलान

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनेगा भारत, अमेरिका करेगा मदद

- **ऑस्टिन अपने भारत दौरे पर एनएसए अजित डोभाल और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से मिले**

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और अमेरिका के बीच रक्षा क्षेत्र में सहयोग और समर्थन बढ़ाने पर सहमति बन गई है। दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों की मीटिंग में फैसला हुआ कि रक्षा औद्योगिक सहयोग की रूपरेखा तैयार की जाएगी। अमेरिकी रक्षा मंत्री लॉयड ऑस्टिन ने भारत के अपने समकक्ष राजनाथ सिंह के साथ लंबी चर्चा के बाद सोमवार को इसकी पुष्टी की। उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका ने रक्षा औद्योगिक सहयोग के लिए एक महत्वाकांक्षी रूपरेखा तैयार करने का फैसला किया है। ऑस्टिन ने एक संवाददाता सम्मेलन में भारत-अमेरिका वैश्विक सामरिक साझेदारी को मुक्त एवं खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र की आधारशिला भी बताया।

एनएसए डोभाल से हुई अमेरिकी रक्षा मंत्री की बात- ऑस्टिन दो दिवसीय यात्रा पर दिल्ली आए। खास बात यह है कि अमेरिकी रक्षा मंत्री की यह यात्रा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका की राजकीय यात्रा से दो सप्ताह पहले हुई है। ऑस्टिन ने यहां राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल से मिले। उन्होंने बताया कि उनकी रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और एनएसए अजित डोभाल से सार्थक चर्चा की। उन्होंने कहा कि हमारी साझेदारी तेजी से बढ़ रही है और हम रक्षा औद्योगिक सहयोग का विस्तार करने पर विचार कर रहे हैं।

ओडिशा हादसे के 51 घंटे बाद ट्रैक शुरू

पहली ट्रेन गुजरी तो रेल मंत्री ने हाथ जोड़े

भुवनेश्वर/बालासोर (एजेंसी)। ओडिशा के बालासोर में ट्रेन हादसे वाले ट्रैक की मरम्मत का काम पूरा हो गया है। हादसे के 51 घंटे बाद कल रात को इस ट्रैक से जब पहली ट्रेन रवाना की गई, तब रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव हाथ जोड़कर खड़े दिखे। उन्होंने कहा कि हमारी जिम्मेदारी अभी खत्म नहीं हुई। हमारा लक्ष्य लापता लोगों को खोजना है। यह कहकर वे भावुक हो गए। रेल मंत्री हादसे के बाद से ही बालासोर के बहानगा बाजार स्टेशन पर राहत-बचाव और ट्रैक रिपेयरिंग की निगरानी कर रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी भी शनिवार को बालासोर का दौरा करने के बाद रेल मंत्री से लगातार रेस्क्यू ऑपरेशन से जुड़े अपडेट्स ले रहे थे।

विश्व पर्यावरण दिवस

धरती को बचाने के लिए हमें जागना होगा : सीएम

इस साल मई-जून में भी पानी गिर रहा है, हमने प्राकृतिक संतुलन को समाप्त कर दिया

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा, अगर आज नहीं जागे, तो यह धरती आने वाली पीढ़ियों के रहने लायक नहीं बचेगी। उन्होंने कहा, जिन खतरों का विश्व जिक्र कर रहा है, उसे हमारे ऋषि पहले ही कह चुके हैं। हमारी संस्कृति में भी कहा गया है कि प्राणियों में भी चेतना है। भारत ने हजारों साल पहले यह विचार किया है कि प्रकृति का शोषण नहीं करो, उसका दोहन करो।

भोपाल के रवींद्र भवन में विश्व पर्यावरण दिवस पर 'मिशन लाइफ' पर केंद्रित 'यूथ फॉर लाइफ' में सीएम ने कहा, आज मनुष्य अंधा हो चुका है। हम सभी भागीदार हैं, जो कई संकटों का सामना कर रहे हैं। इस साल बारिश भी बंद नहीं हुई है। अप्रैल, मई, जून में पानी गिर रहा है। हमने पूरे प्राकृतिक संतुलन को समाप्त कर दिया है। आज विश्व पर्यावरण दिवस पर कहना चाहूंगा कि अगर हम सभी एक पेड़ लगाएं, तो मध्यप्रदेश में 9 करोड़ पेड़ तो ऐसे ही लग जाएंगे।

सांसद प्रज्ञा बोलीं, हमें पर्यावण की शुद्धि और संरक्षण का लक्ष्य बनाना होगा

भोपाल सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर ने कहा, आज का समय विश्व में चेतना का समय है। हमें पर्यावण की शुद्धि और संरक्षण का लक्ष्य बनाना होगा। हम अपने वैदिक मंत्रों के साथ चलते रहें। अपने और दूसरे के जीवन की रक्षा करें। सभी की रक्षा के साथ हम भारत मां की रक्षा करें।

वार्षिक पर्यावरण पुरस्कार, फेलोशिप के स्वीकृति पत्र दिए

समारोह में राज्य जलवायु परिवर्तन कार्ययोजना एवं भोपाल क्लाइमेट स्मार्ट सिटी कार्य योजना का विमोचन किया गया। इसके अलावा रामसर वेटलैंड साइट्स प्रमाण पत्रों का वितरण, वार्षिक पर्यावरण पुरस्कार, क्लाइमेट चेंज पीएचडी फेलोशिप के स्वीकृति पत्र भी प्रतिभागियों को दिए गए।

'मिशन लाइफ' का लक्ष्य

पर्यावरण मंत्री हरदीप सिंह डंग ने बताया कि केंद्रीय पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा मिशन लाइफ की थीम- सिंगल यूज प्लास्टिक को कम करना, ऊर्जा संरक्षण, पानी बचाओ, शाश्वत खाद्य प्रणाली को अपनाना, कचरे को कम करना, स्वस्थ जीवन शैली अपनाना और ई-कचरे को कम करना है। इसके तहत पूरे देश में एक लाख आयोजन का लक्ष्य रखा गया। मध्यप्रदेश में मिशन लाइफ में 75 तरह के कार्यक्रम किए जा चुके हैं।

वेस्ट-टू-वेल्थ हेकाथान में विभिन्न राज्यों से मिले सुझाव

गाय के गोबर और गो-मूत्र आदि अपशिष्ट से आमदनी बढ़ाने के उद्देश्य से मप्र प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने 'आत्मनिर्भर गोशाला' विषय पर 'वेस्ट-टू-वेल्थ' हेकाथान का आयोजन किया था। इसमें प्रदेश के अलावा छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, ओडिशा, दिल्ली और गुजरात के प्रतिभागियों ने 54 सुझाव आए। दो सर्वश्रेष्ठ सुझावों वाले राज्यों को पुरस्कार भी दिए गए।

अमेरिकी थिंक टैंक की रिपोर्ट में दावा

चीन ने अक्साई चिन में बनाई सड़कें, हेलिपोर्ट और कैंप

नई दिल्ली/न्यूयार्क (एजेंसी)। अमेरिकी थिंक टैंक चेटहेम हाउस ने दावा किया है कि चीन ने अक्साई चिन तक सड़कें, आउटपोस्ट,हेलिपोर्ट और कैंप बना लिए हैं। चीन की मंशा यहां नया सप्लाई रूट बनाना है। इसके जरिए वह किसी आपात स्थिति में यहां सेना भेज सकता है। चेटहेम हाउस ने पिछले 6 महीने की सैटेलाइट तस्वीरों की एनालिसिस के आधार पर यह रिपोर्ट दी है। अक्साई चिन वह इलाका है जिस पर चीन ने 1962 के युद्ध के बाद से कब्जा कर रखा है।

थिंकटैंक ने अक्टूबर 2022 से ही तस्वीरों के जरिए चीन की एक्टीविटीज पर नजर रखी। रिपोर्ट में कहा गया है कि अक्साई चिन लेक के पास विवादित इलाके में हेलिपोर्ट बनाया है। चीन यहां 18 हैंगर्स और छोटे रनवे का निर्माण कर रहा है, जहां आपात स्थिति में ड्रोन, हेलिकॉप्टर और फाइटर जेट तक उड़ान भर सकेंगे। थिंकटैंक ने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि अक्साई चिन लेक के पास में ही विवादित इलाके में हेलिपोर्ट बनाया है। यहां हेलिकॉप्टर के साथ ही ड्रोन उड़ाने की भी सुविधा है। चीन की पीपुल्स

लिबरेशन आर्मी (पीएलए) यहां लगातार अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिश कर रही है। रिपोर्ट के अनुसार तो चीन ने एलएसी से लगे एयरफील्ड को और चौड़ा कर लिया है। इसके जरिए चीन की भारत के ऑपरेशन को काउंटर करने की मंशा है।

सड़कें चौड़ी कीं, वेदरप्रूफ कैंप बनाए- तस्वीरों से साफ है कि चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के पास सड़कें चौड़ी की हैं। अक्साई चिन में बनी सड़कें भी चौड़ी की हैं। इसके अलावा आउटपोस्ट, मॉडर्न वेदरप्रूफ कैंप जहां पार्किंग की सुविधा दी गई है, सोलर पैनल भी बना लिए हैं। देपसांग इलाके में भी चीनी गतिविधियां जारी हैं। हालांकि भारत ने भी इस इलाके में अपनी सेना तैनात कर रखी है।

हाइवे बनाने की फिराक में है चीन- रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन 2035 तक शिंजियांग और तिब्बत को जोड़ने वाला हाइवे बनाने की फिराक में है। यह रोड अक्साई चिन के पास से होकर गुजरेगा। हाइवे से चीन की सप्लाई चेन आसान हो जाएगी।

2020 से चीन कर रहा निर्माण- गलवान घाटी में भारतीय सैनिकों से झड़प के बाद से ही चीन यहां बड़े ऑपरेशन को अंजाम देने के लिए तैयारी कर रहा है।

32 साल बाद फैसला

अवधेश राय हत्याकांड में मुख्तार को आजीवन कारावास

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी के अवधेश राय हत्याकांड में सोमवार को मुख्तार अंसारी को एमपी-एमएलए कोर्ट ने उम्रकैद की सजा सुनाई है। कोर्ट ने एक लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। कोर्ट का यह फैसला करीब 32 साल बाद आया है। अवधेश राय कांग्रेस के पूर्व विधायक अजय राय के भाई थे। मुख्तार अभी बांदा जेल में बंद है। सुनवाई के दौरान उसको वर्चुअली पेश किया गया। वादी पक्ष के वकील ने बताया कि कोर्ट ने मुख्तार को धारा-302 के तहत दोषी करार देते हुए सजा सुनाई गई है।

एमपी-एमएलए कोर्ट के फैसले के बाद मुख्तार के वकील अखिलेश उपाध्याय ने कहा, इस फैसले में कई कमियां हैं। इसके खिलाफ हाईकोर्ट जाएंगे। वहीं, अभियोजन के वकील अनुज यादव ने कहा, फांसी की सजा की उम्मीद थी। लेकिन, हम फैसले से संतुष्ट हैं। अगर मुख्तार पक्ष हाईकोर्ट जाएगा तो हम वहां भी इसी दम-खम के साथ केस लड़ेंगे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 6 जून 2023

जब प्रलय का समय आता है तो समुद्र भी अपनी मर्यादा छोड़कर किनारों को छोड़ अथवा तोड़ जाते है, लेकिन सज्जन पुरुष प्रलय के समान भयंकर आपत्ति एवं विपत्ति में भी अपनी मर्यादा नहीं बदलते।
विदुर नीति

मणिपुर में एक बार फिर हिंसा भड़की, विधायक का घर जलाया

- काकचिंग जिले में 100 घर जलाए,लूटे गए हाईटेक हथियार और गोला-बारूद जब्त

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में एक बार फिर हिंसा भड़की। काकचिंग जिले के सेरो गांव में कुछ लोगों ने 100 घरों में आग लगा दी। इसमें कांग्रेस विधायक रंजीत सिंह का घर भी शामिल है। राज्य में 3 मई से मैतेई और कुकी समुदाय के लोगों के बीच झड़प हो रही है। ताजा घटना को किस समुदाय के लोगों ने अंजाम दिया है, इसके बारे में जानकारी नहीं मिली है।

इस बीच सुरक्षा बलों ने सोमवार को 790 हथियार और 10,648 गोला-बारूद बरामद किए हैं। इन हथियारों को 3 मई को भड़के जातीय दंगों के दौरान पुलिस कार्यालयों से लूटा गया था। राज्य में 3 मई को हिंसा शुरू हुई थी। अब तक 98 लोगों की मौत हो चुकी है। 310 लोग घायल हो चुके हैं। वहीं, 37 हजार से ज्यादा लोगों को राहत शिविर में शिफ्ट किया गया। हिंसा के चलते 11 से ज्यादा जिले प्रभावित हुए हैं।

घरों से लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया- अधिकारियों के मुताबिक, रविवार शाम को कुछ लोग सेरो गांव में आए और उन्होंने विधायक रंजीत के घर में तोड़फोड़ शुरु कर दी। विधायक और उनका परिवार बाल-बाल बच गया। हिंसक भीड़ ने कई घरों को आग के हवाले कर दिया।

एक सीनियर पुलिस अधिकारी ने बताया, आग लगने के बाद घरों से लोगों को सुरक्षित निकाल लिया गया। उन्हें राहत शिविर में पहुंचाया गया। फायर ब्रिगेड ने बाद में आग पर काबू पाया।

विश्व पर्यावरण दिवस

परेशान कर रही है ये स्टडी, 5 साल घट गई भारतीयों की उम्र!

- सीएसई की रिपोर्ट में हुआ है बड़ा खुलासा
- देश में औसत भारतीयों की उम्र 5 साल तक घट गई!

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में वायु प्रदूषण अब जानलेवा बन गया है। सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरमेंट (सीएसई) की डेटा के अनुसार, जहरीले वातावरण के

- प्लास्टिक के उपयोग के कारण भी मौसम में आ रही है बड़ी तब्दीली

कारण 2020 में देश के लोगों की औसत उम्र करीब 4 साल 11 महीने कम हो गई है। गौरतलब है कि पिछले कुछ वक्त से हवा में जहरीले कण तेजी से बढ़े हैं। ऐसे में हवा अब जानलेवा भी बनने लगी है।

सीएसई की रिपोर्ट में बताया गया है कि ग्रामीण इलाके में रहने वाले लोगों पर सबसे बुरा असर पड़ा है।

यहां के लोगों की औसत आयु 5 साल 2 महीने घट गई है। शहर में लोगों में रहने वाले लोगों की औसत आयु 9 महीने ज्यादा है।

सीएसई की रिपोर्ट चार मापदंडों के जरिए तय किया गया है। ये मापदंड हैं, पर्यावरण, कृषि, स्वास्थ्य और आधारभूत संरचना। रिपोर्ट में कहा गया है कि 2022 में 365 दिन में से 314 दिन मौसम बेहद खराब रहा। इस दौरान करीब 3,026 लोगों की मौत हुई और करीब 1.9 लाख हेक्टेयर फसल को नुकसान पहुंचा। 2022 के पहले भाग में लू आम बात रही। वहीं, 2023 में ओलावृष्टि आम हो गई है।

प्लास्टिक के इस्तेमाल ने धरती में जहर घोल दिया है। सीएसई की रिपोर्ट के मुताबिक, जुलाई 2022 में भारत में सिंगल यूज प्लास्टिक पर रोक लगा दी गई थी। लेकिन कई जगहों पर अभी भी प्लास्टिक का इस्तेमाल धड़ल्ले से हो रहा है और उसका सीधा असर भारतीयों की उम्र पर पड़ रहा है। जहां तक वातावरण में सुधार और कूड़ा-कचरा प्रबंधन की बात करें तो इस मामले में दक्षिण का राज्य तेलंगाना शीर्ष पर रहा है। इसके बाद गुजरात, गोवा और महाराष्ट्र का नंबर आता है। सबसे निचले नंबर पर राजस्थान, नगालैंड और बिहार हैं।

सियासी अटकलों के बीच म.प्र.मैहर पहुंचे सचिन पायलट

मां शारदा के दरबार में टेका माथा

सतना (एजेंसी)। राजस्थान की सियासत में इन दिनों फिर से सुर्खियों में है। राज्य के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट और सीएम अशोक गहलोत के बीच अनबन की खबरें खुलकर सामने आ रही है। इसी बीच सचिन पायलट एमपी दौरे पर पहुंचे। सचिन पायलट सतना जिले में स्थिति प्रसिद्ध तीर्थ स्थल मैहर पहुंचे। यहां उन्होंने मां शारदा के दर्शन किए और आरती में भी शामिल हुए। राजस्थान के पूर्व उपमुख्यमंत्री सचिन पयालट के साथ एमपी कांग्रेस के सीनियर लीडर और राज्यसभा सांसद विवेक तन्खा भी मौजूद थे।

अशोक गहलोत ने पीएम पर साधा निशाना, कहा-

पीएम की जिद्द के कारण हिमाचल और कर्नाटक में हारी भाजपा

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 5 जून (सोमवार) को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 'जिद' के कारण भाजपा की हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक के विधानसभा चुनाव में हार हुई और पार्टी को अन्य राज्यों में भी हार का सामना करना पड़ा।

लोकतंत्र में हठ के लिए कोई जगह नहीं : गहलोत

इंदिरा गांधी गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना के प्रथम चरण की शुरुआत के अवसर पर 'राज्य स्तरीय लाभार्थी उत्सव' कार्यक्रम को मुख्यमंत्री अशोक गहलोत संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को हाल के चुनावों (हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में) में प्रधानमंत्री के जिद्दी स्वभाव के कारण हार का स्वाद चखना पड़ा है। लोकतंत्र में हठ के लिए कोई जगह नहीं है।

500 में सिलेंडर- सीएम गहलोत ने 14 लाख उपभोक्ताओं के बैंक खाते में सीधे सब्सिडी ट्रांसफर की

जयपुर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने एक कार्यक्रम में सोमवार को इंदिरा गांधी गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना का शुभारंभ किया। उन्होंने ट्वीट करतते हुए लिखा, 'जो कहा कर दिखाया देखिए! वादा निभाया'। उन्होंने लिखा, 'देश में सबसे सस्ते रु500 में सिलेंडर दिलाने के वादे को निभाते हुए आज लाभार्थी उत्सव में इंदिरा गांधी गैस सिलेंडर सब्सिडी योजना का शुभारंभ किया'। एक बटन दबाकर महज चंद सेकेंडों में 14 लाख उपभोक्ताओं के बैंक खाते में सीधे सब्सिडी हस्तांतरित की।

18 की होते ही बॉयफ्रेंड के साथ भागी लड़की

पिता ने शोक-संदेश छपवाए, गांव में मृत्युभोज का निमंत्रण भेजा

भीलवाड़ा (एजेंसी)। राजस्थान के भीलवाड़ा में एक 'शोक संदेश' वायरल हो रहा है। इसमें एक परिवार ने अपनी बेटी के स्वर्गवास की सूचना देते हुए 'पीहर की गोरनी' यानी मृत्यु भोज के निमंत्रण दिया है। समाज के लोगों को आमंत्रित करते हुए यह शोक संदेश गांव में बांटा गया तो देखते ही देखते सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। दरअसल, कार्ड में जिस युवती प्रिया जाट की मौत की सूचना दी गई है, वो असल में जीवित है। बेटी के जिंदा रहते, ऐसा शोक संदेश चर्चा का विषय बना हुआ है।

घर से भागी तो मौत की सूचना दी, मृत्यु भोज का निमंत्रण- यह पूरा मामला भीलवाड़ा जिले के हमीरगढ़ थाना क्षेत्र के रतनपुरा गांव का है। नारायण लाल लाठी की पोती और भैरूलाल की बेटी प्रिया जाट लापता है। वह अपने प्रेमी के साथ घर से भागी है। प्रिया के परिजनों के अनुसार उनकी रजामंदी के बिना वह युवक के साथ घर से भागी है। बेटी के इसी कदम से नाराज परिजनों ने उसके 1 जून 2023 को स्वर्गवास की खबर के साथ 13 जून 2023 को सुबह 9 बजे पीहर की गोरनी यानी मृत्यु भोज का कार्यक्रम तय कर दिया।

पुलिस के सामने परिजनों को पहचानने से इनकार किया-

यह कि रतनपुरा गांव की प्रिया जाट अपने परिजनों की मर्जी के खिलाफ अपनी पसंद के युवक के साथ घर से भागी थी। इस पर परिजनों ने हमीरगढ़ थाने में प्रिया की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई। पुलिस ने प्रिया को ढूंढ़कर परिजनों की मौजूदगी में उससे बात की। प्रिया ने पुलिस के सामने अपने परिजनों को पहचानने से साफ इंकार कर दिया। परिजनों के सामने ही वह अपने प्रेमी के साथ चली गई।

परिवार ने कहा हमारे लिए मर गई बेटी- पुलिस थाने में गुमशुदगी दर्ज करवाने वाले परिजनों को बेटी से ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी। लेकिन पहचानने से ही इनकार करने के बाद परिजनों ने वहीं पर कह दिया कि 'हमारी बेटी तो मर चुकी है'। इसके बाद उन्होंने शोक संदेश भी छपवा दिया। अब यह शोक संदेश जब सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया पर भीलवाड़ा के ही युवक आशीष जाट ने शोक संदेश का फोटो शेयर किया है। उसने अपनी पोस्ट में लिखा है कि रतन पूरा गांव में भैरूलाल लाठी की बेटी प्रिया जाट 18 की होते ही अपने बॉयफ्रेंड के साथ भाग गई। थाने में अपने मां-बाप के लिए कहा कि 'मैं इनको जानती नहीं हूं' इसके बाद परिवार ने इसकी गोरनी की चिट्ठियां (शोक-संदेश) बांट दी। बहुत अच्छी पहल, ऐसी औलाद के लिए यही अच्छा है।

मृतकों के परिजनों की मदद के लिए आगे आईं सीएम ममता, परिवार के सदस्य को नौकरी देने का ऐलान

कोलकाता (एजेंसी)। ओडिशा के बालेश्वर में हुए रेल हादसे में पश्चिम बंगाल के कई लोगों की जान गई है और कई घायल बताए जा रहे हैं। इस बीच सीएम ममता बनर्जी ने पीड़ितों के लिए आज बड़ा ऐलान किया है। ममता ने मृतकों के परिवार के एक सदस्य को नौकरी देने की बात कही है।

स्पेशल होमगार्ड की नौकरी देगी सरकार- हावड़ा में बोलते हुए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कहा कि दुर्घटना में कुछ लोगों ने जान गंवा दी और कुछ ने अपने हाथ, पैर खो दिए। ऐसे लोगों के लिए हमारी सरकार ने फैसला लिया है कि हम इनके परिवार के किसी एक सदस्य को स्पेशल होमगार्ड की नौकरी देंगे।

नकद सहायता का भी ऐलान

ममता ने कहा कि बंगाल सरकार राज्य के उन लोगों को भी नकद सहायता देगी जो कोरोमंडल एक्सप्रेस में सवार थे और वर्तमान में मानसिक और शारीरिक आघात से गुजर रहे हैं। वह अलग-अलग अस्पतालों में इलाज करा रहे घायल यात्रियों से मिलने के लिए मंगलवार को भुवनेश्वर और कटक जाएंगी।

रेसलर साक्षी-बजरंग और विनेश नौकरी पर लौटे

एक दिन पहले गृहमंत्री शाह से मुलाकात की थी, साक्षी ने कहा- लड़ाई जारी रहेगी

रेवाड़ी (एजेंसी)। भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष और सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन में शामिल रेसलर्स साक्षी मलिक, बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट अपनी नौकरी पर लौट गए हैं। तीनों रेलवे में नौकरी करते हैं। रेलवे पब्लिक रिलेशन के डायरेक्टर जनरल योगेश बवेजा ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने मीडिया को बताया कि तीनों ने आज ही ड्यूटी जॉइन की है।

ये खबर तब आई है, जब दावा किया जा रहा है कि बृजभूषण पर यौन शोषण का आरोप लगाने वाली नाबालिग रेसलर अपने बयान से पलट गई है। दावे के मुताबिक, नाबालिग ने दिल्ली के कनॉट प्लेस पुलिस थाने में बयान दिए। इसके बाद उसे पटियाला हाउस कोर्ट ले जाया गया, जहां उसने बयान वापस ले लिया।

पहले खबर ये आई थी कि पहलवानों ने आंदोलन से भी नाम वापस ले लिया है,

लेकिन साक्षी मलिक ने ट्वीट करके इस तरह की खबरों का खंडन किया है। उन्होंने कहा- इंसाफ मिलने तक हमारी लड़ाई जारी रहेगी। बजरंग पूनिया ने भी कहा- एफआईआर वापस लेने वाली बात झूठी है। हमारी लड़ाई जारी रहेगी।

नींद में ही चल बसे 'महाभारत के शकुनि मामा' गूफी पेंटल

मुंबई (एजेंसी)। बीआर चोपड़ा के टीवी सीरियल 'महाभारत' (1980) में शकुनि का किरदार निभाकर कामयाबी हासिल करने वाले एक्टर गूफी पेंटल ने दुनिया को अलविदा कह दिया है। उन्होंने सोमवार, 5 जून को आखिरी सांस ली। उनकी उम्र 78 साल थी। वो पिछले कई दिनों से बीमार थे। पहले उन्हें फरीदाबाद के हॉस्पिटल में एडमिट कराया गया था, बाद में हालत बिगड़ने पर उन्हें मुंबई शिफ्ट किया गया, जहां वो आईसीयू में थे। उम्र से संबंधित हेल्थ इश्यूज और हार्ट फेल होने के कारण उनकी मौत हो गई। उनके पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार आज शाम को चार बजे किया जाएगा। गूफी के निधन से सभी को गहरा सदमा लगा है। जाने-माने सिलेब्स सोशल मीडिया पर दुख व्यक्त कर रहे हैं। गूफी पेंटल के भतीजे हितेन पेंटल ने बताया, दुर्भाग्य से, वह अब नहीं रहे। अस्पताल में सुबह करीब 9 बजे उनका निधन हो गया। उनका हार्ट फेल हो गया। नींद में ही उनका निधन हो गया।

लखनऊ के इकाना स्टेडियम में हादसा, तेज आंधी में भारी भरकम बोर्ड गिरा,मां-बेटी की मौत, 3 घायल

लखनऊ (एजेंसी)। तेज आंधी में सोमवार करीब साढ़े चार बजे इकाना स्टेडियम का भारी-भरकम ग्लोसाइन बोर्ड गिर गया। बोर्ड स्टेडियम के ठीक सामने सड़क पर लोहे के एंगल पर लगा था। बोर्ड के नीचे कई कार, बाइक सवार और राहगीर दब गए। घटना से अफरा-तफरी मच गई। जिसमें 3 लोग घायल हो और मां बेटी की मौत हो गई।

भागलपुर में पुल गिरने पर सीएम नीतीश की दो टूक

हमने ऐक्शन लेने के लिए कहा है, तेजस्वी जी... जब पुल के स्ट्रक्चर में थी खामियां तो किसने दिए निर्माण के आदेश?

पटना (एजेंसी)। भागलपुर में निर्माणाधीन पुल का सुपर स्ट्रक्चर रविवार को नदी में गिर गया। जिसके बाद बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव ने आनन-फानन में इस पुल के स्ट्रक्चर पर ही सवाल खड़े कर दिए। उन्होंने बताया कि पुल के ढांचे में खामियां थीं इसलिए गिराया जा रहा था। बिहार सरकार की ओर से आनन-फानन में आए इस तर्क पर कई सवाल उठने लगे। कहा ये जा रहा कि जब इस पुल का स्ट्रक्चर और डिजाइन ठीक नहीं था तो इसके निर्माण पर बिहार की जनता के करोड़ों रुपए क्यों बर्बाद किए जा रहे थे? जिस पुल का उद्घाटन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने किया था आखिर किसके कहने पर इसे बनाने की अनुमति और पैसा पास किया गया?

नीतीश कुमार ने दिए कार्रवाई के आदेश- मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने भी इस मामले को संज्ञान में लेते हुए कहा कि यह पुल एक साल पहले भी गिरा था। हमने 2012 में ही इसे बनाने का आदेश दिया था। 2014 में इसका निर्माण शुरू हुआ, अब तक इसे बन जाना चाहिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले साल जब पुल का हिस्सा गिरा तब भी विभाग के अधिकारियों को आदेश दिया गया था।

दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस पुल के निर्माण में हो रही देरी और बार-बार गिरने लेकर नाराजगी जाहिर की है। इसके बार-बार गिरने का मतलब यह है कि इसे मजबूती से नहीं बनाया जा रहा। तभी तो यह यह पुल गिर रहा है। पुल निर्माण में हो रही धांधली को लेकर कार्रवाई पर पूछे गए सवाल पर बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि मैंने इस बारे में कल ही आदेश दे दिया है कि जो भी दोषी हैं उन पर तुरंत कार्रवाई की जाए।

दुबई जा रही अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोका, ईडी से मिला है समन

कोलकाता (एजेंसी)। तृणमूल कांग्रेस के सांसद अभिषेक बनर्जी की पत्नी रुजिरा बनर्जी को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोक लिया गया। बताया जा रहा है कि रुजिरा बनर्जी कोलकाता से दुबई के लिए फ्लाइट पकड़ने वाली थीं। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने दो दिन बाद रुजिरा को पूछताछ के लिए समन दिया है। ऐसे में रुजिरा को कोलकाता एयरपोर्ट पर रोके जाने को इसी से जोड़कर देखा जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक रुजिरा के खिलाफ लुकआउट नोटिस है, इसी वजह से उन्हें कोलकाता एयरपोर्ट पर अधिकारियों ने रोका है। कोलकाता एयरपोर्ट पर इमिग्रेशन डिपार्टमेंट के अधिकारियों ने रुजिरा को रोकते हुए कहा कि वह विदेश यात्रा नहीं कर सकती हैं।

जन्मदिन पर योगी आदित्यनाथ ने किया रुद्राभिषेक, पीएम मोदी,मायावती और अखिलेश जन्मदिन पर दी शुभकामनाएँ

गोरखपुर (एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ का सोमवार को 51वां जन्मदिन था। इस मौके पर योगी गोरखनाथ मंदिर में थे। मंदिर में प्रवास के दौरान मुख्यमंत्री और गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने सोमवार सुबह रुद्राभिषेक कर भगवान भोलेनाथ से लोकमंगल की प्रार्थना की। सीएम योगी को तमाम नेताओं की ओर से बधाई संदेश आए। पीएम मोदी समेत पूर्व सीएम अखिलेश यादव और मायावती ने भी उन्हें ट्वीट करके जन्मदिन की बधाई दी।

कचरा गाड़ी में ले गए महिला की लाश

पति बोला- मरने के बाद तो इज्जत नसीब हो

सीहोर (नप्र)। मुझे पत्नी की मौत से ज्यादा इस बात का अफसोस है कि मरने के बाद भी उसे इज्जत नहीं मिल पाई। उसके शव को कचरा ढोने वाली गाड़ी से पोस्टमॉर्टम के लिए ले जाया गया। वो कचरा नहीं थी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के विधानसभा क्षेत्र में ये हालात हैं, तो दूसरे जिलों में क्या स्थिति होगी? जिंदा लोगों के लिए निःशुल्क एम्बुलेंस की व्यवस्था है, तो फिर मौत के बाद लाश की इतनी बेइज्जती क्यों? सीहोर जिले के बुधनी के रहने वाले पुरुषोत्तम केवट ये कहते हुए फफक पड़ते हैं। वे कहते हैं कि वो मंजर मैं कभी नहीं भूल सकता। जब ये सोचता हूं, तो मेरी आत्मा रो उठती है।

बुधनी से ही पांच बार के विधायक हैं शिवराज- बुधनी के हालात की चर्चा इसलिए भी जरूरी है कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान यहां से पांच बार विधायक चुने गए हैं। वे सबसे पहले 1990 में यहां से विधानसभा चुनाव जीते थे। इसके बाद 2005, 2008, 2013 और 2018 में यहीं से विधायक चुने गए। साल 2003 में राघौगढ़ से दिग्विजय सिंह के खिलाफ चुनाव लड़े थे, लेकिन हार गए थे। ये शिवराज के राजनीतिक जीवन की पहली हार थी।

मीडिया ने बुधनी पहुंचकर मामले की पड़ताल की। पता चला कि यहां प्रशासन के पास शव वाहन ही नहीं है। यहां आए दिन ऐसे मंजर देखने को मिलते हैं। प्रशासनिक अफसरों से लेकर जनप्रतिनिधि तक इस ओर उदासीन नजर आए।

यह है मामला - बुधनी के वार्ड क्रमांक 12 में पुरुषोत्तम केवट और उसकी पत्नी काजल केवट किराए के घर में रहते थे। दोनों ने सालभर पहले लव मैरिज की थी। काजल प्राइवेट कंपनी में काम करती थी। 25 मई को काजल का शव फंदे पर मिला था। हालांकि, अभी तक इसका कारण सामने नहीं आ सका। उसके शव को बुधनी नगर परिषद की कचरा गाड़ी से पीएम हाउस ले जाया गया। किसी ने इसका वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर अपलोड कर दिया।

उधारी नहीं चुकाने पर जानलेवा हमला

इंदौर। अलग-अलग स्थानों पर हत्या के प्रयास की घटना हुई। पुलिस ने सभी मामलों में प्रकरण दर्ज किया है। फरियादी मोहम्मद रहीस पिता मोहम्मद अलीम निवासी ममता कॉलोनी ने पुलिस को बताया कि खजराना स्थित शुभ लाभ अपार्टमेंट के सामने इमो पिता मुन्ना खान ने रोका और उधारी के 300 रुपए मांगे। मैंने कहा जल्दी ही दे दूंगा। इसी बीच मेरी जेब से मोबाइल निकाल लिया मैंने मोबाइल मांगा तो उसने चाकू निकाला और सीने पर मार दिया तथा हत्या की धमकी देकर भाग गया। खजराना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास की धारा 307 294 323 और 506 का प्रकरण दर्ज किया है।

पुराने विवाद में चाकू मारा - विकास पिता केशव राव यादव निवासी मयूर नगर को बीती रात इंद्रपुरी कॉलोनी स्थित गार्डन के पास आरोपी ऋषभ जादौन ने रोका और पुराने विवाद को लेकर गालियां देने लगा मैंने गाली देने से मना किया तो उसने चाकू सीने पर मरने लगा तो मैंने दाया हाथ बढ़ा दिया जिसमें चाकू हथेली पर लगा तभी ऋषभ के साथी यशवंत जादौन और करण सांवले आ गए और दोनों ने मारपीट करते हुए चाकू से हमला कर दिया।घटना के बाद तीनों धमकी देकर भाग गए। भंवरकुआं पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ हत्या के प्रयास की धारा 307 506 323 का केस दर्ज किया है।

बेटे ने पिता का सिर फोड़ा- फरियादी निर्भय सिंह पिता अंबाराम सोलंकी निवासी धरमपुरी सांवेर ने पुलिस को बताया कि वह पड़ोसी के यहां मान के कार्यक्रम में खाना खाकर रात में घर लौटा तो दरवाजा खोलने की बात को लेकर बेटे सावन ने गालियां दी और फिर उसके सिर पर ईट मार कर भाग गया।

सागर के मंत्रियों को सीएम ने किया तलब

भूपेन्द्र-भार्गव और गोविन्द को दी समन्वय से काम करने की समझाइश

बीजेपी विधायक भी थे साथ

भोपाल (एजेंसी)। सागर में मंत्रियों के बीच चल रही खींचतान के बाद सीएम शिवराज सिंह चौहान ने तीनों मंत्रियों को सीएम हाउस बुलाया था। करीब एक घंटे तक सीएम ने तीनों मंत्रियों और विधायकों के साथ बैठकर चर्चा की। इस बैठक में मंत्री गोपाल भार्गव, भूपेन्द्र सिंह, गोविन्द सिंह राजपूत के साथ सागर विधायक शैलेन्द्र जैन और नरयावली विधायक प्रदीप लारिया भी मौजूद थे।

बैठक में सीएम ने मंत्रियों को आपसी तालमेल बनाकर काम करने को कहा। सीएम ने मंत्रियों और विधायकों से कहा कि कोई भी सार्वजनिक तौर पर ऐसी बात न कहें जिससे जनता और कार्यकर्ताओं में गलत संदेश जाए। केन्द्र सरकार के नौ साल पूरे होने पर चल रहे विशेष जनसंपर्क अभियान में बढ़-चढ़ कर भागीदारी निभाएं। मालूम हो कि पिछले महीने कैबिनेट की बैठक के बाद सागर के मंत्रियों गोपाल भार्गव, गोविन्द सिंह राजपूत ने जिलाध्यक्ष गौरव सिरोठिया, विधायक शैलेन्द्र जैन और प्रदीप लारिया के साथ मंत्री भूपेन्द्र सिंह की शिकायत की थी। हालांकि यह जानकारी मीडिया में आने के बाद मंत्री गोपाल भार्गव ने इसका खंड़न करते हुए इन खबरों को निराधार बताया था। वहीं प्रदीप लारिया से जब पूछा तो

उन्होंने भी कहा था कि हम क्षेत्र के विकास की चर्चा करने गए थे। इसे बढ़ा-चढ़ा कर पेश किया गया है। विवाद जैसी कोई बात नहीं हैं।

भार्गव बोले- क्षेत्र के विकास को लेकर चर्चा हुई

सीएम हाउस में हुई बैठक के संबंध में पीडब्ल्यूडी मंत्री गोपाल भार्गव ने चर्चा में कहा- क्षेत्र के विकास के संबंध में हम सभी सागर जिले के विधायक, मंत्री गण मुख्यमंत्री जी से मिलने गए थे। विकास से जुड़े विषयों पर चर्चा हुई है। इसके अलावा कोई बात नहीं हुई।

सागर में बढ़ रहा था विवाद

सागर में मंत्रियों के बीच का विवाद लगातार बढ़ता जा रहा था। बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष को लेकर सोशल मीडिया में विवादित पत्र शेयर करने पर सागर महापौर के पति सुशील तिवारी को बीजेपी प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य पद से हटा दिया गया है। मंत्री गोविन्द सिंह राजपूत के बेटे आकाश और भाजपा के जिला मंत्री देवेन्द्र फुसकेले ने भी भूपेन्द्र सिंह के विधानसभा क्षेत्र खुरई को लेकर भी सोशल मीडिया में पोस्ट शेयर की थी।

समर्थकों को भी समझाएं

बैठक में मंत्रियों को कहा गया कि कार्यकर्ताओं और करीबियों को भी यह समझाएं कि सार्वजनिक तौर पर कोई बयानबाजी न करें। और न ही सोशल मीडिया पर कोई विरोधाभाषी टिप्पणियां करें। हालांकि इस बैठक के बाद मंत्री भूपेन्द्र सिंह, और गोविन्द राजपूत ने चुप्पी साध रखी है।

झाबुआ में मुख्यमंत्री ने की लाड़ली बहना सेना की शुरूआत

योजनाओं को लागू करने में करेगी मदद, गड़बड़ करने वालों की शिकायत भाई से करें

आलीराजपुर (एजेंसी)। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान झाबुआ में जिले की 1 लाख 85 हजार 209 पात्र लाड़ली बहना हितग्राही बहनों के सम्मेलन को संबोधित कर रहे हैं। उन्होंने लाड़ली सेना बनाने की बात कही है। लाड़ली सेना योजनाओं को सही तरह से लागू करने में मदद करेगी। गड़बड़ करने वालों की शिकायत मुझसे करेगी।

शिवराज सिंह चौहान ने महिलाओं से कहा कि आपका भला भाजपा कर सकती है, कांग्रेस नहीं कर सकती है। मैं यहां आपसे कुछ मांगने आया हूं। सभी योजना ठीक से चले इसमें मुझे आपकी साथ की जरूरत है। अब हर गांव में लाड़ली सेना बनेगी। यह सेना देखेगी कि महिलाओं को योजनाओं का लाभ मिल रहा है कि नहीं। कोई गड़बड़ी कर रहा है, तो अपने भाई को शिकायत करें। मैं वादा करता हूं कि गड़बड़ी करने वालों को कभी छोड़ूंगा नहीं। छोटे गांव में 11 और बड़े गांव में 21 लाड़ली बहनों की सेना होगी।

कलेक्टर को दिए निर्देश- उन्होंने कहा कि अब बहनें मैदान में उतरेंगी। वह अपना काम खुद देखेंगी। मैं आपसे कहना चाहता हूं की आपका भाई आपके साथ है तो डरना किससे। कोई डरने की जरूरत है ही नहीं। मैं कलेक्टर को निर्देश देता हूं कि वह जल्द से जल्द लाड़ली बहना सेना काम शुरू करें।

नेता प्रतिपक्ष गोविंद सिंह ने कहा-

महाकाल लोक से दूर रहें लोकायुक्त

शिकायत के बाद भी एक साल तक भ्रष्टाचार दबाकर बैठे रहे

भोपाल (एजेंसी)। उज्जैन के महाकाल लोक में मूर्तियों के आंधी में उड़कर गिरने और टूटने के मुद्दे को कांग्रेस हाथ से जाने नहीं देना चाहती है। इसी सिलसिले में मध्यप्रदेश सरकार और लोकायुक्त पर बड़ा हमला बोला है। नेता प्रतिपक्ष डॉ. गोविंद सिंह ने लोकायुक्त एनके गुप्ता को महाकाल लोक मामले की जांच से दूर रहने को कहा है। इसके पीछे तर्क देते हुए उन्होंने कहा कि लोकायुक्त गुप्ता सरकार के इशारे पर काम कर रहे हैं। 1 साल पहले ही हमारे विधायक महेश परमार ने महाकाल लोक में हो रहे घोटाले की शिकायत की थी। गुप्ता इतने लंबे अरसे तक इस भ्रष्टाचार को दबाए क्यों बैठे रहे।

भोपाल में पत्रकार वार्ता में नेता प्रतिपक्ष ने कहा, इससे पहले गोहद में ओलावृष्टि की मुआवजा राशि बांटने में भ्रष्टाचार हुआ था। मैंने यह बात उठाई थी। राजस्व मंत्री ने भी विधानसभा में स्वीकार किया था कि भ्रष्टाचार हुआ है। मैंने प्रमाण भी दिए थे। जांच की कोई जरूरत नहीं थी। मैंने जो दस्तावेज दिए थे, उसके आधार पर ही मामला दर्ज हो जाना चाहिए था, लेकिन लोकायुक्त गुप्ता कार्रवाई नहीं कर पाए।

लोकायुक्त की कुर्सी पर बैठकर अन्याय कर रहे

डॉ. गोविंद सिंह ने कहा, लोकायुक्त की कुर्सी पर बैठकर एनके गुप्ता अन्याय कर रहे हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान संवैधानिक संस्थाओं को स्वतंत्र रूप से काम नहीं करने दे रहे हैं। जो लोकायुक्त न्याय नहीं करें, भ्रष्टाचार को दबाने का काम करें, अब वही महाकाल लोक में भ्रष्टाचार की जांच कर रहे हैं। वे क्या जांच करेंगे, क्या उम्मीद रखें ऐसे व्यक्ति से जब भ्रष्टाचार हो गया, मूर्तियां गिर गईं, सनातन धर्म के करोड़ों लोगों की श्रद्धा को ठेस पहुंची, तब जाकर जांच करेंगे। इससे ज्यादा शर्मनाक स्थिति मध्यप्रदेश के लोकायुक्त के लिए क्या हो सकती है।

एमपी में लोकायुक्त कार्यालय बंद कर देना चाहिए

डॉ. गोविंद सिंह ने कहा- ईमानदार डीजे मकवाना बतौर लोकायुक्त डीजी कार्रवाई करना चाहते थे, लेकिन उनको दबाव डालकर हटवा दिया। मैं मुख्यमंत्री से कहना चाहता हूं कि मध्यप्रदेश का लोकायुक्त कार्यालय बंद कर दिया जाए। इस पर जनता की गाढ़ी कमाई से जो खर्च हो रहा है, उसे बचाया जाए। महाकाल लोक घोटाले की जांच केवल उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के आयोग द्वारा कराई जाए, तभी दूध का दूध और पानी का पानी हो सकता है। लोकायुक्त से मध्यप्रदेश की जनता का विश्वास उठ चुका है। उनसे हम कोई उम्मीद नहीं कर सकते।

वृक्षारोपण के साथ शुरू हुआ डिजाइन शिविर

भोपाल। प्रकृति सबसे बड़ी डिज़ाइनर है और जितना समृद्ध पर्यावरण होगा उतना ही सुखद और स्वस्थ हमारा जीवन होगा। ये बात नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ डिज़ाइन मध्यप्रदेश के निदेशक प्रो. धीरज कुमार ने कही। वो एन. आई. डी. द्वारा आयोजित सात दिवसीय आवासीय डिज़ाइन शिविर का शुभारम्भ करते हुए प्रतिभागियों को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि डिज़ाइन की दुनिया दरअसल हम सबकी जीवनशैली को बेहतर बनाने की निरन्तर कोशिश है।

औपचारिक उद्घाटन के बाद निदेशक सहित प्रतोभागियों ने परिसर में ही पेड़ लगाए। इस अवसर पर आर्ट प्रमोटर सुनिल शुक्ल ने प्रतिभागियों के स्वागत करते हुए कहा कि ज़रूरी नहीं आप डिज़ाइनर ही बनें लेकिन ऐसा शिविर निश्चित ही आपको कलात्मक, सुरुचिपूर्ण और बेहतर इंसान बनने में मदद करेगा।

डिज़ाइन शिविर के समन्वयक डॉ. शबरीधरन ने बताया कि आज फ़ोटोग्राफी और स्केचिंग के बाद शाम को रोज़ सांस्कृतिक गतिविधियां होंगी जिनमे विहान ड्रामा वर्क्स का नाटक 'दुपहर' खेला जाएगा। कल की गतिविधियों में टाई एंड डाई, ब्लॉक प्रिंटिंग एवं पद्म श्री दुर्गा बाई व्याम द्वारा गोंड प्रधान पेंटिंग वर्कशॉप होगी।

इस शिविर में क़रीब 40 प्रतिभागी शामिल होरहे हैं जिनमें भोपाल के अलावा इंदौर, ग्वालियर एवं दिल्ली के भी लोग हैं। शिविर का समापन 11 जून को होगा।

नींद में खलल तो धकेल दी हनुमान प्रतिमा

खंडवा के छिरवेल गांव में सुबह 4 बजे श्रद्धालु बजा रहे थे घंटी, आरोपी पर एफआईआर

खंडवा(नप्र)। शराब के नशे में धुत एक युवक ने हनुमान जी की प्रतिमा को धकेल दिया। मंदिर के सामने ही उसका घर है। सुबह 4 बजे से श्रद्धालु मंदिर पहुंचकर पूजा-पाठ करने लगते हैं। घंटिया बजती हैं, तो आरोपी की नींद में विघ्न पड़ जाता है। इसी बात से वह आहत था। शराब के नशे में मंदिर में घुसा और मूर्ति को धकेल दिया। ग्रामीणों की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। घटना खंडवा के छैगांवमाखन थाना क्षेत्र के गांव छिरवेल की है। पुलिस के अनुसार, घटना रविवार सुबह 10 बजे की है। आरोपी जयपाल पिता जगदीश मोरे ने मंदिर में हनुमान की मूर्ति को धकेल दिया। वह हनुमान मंदिर में सुबह 4 बजे घंटियां बजने की बात को लेकर परेशान था। शराब के नशे में हनुमान जी की प्रतिमा को हाथों से धकेल कर जमीन पर गिरा दिया। इससे लोगों की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंची।

प्रदेश में ओले-बारिश का अलर्ट

इंदौर संभाग में गिर सकते हैं ओले, भोपाल-ग्वालियर में बूंदाबांदी

भोपाल (एजेंसी)। मौसम विभाग ने मध्यप्रदेश में अगले 24 घंटे में ओले-बारिश का अलर्ट जारी किया है। इंदौर संभाग के बुरहानपुर, खरगोन, आलीराजपुर, बड़वानी, झाबुआ और धार में ओलावृष्टि हो सकती है। वहीं, भोपाल-ग्वालियर समेत करीब 20 जिलों में मौसम बदला रहेगा। यहां बूंदाबांदी हो सकती है।

सीनियर मौसम वैज्ञानिक एचएस पांडे ने बताया कि वेस्टर्न डिस्टर्बेंस (पश्चिमी विक्षोभ) एक्टिव होने से पिछले दो-तीन दिन से बारिश और ओले गिरने की स्थिति बनी हुई है। ऐसा ही दौर मंगलवार को भी जारी रहेगा। फिर इसका असर कम हो जाएगा। भोपाल में सोमवार-मंगलवार को बादल रहेंगे। 8 जून से मौसम साफ हो सकता है।

यहां बारिश, ओलों का अनुमान- भोपाल, सीहोर, बड़वानी, देवास, मंदसौर, नीमच, भिंड, श्योपुरकलां, अनूपपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, सागर, टीकमगढ़ में बारिश हो सकती है। बुरहानपुर, खरगोन, आलीराजपुर, बड़वानी, झाबुआ और धार में ओले गिरने के आसार हैं।

दूसरे सप्ताह में भी बारिश का दौर- मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो मौजूदा वेस्टर्न डिस्टर्बेंस 5 जून तक प्रदेश में एक्टिव रहेगा।

दिन में उमरिया सबसे गर्म, खरगोन की रात पचमढ़ी से ठंडी

रविवार को मध्यप्रदेश में उमरिया सबसे ज्यादा गर्म रहा। यहां दिन का पारा 42.3 डिग्री तक पहुंच गया। प्रदेश के 9 जिलों में अधिकतम पारा 40 से 42 डिग्री के बीच रहा। बाकी जिलों में यह 40 डिग्री से नीचे रिकॉर्ड हुआ। सबसे कम दिन का तापमान इंदौर में 35 डिग्री रहा। रायसेन और टीकमगढ़ में रात सबसे ज्यादा गर्म रही। दोनों जगह न्यूनतम तापमान 26 डिग्री रिकॉर्ड हुआ। खरगोन में सबसे कम न्यूनतम तापमान 22 डिग्री रहा। पचमढ़ी में यह 23.2 डिग्री रहा।

जून के दूसरे सप्ताह में भी बारिश होने और आंधी चलने का अनुमान है। मानसून 20 जून या इसके बाद ही प्रदेश में एंट्री करेगा।

भिंड, उमरिया, बड़वानी, नौगांव में बारिश- मध्यप्रदेश के कुछ हिस्सों में बेमौसम बारिश और आंधी का दौर जारी रहा। भिंड, बड़वानी, उमरिया और नौगांव में बारिश हुई। बड़वानी के सेंधवा में सुबह बादल छाए। धूल भरी तेज आंधी चली। इसके बाद बारिश होने लगी। इन जगहों पर गर्मी का असर भी ज्यादा रहा। उमरिया में तापमान 42.3 डिग्री तक पहुंच गया, जबकि नौगांव में पारा 40 डिग्री रहा। इसके अलावा दमोह, सीधी, नर्मदापुरम, जबलपुर, खजुराहो, मंडला, नरसिंहपुर, रीवा, सतना में भी तापमान 40 डिग्री से ज्यादा दर्ज किया गया।

संपादकीय

दिवालिया होने की कगार पर पाक

पड़ोसी मुल्क पाकिस्तान कश्मीर को लेकर जो भी दावे कर रहा हो, लेकिन अंदरूनी तौर पर उसकी हालत बहुत कमजोर हो गई है। सवाल तो यह उठने लगा है कि पाकिस्तान का भविष्य क्या है? और यह सवाल भी खुद पाकिस्तानी ही पूछ रहे हैं। मौजूदा राजनीतिक उथल पुथल और भयंकर आर्थिक संकट के चलते एक वर्ग अंतराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान में लोकतंत्र को खतरे में बता रहा है। गौरतलब है कि पाकिस्तान अपनी लड़खड़ाती अर्थव्यस्था को पटरी पर लाने के लिए लगातार अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ़) से बेलआउट पैकेज की मांग कर रहा है। लेकिन कई महीनों से जारी ये प्रयास अब तक असफल साबित हुए हैं। ऐसे में सवाल यह पूछा जा रहा है कि क्या पाकिस्तान सच में डिफ़ॉल्ट होने की कगार पर है? दरअसल पाकिस्तान की माली हालत तो पहले से ही खस्ता थी, लेकिन इमरान खान तथा सरकार व फौज के आपसी टकराव ने हालात को और जटिल बना दिया है। बीती 9 मई को पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी ने देश में अराजकता की स्थिति पैदा कर दी। पहली बार देश में सेना पर हमले हुए। लेकिन इस घटनाक्रम ने सेना को कमजोर करने की बजाए उसे और मजबूत होने का मौका दे दिया। बहरहाल कल तक आग उगलने वाले और कभी फौज की आंखों के तारे रहे इमरान अब बैकफुट पर हैं। उनके कई साथी पार्टी छोड़कर चले गए हैं। पाक सरकार ने इमरान समर्थकों के खिलाफ सख्ती शुरू कर दी है। इमरान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ़ (पीटीआई) के कुछ लोगों पर सैन्य अदालतों में मुक़दमा भी चलने वाला है। हालांकि मानवाधिकारों के लिए काम करने वाली एमनेस्टी इंटरनेशनल, ह्यूमन राइट्स वॉच और रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स ने आम नागरिकों पर सैनिक अदालतों में मुकदमा चलाने की पाक सरकार की घोषणा की आलोचना की है। वैसे भी पाकिस्तान में लोकतंत्र दिखावे का ही रहा है। लेकिन पाकिस्तान के सामने सबसे बड़ा संकट दिवालिया होने का है। एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ पिछले साल अप्रैल में इमरान ख़ान के सत्ता से हटने तक जीडीपी 6 फ़ीसदी थी. जबकि चालू वित्त वर्ष में देश की जीडीपी वृद्धि दर घटकर 0.6 फ़ीसदी तक रहने का अनुमान है। साल 2019 में पाकिस्तान ने आईएमएफ़ से 6.5 अरब डॉलर का बेलआउट पैकेज हासिल करने के सौदे पर दस्तख़त किए थे। इस सौदे की 1.1 अरब डॉलर की किस्त पाने के लिए पाकिस्तान लगातार कोशिश कर रहा है लेकिन उसे अभी तक सफलता नहीं मिली है। हाल ही में 'स्टेट बैंक ऑफ़ पाकिस्तान' ने बताया था कि देश का विदेशी मुद्रा भंडार घटकर मात्र 4.19 अरब डॉलर रह गया है। हालांकि पाक के विदेश मंत्री इशाक डार ने दावा किया कि पाकिस्तान डिफ़ॉल्ट होने की कगार पर नहीं है। इसके पहले पाकिस्तान को चीन से पहले ही 2 अरब डॉलर की मदद मिल चुकी है। संयुक्त अरब अमीरात ने 1 अरब डॉलर तो सऊदी अरब ने 2 अरब डॉलर की मदद दी है। लेकिन अब कोई भी देश और ज्यादा मदद का जोखिम उठाना नहीं चाहता। इसका कारण पाक की खस्ता हालत है। हालांकि पाकिस्तान को अभी भी उम्मीद है कि आईएमएफ कर्ज की अगली किस्त कठोर शर्तें लागू करने के बाद स्वीकृत कर देगा। इन शर्तों में आगामी बजट में ईंधन पर सब्सिडी समाप्त करना शामिल है। पाक की शहबाज शरीफ सरकार की मुश्किल यह है कि अगर सरकार आईएमएफ़ के प्रोग्राम से बाहर निकलने का फ़ैसला करती है तो पाकिस्तान के डिफ़ॉल्ट होने का जोखिम काफी बढ़ सकता है। और अगर आईएमएफ़ के साथ बने रहते हैं तो उन्हें कुछ कठोर फ़ैसले लेने होंगे।

नजरिया

राम पुनियानी

लेखक आईआईटी मुंबई में पढ़ाते थे।

अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया

संसद भवन का उद्घाटन या...

गत 23 मई 2023 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संसद के नए भवन का उद्घाटन किया. यह भवन पुराने भवन की तुलना में कहीं अधिक ठाठदार है. विपक्ष की अधिकांश पार्टियों ने उद्घाटन कार्यक्रम का बहिष्कार किया. उनका तर्क था कि इस भवन का उद्घाटन राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को करना था. संविधान के अनुच्छेद 79 के अनुसार संसद में राष्ट्रपति, लोकसभा और राज्यसभा शामिल हैं. इस प्रकार, राष्ट्रपति, संसद का हिस्सा होते हैं. उन्हें इस समारोह से बाहर रखना हर चीज़ के केंद्र में स्वयं को रखने की मोदी की प्रवृत्ति का सूचक है.

इस भव्य कार्यक्रम के दो पहलू महत्वपूर्ण हैं. पहला यह कि उसमें बड़ी संख्या में साधु, पंडित और कई मठों के मुखियाओं ने भाग लिया. भगवान शिव और गणेश का आव्हान किया गया और हिन्दू कर्मकाण्ड हुए. यह निश्चित रूप से हमारे देश और हमारे संविधान के धर्मनिरपेक्ष चरित्र को क्षति पहुँचाने वाले थे. मोदी ने तमिलनाडु के मयिलाडूथुरई के निकट स्थित एक शैव मठ थिरुवदुथुरई अधीनम के प्रतिनिधियों से सेंगोल नामक राजदंड स्वीकार किया. तमिलनाडु के विभिन्न अधीनमों के प्रतिनिधियों और लोकसभा अध्यक्ष के साथ प्रधानमंत्री ने सेंगोल को नए भवन में स्थापित किया.

ऐसा बताया गया है कि यह सेंगोल सत्ता हस्तांतरण का प्रतीक है. यह चोल राजाओं की परंपरा का भाग है, जिसमें नए राजा को उसकी शक्तियों के प्रतीक के रूप में सेंगोल भेंट किया जाता था. परंपरा के अनुसार राजा अपनी शक्तियां, पुरोहितों के ज़रिये, सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्राप्त करता था. प्रधानमंत्री इसी 'गौरवशाली परंपरा' को पुनर्जीवित करना चाहते हैं.

हमें यह भी बताया गया है कि देश की स्वतंत्रता के समय लार्ड माउंटबेटन ने सत्ता के हस्तांतरण के प्रतीक के रूप में यह सेंगोल जवाहरलाल नेहरु को सौंपा था. यह एक मनगढंत कहानी है. कांग्रेस के जयराम रमेश ने एक ट्वीट में कहा, 'एक राजसी राजदंड, जिसकी परिकल्पना तत्कालीन मद्रास प्रान्त की एक धार्मिक संस्था ने की थी और जिसे मद्रास में बनाया गया था, को अगस्त 1947 में जवाहरलाल नेहरु को सौपा गया था...परन्तु इसका कोई दस्तावेजी प्रमाण नहीं है कि माउंटबेटन, नेहरु या राजाजी ने इस राजदंड को ब्रिटेन से भारत को सत्ता हस्तांतरण का प्रतीक बताया था. इस आशय के सभी दावे कोरे और विशुद्ध बोगस है. ये दावे केवल कुछ लोगों की दिमाग की उपज हैं, जिन्हें पहले व्हाट्सएप के ज़रिये फैलाया गया और अब सरकार के भाट मीडिया संस्थानों के ज़रिये प्रचारित किया जा रहा है. राजाजी के जीवन और उनके कार्यों के बारे में गहन ज्ञान रखने वाले दो विद्वान अध्येताओं, जिनकी साख पर कभी कोई बट्टा नहीं लगा, ने इस दावे पर आश्चर्य व्यक्त किया है.'

निश्चित रूप से शैव मठ के पंडितों की इस भेंट को उनकी और उनकी भावनाओं की क़द्र करते हुए नेहरु ने स्वीकार कर लिया होगा. परन्तु उसे अपने प्रधानमंत्री कार्यालय में रखने की बजाय उन्होंने इलाहाबाद के संग्रहालय में रखवा दिया. नेहरु सहित स्वाधीनता संग्राम के सभी बड़े नेता, राजशाही और राजाओं में तनिक भी श्रद्धा नहीं रखते थे. वे प्रजातंत्र में आस्था रखते थे जिसमें जनसामान्य चुनावों के ज़रिये सत्ता अपने नेताओं को सौंपते हैं. प्रजातंत्र में जनता का राज होता है और शक्ति का स्त्रोत न तो ईश्वर होता है और ना ही उसके प्रतिनिधि होने का दावा करने वाले पंडित और पुजारी. भारत की शासन व्यवस्था प्रजातंत्र पर आधारित है. प्रजातंत्र का एक मूलभूत तत्व यह है कि शासक (प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति), धार्मिक गुरु (राजपुरोहित) के प्रति जवाबदेह बादशाह नहीं होते. वे जनता और संविधान के प्रति जवाबदेह निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं.

द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के संस्थापक सी.के. अन्नादुरै ने सेंगोल को सत्ता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने के खिलाफ एक तीखा लेख लिखा था. उनके अनुसार, 'आपको (नेहरु) पता है कि प्रजातंत्र के आगाज़ की राह प्रशस्त करने के लिए उन्हें इससे (सेंगोल) से छुटकारा पाना ज़रूरी था. मठों के मुखिया डरे हुए हैं. उन्हें डर है कि आप वही करेंगे जो आपने सीखा-जाना है. इसलिए वे अपनी रक्षा के लिए स्वर्ण तो क्या नवरत्नों से जड़ा राजदंड भी आपको भेंट कर सकते हैं.'

हिन्दू कर्मकाण्ड को प्रधानता देना भाजपा-आरएसएस के एजेंडा का हिस्सा है. वे हमारे देश के बहुवादी चरित्र को कमज़ोर कर देश पर हिन्दू राष्ट्रवाद को थोपना चाहते हैं. यह हिन्दू राष्ट्रवाद, दरअसल, हिन्दू राजाओं द्वारा स्थापित नियमों और परम्पराओं पर आधारित है. इसे ही उनके चिंतकों ने हिन्दू राष्ट्रवाद का नाम दिया है. यह मात्र संयोग नहीं है कि नए संसद भवन का उद्घाटन विनायक दामोदर सावरकर के 140वें जन्मदिन पर किया गया. सावरकर हिन्दू राष्ट्रवाद के प्रणेता हैं, जिन्होंने अपनी पुस्तक 'हिन्दू राष्ट्रवाद ऑर हू इज़ ए हिन्दू' में इसे प्रस्तुत किया था. यह पुस्तक धर्म को राष्ट्रवाद का आधार बताती है और ऐसी पहली पुस्तक है जो 'द्विराष्ट्र सिद्धांत' की खुलकर वकालत करती है.

मोदी जी ने जो तमाशा किया उससे जाहिर है कि वे आस्था को संविधान के ऊपर रखना चाहते हैं. उन्होंने घोषणा की 'आज, भारत पुनः प्राचीन काल की गौरवशाली धारा की ओर मुड़ रहा है.' उस 'प्राचीन गौरवशाली काल' के मूल्य क्या थे? एक तानाशाह राजा हुआ करता था जो जातिगत और लैंगिक ऊंचनीच से सराबोर समाज पर शासन करता था. उस 'गौरवशाली काल' के नियमों और मान्यताओं को मनुस्मृति में परिभाषित किया गया है. इस पुस्तक को आंबेडकर ने सार्वजनिक रूप से जलाया था. आंबेडकर के अनुसार, प्राचीन काल में ऐसी ही पुस्तकों के कारण समाज में दलितों और महिलाओं का दोयम दर्जा था.

संघ के चिन्तक इस आयोजन को गौरवशाली बता रहे हैं. उनके अनुसार यह हिन्दुओं की उस गौरवशाली परंपरा को पुनर्जीवित करता है जिसमें धर्म राजनीति से ऊपर था और राजा का कर्त्तव्य था कि वह धर्म के दिखाए रास्ते पर चले और यह भी कि सेंगोल इसी परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है. सरकार का कहना है कि यह राजदंड परंपरा की निरंतरता का प्रतीक और पवित्र संप्रभुता और धर्म के राज का साकार स्वरुप है. आरएसएस के राम माधव के अनुसार (इंडियन एक्सप्रेस, 29 मई, 2023), 'नए संसद भवन में सेंगोल की स्थापना के समय उसकी ऐतिहासिकता बहस का मुद्दा नहीं हो सकती बल्कि मुद्दा यह है कि वह 'धर्मदंड' है और भारत की सभ्यागत परंपरा में राजनैतिक सत्ता पर नैतिक और आध्यात्मिक की सर्वोच्चता का प्रतीक है.

वे आगे लिखते हैं, 'भारत की सभ्यागत परंपरा में राजाओं और बादशाहों को कभी सर्वोच्च सत्ताधारी नहीं माना गया. चाहे वे किसी भी राजचिन्ह हो धारण करते रहे हों - मुकुट, राजदंड या स्वर्ण वर्तुल - राजाओं को उनके राजतिलक के समय ही दरबार का पुरोहित याद दिलाता था कि धर्म अर्थात नैतिक-आध्यात्मिक व्यवस्था ही सर्वोच्च प्राधिकारी है.

एक तरह से यह आयोजन हिन्दू राष्ट्र की स्थापना की ओर एक और कदम है. इससे यह भी पता चलता है कि मोदी के मन में राजा बनने की कितनी तीव्र अतृप्त इच्छा है. इस कार्यक्रम में राजतंत्र के मूल्यों को आधुनिक कलेवर में प्रस्तुत किया गया और धर्म के नाम पर प्रजातान्त्रिक मूल्यों को कुचलने को औचित्यपूर्ण ठहराया गया. इसी तरह की कट्टरता हम इस्लाम के नाम पर पाकिस्तान में, ईसाई धर्म के नाम पर अमरीका में और बौद्ध धर्म के नाम पर श्रीलंका में देख सकते हैं. जिस समय उद्घाटन का भव्य कार्यक्रम चल रहा था उसी समय पुलिस प्रजातान्त्रिक ढंग से आन्दोलनरत पहलवानों के साथ बेरहमी से हाथापाई का रही थी. यह है हमारी सरकार की प्रजातंत्र के प्रति प्रतिबद्धता.

राजनीति

तनवीर जाफ़री

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

अरे ओ जफ़ाओं पे चुप रहने वालों

राजशाही अथवा तानाशाही व्यवस्था में जनता के सवालों का जवाब न देने और किसी राजा या तानाशाह द्वारा जनता से इकतरफ़ा संवाद करने की बात तो किसी हद तक समझ आती है। हालाँकि पुराणों व इतिहास में कई ऐसे राजाओं का भी ज़िक्र है जो अपनी राजशाही अहंकार के बजाये जनभावनाओं का पूरा आदर व सम्मान करते चलाते थे। भगवान श्री राम के 'राम राज' का उदाहरण इनमें सबसे प्रमुख एवं उपयुक्त उदाहरण है। परन्तु लोकतांत्रिक व्यवस्था में जनता के प्रति जवाबदेही तो किसी भी शासन की पहली ज़िम्मेदारी है। तभी तो विश्व के सर्वशक्तिमान समझे जाने वाले देश अमेरिका सहित अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्था रखने वाले देशों के प्रमुख अथवा उनके प्रतिनिधि समय समय पर संवाददाताओं के समक्ष पेश होकर मीडिया के उन सवालों का जवाब देते आ रहे हैं जो जनता उनसे पूछना चाहती है। इसी लिये लोकतांत्रिक सरकार को 'जनता द्वारा, जनता की और जनता के लिये' निर्वाचित सरकार के रूप में परिभाषित किया जाता है।

परन्तु जब लोकतंत्र की आड़ में शासक वर्ग जनता से इकतरफ़ा संवाद स्थापित करने लगे,मीडिया के सवालों के जवाब देने से कतराने लगे,नियमित प्रेस ब्रीफ़िंग से ही पीछा छुड़ाने लगे, मीडिया के सवालों का जवाब देने के बजाये अपनी ख़ामोशी में ही अपनी 'रणनीतिक जीत' समझने लगे तो इसे लोकतंत्र का ह्रास नहीं तो और क्या कहा जायेगा ? और तो और यदि मीडिया के कुछ कर्तव्यनिष्ठ पत्रकार अपने स्तर पर शासन की कमियां उजागर करें तो उन्हें जेल भेज दिया जाये और उन पर झूठे आपराधिक मुक़द्दमे दायर कर दिए जायें? यह आख़िर लोकतंत्र की कैसी परिभाषा है? परन्तु अफ़सोस की बात यह है कि इस समय विश्व का सबसे बड़ा कहा जाने वाला भारतीय लोकतंत्र ऐसे ही दुर्भाग्यपूर्ण हालात का सामना कर रहा है।

पिछले दिनों केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार ने अपने शासन के नौ वर्ष पूरे कर लिये। इस बात के क़यास लगाये जा रहे थे कि शायद प्रधानमंत्री प्रेस वार्ता के ज़रिये देश के मीडिया को सम्बोधित करेंगे। परन्तु ऐसे सभी क़यास धरे के धरे रह गये। और प्रधानमंत्री ने मीडिया से रू-ब-रु न होने की अपनी पिछले नौ वर्ष की 'रिवायत' को ही आगे बढ़ाते हुये इस अवसर पर भी कोई संवाददाता सम्मलेन नहीं किया। हाँ जनता से सत्ता के इकतरफ़ा संवाद को ही संभवतः 'लोकतंत्र का चौथा स्तंभ' समझने की भूल करने वाले सत्ता समर्थक अनेक मंत्रियों, भाजपा पदाधिकारियों व सत्ता के शुभचिंतक लेखकों ने ज़रूर 'मोदी सरकार के नौ साल' होने पर लेखों व क़सीदों की झड़ी लगाकर रख दी। विज्ञापन पर करोड़ों ख़र्च किये गये। एक भोजपुरी अभिनेता व गायक भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने तो 9 साल की मोदी सरकार की उपलब्धियों को समाहित करने वाला एक गीत (क़सीदा) ही पेश कर डाला। 'जबकि विपक्षी कांग्रेस पार्टी के प्रवक्ताओं ने '9 साल 9 सवाल' शीर्षक से एक पत्रकार वार्ता कर देश की आम जनता से जुड़े नौ सवाल मोदी सरकार से पूछे और इन सवालों से संबंधित एक पुस्तिका भी जारी की।

प्रधानमंत्री मोदी की एक और बहुत मशहूर वायरल वीडियो सोशल मीडिया पर खूब प्रसारित होती है जिसमें वे संसद भवन के बाहर मीडिया के सामने आकर खड़े होते हैं। फ़ोटो खिंचवाते हैं परन्तु मीडिया के किसी भी सवाल का जवाब दिए बिना मुस्कुराते हुये वापस मुड़ जाते हैं। करनथापर और विजय त्रिवेदी के सवालों से उनके मुंह फेरने,पानी मांगकर पीने और साक्षात्कार छोड़ कर चले जाने का दृश्य तो दुनिया देख ही चुकी है। संभवतः वास्तविक पत्रकारों से रूबरू होने का वही कड़ुवा अनुभव मोदी को मीडिया के समक्ष जाने से रोक देता है। और तभी वे इकतरफ़ा जन संवाद या 'मन की बात' जैसे सम्बोधन को ही वे जन की बात मान बैठे हैं। या फिर कुछ फ़िल्म के सत्ता शुभचिंतक सेलेब्रिटीज़ को कभी कभी इंटरव्यू देकर लोगों को यह बताते हैं कि वे आम कैसे खाते हैं? चूसकर या काटकर? और उन में फ़क़ीरी कहाँ से आयी.... आदि, आदि ?

और अब अपने प्रधानमंत्री से प्रेरणा लेते हुये उनके वरिष्ठ मंत्रियों ने भी शायद मीडिया के समक्ष 'रणछोड़' बनने का हुनर सीख लिया है। मीडिया के सवालों से पीछा छुड़ाते, प्रश्नकर्ता पर गुस्सा होने,गुस्से में आपा खो बैठने यहां तक कि मीडिया कर्मी से मारपीट करने व उसका माइक छीनने तोड़ने जैसी तो अनेक घटनायें राजनेताओं व मीडियाकर्मियों के बीच होती ही रही हैं। परन्तु मीडिया कर्मी के सवाल से बचकर किसी महिला मंत्री का हांफते कांपते हुए दौड़ लगाकर भागना भी शायद मोदी सरकार के कार्यकाल में घटी एक विलक्षण घटना मानी जाएगी। ओलम्पिक पदक विजेता पहलवानों को लेकर गत दिनों जब एक महिला मीडिया कर्मी ने एक कार्यक्रम के बाद उनसे यह पूछा कि 'पहलवानों के आंदोलन पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है? यह सवाल सुनकर केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी वहां से दौड़ लगाकर भाग खड़ी हुईं। भागते भागते लेखी केवल इतना कहते सुनाई देती हैं कि - क़ानून के तहत प्रक्रिया चल रही है। महिला मीडिया कर्मी भी उनके साथ दौड़ते हुये उनसे बार बार अपना सवाल दोहरा रही थी। परन्तु उसके सवालों का विस्तृत जवाब दिये बिना वे तब तक दौड़ती रहीं जब तक अपनी कार तक नहीं पहुंचीं और कार तक पहुँचते ही 'चलो चलो..' कहते हुए कार में बैठ गयीं और वहाँ से चलती बनीं। मीनाक्षी लेखी भाजपा की एक क़ाबिल प्रवक्ताओं में गिनी जाती हैं। उनका सवालों से बचकर इसतरह भाग खड़े होना क्या इस बात का सुबूत नहीं कि ओलम्पिक पदक विजेता पहलवानों के शारीरिक शोषण को लेकर एक बाहुबली भाजपा सांसद के विरुद्ध चलाये जा रहे आंदोलन के बारे में माकूल जवाब देने के लिये उनके पास कुछ भी नहीं ?

पहलवानों के मामले को लेकर पूरा देश स्तब्ध है कि किस तरह सरकार देश का नाम रौशन करने वाली लड़कियों की शिकायत पर एक आरोपी को गिरफ़्तार नहीं कर रही। सरकार अदाणी जैसे आर्थिक घोटाला प्रकरण में भी ख़ामोश है, किसानों की आय दोगुनी करने के अपने वादे पर सरकार ख़ामोश है, बढ़ती हुई महंगाई का सरकार के पास कोई जवाब नहीं, केवल मंहगाई ही नहीं बल्कि बेरोज़गारी भी स्वतंत्र भारत के इतिहास में अपने चरम पर है। परन्तु सरकार और उसके कारिंदों के पास ऐसे हर सवाल का जवाब या तो ख़ामोशी है या फिर अब सवालों से बचकर भाग खड़े होने यानी मीडिया को देख,पलायन करने की नई परंपरा शुरू हो गयी है। सवालों पर चुप रहने या भाग जाने से सवाल तो ख़त्म नहीं हो जाते बल्कि किसी लोकतांत्रिक देश में जवाब न देने वाले सत्ता के ज़िम्मेदारों पर संदेह ज़रूर पैदा होता है। मशहूर शायर ख़ुमार बाराबंकवी ने ऐसे ही रणछोड़ों की ख़ामोशी के लिये कहा है कि -अरे ओ *जफ़ाओं पे चुप रहने वालो। ख़मोशी जफ़ाओं की *ताईद भी है।।*जफ़ा (ज़ुल्म,ज़्यादती), *ताईद (समर्थन, सहमति) संपर्क - 098962-19228।

इस्तीफा क्यों दें?

वक्रोक्ति

रमेशचंद्र शर्मा

खता इक पल की होती है
भुगतना सदियों को पड़ता है।

अगर लालबहादुर शास्त्री से खता नहीं होती तो हर रेल हादसे के बाद भई लोग शास्त्रीजी का हवाला देकर वर्तमान रेल्वे मंत्री से इस्तीफा नहीं मांगते।पता नहीं शास्त्रीजी को जाने क्या उगी किउधर दुर्घटना हुई इधर पटदने से इस्तीफा दे दिया।यूं भी कोई भला इस्तीफा देता नीचे उतारने होते है।जाने कितनी रेवड़ियां बांटनी होती हैं। जाने कितने नाते रिश्ते जोड़ने पड़ते है तब जाकर वोट मिलते हैं।कार्यकर्ताओं की दाढ़ियों में हाथ डालना होता है। सत्रह सौ साठ प्रलोभन देने होते है तब कार्यकर्ता पुट्ठे पर हाथ धरने देते हैं।चलो साहेब ,जैसे तैसे चुनाव जीत लिए तो पचासों तिकड़मबाजी करनी होती है तब जाकर मंत्री पद मिलता है।एक छोटी मोटी दुर्घटना क्या हो गई कि इस्तीफा देदो। आप तो एक बात बताओ यार, कि ट्रेन क्या मिनिस्टर चला रहा था? क्या मिनिस्टर को सपना आ रहा था कि एक्सीडेंट होने वाला है? अरे यार, मिनिस्टर एक इंसान होता है कोई ज्योतिषी थोड़े कि वह ग्रह स्थिति देखकर पता कर ले कि राहु यहां बैठा है,मंगल केतु को तिरछी निगाहों से देख रहा हैं तो ट्रेन हादसा होगा ही।वह कोई संत भी नही कि पर्चा निकाल कर बता दे कि रेल हादसा होने वाला है।या यह उपाय बता दे कि ट्रेन रवाना होने के पहले उस पर निबू मिर्ची लटका दे या अभिमंत्रित बिल्वपत्र ट्रेन पर चिपकवा दे तो हादसा नहीं होगा।आप बताइए रेल मंत्री की जगह आप होते तो हादसा रोकने के लिए आप क्या भेला कर लेते?

अरे भैया, सीधी सी बात है होनी तो होकर रहे अनहोनी ना होय,हादसा होना था सो हो गया।अब रेलमंत्री बापड़ा उसमे क्या करे? जहां तक लोगो के मरने की बात है तो हानि - लाभ, जीवन -मरण,जस - अपजस विधि हाथ। अब आप ही बताइए कि मिनिस्टर साहेब इस्तीफा क्यों दें? है? मिनिस्टर तो दूर चपरासी तक भी इतना तुरतफुरत इस्तीफा नहीं देता है। वह भी जानता है कि चपरासी की नौकरी के लिए भी कितने पापड़ बेलने होते हैं।तब जाकर चपरासी की नौकरी मिलती है।

हो सकता है शास्त्रीजी के जमाने मिनिस्ट्री यूं ही चलते फिरते मिल जाती होगी।आज के जमाने होते तो पता लग जाता कि मिनिस्टर बनने के लिए कितने पापड़ बेलने होते हैं।टिकट की जुगाड़ भिड़ाओ और टिकट लाओ।फिर चुनाव लड़ो।एड़ी चोटी का जोर लगाओ तब जाकर चुनाव जीता जाता है।धन बल ,बाहु बल सब झोंकना पड़ता है।जातिवाद और धर्म के मोहरे चलने होते है तब जाकर चुनाव जीत पाते हैं। सड़े से सड़े आदमी के नाज नखरे सहन करने होते हैं।अच्छे बुरे बोल के कड़वे घूंट गले

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि. करोंद भानपुर बायपास रोड, भोपाल से मुद्रित एवं बी-208 शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

राजेंद्र बज

लेखक व्यंग्यकार हैं।

अपने-अपने चुनावी सर्वे

आज इधर वाले और उधर वाले दोनों ही राजनीतिक समूह में दीपावली जैसा माहौल था। हर कोई थिरक रहा था। कुछ बंदे मन ही मन भव्य राजमहल के वासी होने का ख्वाब देख रहे थे। मुख्य दो की लड़ाई में अन्य छोटे-बड़े समूह के नियंता मन ही मन कुछ ऐसा सपनों का महल बना रहे थे कि यदि स्पष्ट जनादेश न हुआ तो उनके किंग मेकर बनने का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा। दरअसल इधर वाले ने भी चुनाव पूर्व सर्वे कराया था और उधर वाले ने भी सर्वे कराया था। दोनों ही सर्वे के अनुसार जिन्होंने सर्वे के लिए नियुक्त किया था - उनके पक्ष में सत्ता के आसार बताए गए थे। चुनावी सर्वे का यही मजा है कि चुनाव जीतने या हारने के पहले, जीत जाने का रसास्वादन किया जा सकता है।

चुनाव पूर्व अलग-अलग राजनीतिक दलों द्वारा सर्वे इसलिए कराए जाते हैं कि आम नागरिक यह समझ सके कि उसके स्वयं के मन में क्या चल रहा है ? क्योंकि आजकल के प्रचार प्रसार के दौर में हर किसी के समक्ष यह दर्शाना जरूरी होता है कि उसके मन में क्या है? यदि कोई मन में चाहत लिए किसी बात का भावी नतीजा जानना चाहता है, तो वह अपने वाले से अपने चुनावी प्रदर्शन का नतीजा जानने की चेष्टा करता ही है। वैसे तो चुनाव पूर्व तमाम तरह के सर्वे आते हैं। यही नहीं अपितु मतदान के तुरंत पश्चात भी ऐसे सर्वे सामने आते हैं। लगभग हर एक सियासी दल अपनी-अपनी स्थिति का सर्वे कराता है। ऐसे में नियोक्ता के मन की बात रखना सर्वे करने वालों के लिए आवश्यक हो जाता है।

एक प्रकार से ठाकुर के आदमियों द्वारा ठाकुर सुहाती बात सामने रखी जाती है। वैसे भी भला नियोक्ता को कौन नाराज कर सकता है ? हमारे यहां नागरिकों का एक वर्ग ऐसा भी है जो चलती गाड़ी में बैठना पसंद करता है। जी हां, 'जिधर दम उधर हम' के आधार पर भी मतदान होता है। वैसे चुनाव में इधर वाले इधर वाले के पक्ष में मतदान करते हैं और उधर वाले उधर वाले के पक्ष में आदतन मतदान करते हैं। शेष हवा के रुख के आधार पर चला करते हैं। बोलचाल की भाषा में इसे ढुलमुल मतदाता के रूप में भी लिया जा सकता है। चुनावी दौर में चुनाव लड़ने के बजट का एक बड़ा भाग इन्हीं को लुभाने में खर्च होता है।

युद्ध के पहले परिणाम जानने की उत्कंठा, और कहीं दिखाई देती हो या नहीं देती हो, लेकिन राजनीति में तो हद से ज्यादा दिखाई देती है। तमाम राजनीतिक दल के नुमाइंदों में अतिरिक्त उत्साह का संचार निरंतर होता रहे, इसलिए चुनाव पूर्व के सर्वे अपने बंदों का मनोबल बढ़ाने में कारगर होते हैं। वैसे जीतने वाला जीतता ही है और हारने वाला हारता ही है। लेकिन हमारे देश प्रदेश की राजनीति में आखरी सांस तक सत्ता का ख्वाब देखने की बड़ी गंभीर बीमारी है। खैर, लोकतंत्र में हर कोई अपना दिल बहलाने का हक रखता है। इस नाते जब तक अंतिम नतीजा न आए, हमें इनकी भी जय-जय करना है और उनकी भी जय-जय कार करना है।

कानून और न्याय

विनय झैलावत
(लेखक पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता हैं)

विधि जगत में वरिष्ठ अभिभाषकों का आशय अलग !

समाचार पत्रों में अक्सर अनेक अभिभाषकों के नाम के आगे वरिष्ठ अभिभाषक लगाया जाता है। लेकिन, यह गलत है। अनुभवी अभिभाषक होने के बाद भी सबके नाम के साथ वरिष्ठ अधिवक्ता नहीं लगाया जा सकता। विधि जगत में वरिष्ठ अभिभाषक घोषित करने की एक अलग प्रक्रिया है। वरिष्ठ अभिभाषकों पर कई प्रतिबंध लगाए जाते हैं, तो उन्हें अधिक मान-सम्मान भी मिलता है। इस संबंध में अलग से कानून और प्रक्रिया है।

सामान्यतया वरिष्ठता का आशय उम्र एवं अनुभव से लगाया जाता है। लेकिन, विधि जगत में अभिभाषकों के मामले में इसका एक विशिष्ट अर्थ होता है। यह अर्थ सामान्य अर्थ से अलग होता है। वरिष्ठ अभिभाषक एक अभिभाषक के रूप में उनका सर्वोच्च सम्मान है। किसी भी अभिभाषक को वरिष्ठ अभिभाषक घोषित करने की एक कठिन कसौटी होती है। इस कसौटी पर खरा उतरने के बाद ही सर्वोच्च न्यायालय/उच्च न्यायालयों द्वारा एक अभिभाषक को वरिष्ठ अभिभाषक घोषित किया जाता है। इसकी एक विशिष्ट प्रक्रिया और कानून है। वरिष्ठ अभिभाषक का जहां चहुँओर सम्मान और स्थान होता है वहीं उन पर कई प्रतिबंध भी होते हैं। वरिष्ठ अभिभाषक बगैर सहायक अभिभाषक के न्यायालय में पैरवी नहीं कर सकते हैं। वे स्वयं अभिवचन एवं प्रारूप तैयार नहीं कर सकते हैं। वे सूचना पत्र भी नहीं दे सकते हैं। ऐसे कई काम, उनके सहायक अभिभाषक करते हैं। वरिष्ठ अभिभाषक कनिष्ठ अभिभाषक द्वारा बनाए गए केवल उस प्रारूप को अंतिम रूप देते हैं। सबसे बड़ा सम्मान तो यह होता है कि एक वरिष्ठ अभिभाषक बगैर वकालतनामे के सहायक अभिभाषक के निर्देशों पर उसके प्रकरण में देश के किसी भी न्यायालय में उपस्थित होकर पैरवी कर सकता है। वरिष्ठ अभिभाषक के कथन को विशेष महत्व और सम्मान दिया जाता है तथा उनका विधि जगत में विशेष स्थान होता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में अपने द्वारा सन् 2017 में दिए गए एकफैसले (इंदिरा जयसिंह बनाम सुप्रीम कोर्ट) में निर्धारित सीनियर एडवोकेट डेजिग्नेशन को विनियमित करने वाले दिशा निर्देशों में संशोधन की मांग करने वाली याचिकाओं पर अपना फैसला सुनाया है। इसमें विविध श्रेणी को दिए गए वेटेज में निःस्वार्थ कार्य प्रकाशित और अप्रकाशित निर्णयों और डोमेन विशेषज्ञता को भी जोड़ा है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि हमें कार्यवाही में एडवोकेट द्वारा निभाई गई भूमिका पर भी विचार करना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि बड़ी संख्या में एडवोकेट विशेष न्यायाधिकरणों के समक्ष विशेष रूप से प्रैक्टिस कर रहे हैं। वे सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष तभी उपस्थित होते हैं, जब उनके मामले सर्वोच्च न्यायालय तक जाते हैं। यह देखा गया कि परिस्थितियों को देखते हुए उनकी उपस्थिति कम हो सकती है। लेकिन इसे सीनियर एडवोकेट के रूप में नामित किए जाने की प्रक्रिया में नुकसान के रूप में काम नहीं करना चाहिए।

यह जानना महत्वपूर्ण है कि वरिष्ठ अधिवक्ता क्या हैं और उनकी क्या खूबियां होती है। अधिवक्ता अधिनियम की धारा 16 में प्रावधान है कि अधिवक्ताओं के दो वर्ग होंगे। अर्थात वरिष्ठ अधिवक्ता और अन्य अधिवक्ता। एक अधिवक्ता, को उसकी सहमति से वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किया जा सकता है। लेकिन, इसके लिए यह आवश्यक है कि उनकी योग्यता के बारे में सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय की राय यह हो कि बार में उनका विशिष्ट स्थान है तथा कानून में उनके विशेष ज्ञान या अनुभव के आधार पर, वह इस तरह की विशिष्टता के योग्य हो। वरिष्ठ अधिवक्ता, अपने प्रैक्टिस के मामले में, कानून पेशे के हित में, बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया द्वारा निर्धारित प्रतिबंधों के अधीन होते हैं।

अधिवक्ता अधिनियम की धारा 49 (1) (जी) के अंतर्गत बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया, अपनी शक्ति का प्रयोग कर इस संबंध में उल्लेखित नियम बनाता है। बार काउंसिल ऑफ़ इंडिया के नियमों के अध्याय एक के भाग 4 पर वरिष्ठ अधिवक्ताओं के संबंध में समुचित प्रावधान करता है। नियम यह भी प्रावधान करते हैं कि एक वरिष्ठ अधिवक्ता सर्वोच्च न्यायालय में एडवोकेट ऑन रिकार्ड के बिना तथा किसी अन्य अदालत या न्यायाधिकरण में एक सहायक वकील के बिना या अधिनियम की धारा 30 में उल्लेखित अन्य व्यक्ति या न्यायाधिकरण के समक्ष उपस्थित नहीं होगा। जहां नियमों के लागू होने से पहले एक वरिष्ठ अधिवक्ता को नियुक्त किया गया है, वह तब तक जारी नहीं रहेगा, जब तक कि राज्य अधिवक्ता परिषद में पंजीबद्ध एक वकील उसके साथ शामिल नहीं होता है। इसके अलावा, एक वरिष्ठ अधिवक्ता किसी न्यायालय या ट्रिब्यूनल में या अधिनियम की धारा 80 में उल्लेखित किसी भी व्यक्ति या अन्य प्राधिकारी के समक्ष दलील या हलफनामे, साक्ष्य पर सलाह या इसी तरह का कोई भी मसौदा तैयार करने के निर्देश को स्वीकार नहीं करेगा। एक वरिष्ठ अधिवक्ता कनिष्ठ अधिवक्ताओं के निर्देश पर अपने मुवक्किलों की ओर से बहस के दौरान रियायत देने या वचनबद्धता देने के लिए स्वतंत्र होगा। एक वरिष्ठ अधिवक्ता किसी भी मामले में उपस्थित होने वाले राज्य अधिवक्ता परिषद में पंजीबद्ध अभिभाषक द्वारा प्रदान की गई सेवाओं की मान्यता में उसे एक शुल्क का भुगतान कर सकता है जिसे वह उचित समझता है।

नियम यह प्रावधान भी करता है कि एक वरिष्ठ अधिवक्ता जिसने एक मामले में एक वकील (जूनियर) के रूप में कार्य किया था, उसे एक वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में नामित किए जाने के बाद, अपील की अदालत में या सर्वोच्च न्यायालय में अपील के आधार पर सलाह नहीं दी जा सकती है। यह भी प्रावधान किया गया है कि एक वरिष्ठ अधिवक्ता किसी मुवक्किल से सीधे किसी न्यायालय या ट्रिब्यूनल में या भारत में किसी व्यक्ति या अन्य प्राधिकरण के समक्ष उपस्थित होने के लिए कोई संक्षिप्त या निर्देश स्वीकार नहीं करेगा। एक वरिष्ठ अधिवक्ता बनने के लिए व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह के आत्मविश्वास की आवश्यकता होती है। क्योंकि, निर्णय करते समय की विश्लेषण शक्ति, उनसे होने वाले फायदे और नुकसान के अनुमान आदि की आवश्यकता है। आत्मविश्वास बोलचाल के तरीके से देखा जा सकता है। यहां तक कि आपके हावभाव भी प्रमुख भूमिका निभाते हैं। किसी भी दस्तावेज को लिखते समय एक शब्द का गलत स्थान वाक्य के अर्थ को परिवर्तित कर सकता है। एक अधिवक्ता का अपने काम के प्रति एक सटीक दृष्टिकोण होना चाहिए। किसी भी गलत अनुरोध से आपके आवेदन की अस्वीकृति हो सकती है। प्रैक्टिस से अनुभव आता है। यह एक वरिष्ठ अधिवक्ता के गुणों में से एक है। इस अनुभव माध्यम से एक अधिवक्ता सभी मामलों, परिस्थितियों और यहां तक कि सभी अवांछित स्थितियों को संभाल सकता है। दूसरों की तुलना में उनकी संचालन शक्ति ज्यादा प्रमुख दर्शित होती है।

एक अच्छा वकील हमेशा अपने निजी जीवन को पेशेवर जीवन से अलग रखता है।वे आमतौर पर भावुक नहीं होते हैं। लेकिन उन्हें दूसरे व्यक्ति की भावनाओं को समझने और उनके मुद्दों को समझने की अत्यंत आवश्यकता होती है। यह गुण व्यक्तित्व के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। उसकी क्षमता का परीक्षण तब होता है जब आप अपने सहयोगियों से परामर्श किए बिना किसी भी परिस्थिति या परिस्थितियों में सोच सकते हैं। उस मामले को उचित या तार्किक तरीके से अपने पक्ष में प्रस्तुत कर सकते हैं, ताकि अपना केस जीत सकें। चाहे आपका प्रकरण नकारात्मक हो या सकारात्मक हो, भावनाओं, अभिव्यक्ति और विचारों पर नियंत्रण भी आवश्यक है। बोलने से पहले हमेशा सोचने की जरूरत है। शब्द लाभदायक हैं तो हानिकारक भी हो सकते हैं। एक अभिभाषक को कब बोलना है और कब खामोश रहना है, यह समझना आवश्यक है। कभी कभी बोलना हानिकारक साबित हो सकता है। एक वरिष्ठ अधिवक्ता के पास हमेशा इस विचार के साथ-साथ अपने करियर में भी स्थिरता होती है। वह शांतिपूर्ण तरीके से हर स्थिति से निपट सकता है और बिना किसी आक्रामकता के शांति से बातचीत कर सकता है। पेशेवर या निजी जीवन में स्थिरता और परिपक्वता अनुभव के साथ आती है।

सामान्य तौर पर एक वरिष्ठ अधिवक्ता की वरिष्ठता, उम्र और एक विधिकानूनी पेशे के अनुभव पर आधारित होती है। इसे एडवोकेट्स एक्ट में भी परिभाषित किया गया है। वरिष्ठ अधिवक्ता को एक अलग आचार संहिता का पालन करना होगा। यह अन्य वकीलों से अलग है। सामान्य लोग एक अच्छे अभ्यास और अनुभव वाले वृद्ध वकील को एक ''वरिष्ठ वकील'' के रूप में देखते हैं। जबकि एक नए वकील को वरिष्ठ वकील से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता होती है। कुछ कौशलों को भी समझने की आवश्यकता होती है। एक वरिष्ठ अधिवक्ता की सफलता के पीछे समर्पण और वर्षों का अभ्यास है, जबकि एक जूनियर वकील इस कौशल और गुणवत्ता का अभाव है। वरिष्ठ अधिवक्ता का दर्जा उन्हें योग्यता औरवरिष्ठता के आधार पर सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय द्वारा नामित किया जाता है।

अधिवक्ता की भूमिका और कर्तव्य न्याय प्रदान करने में मदद करना है। न्याय दिलाने के साधन के रूप में अधिवक्ता कार्य करते हैं। वरिष्ठ अधिवक्ता उनके कौशल, अनुभव, ज्ञान और विषेषज्ञता की पहचान है। यदि कोई वरिष्ठ अधिवक्ता बनने की ख्वाहिश रखता है, तो उसे कड़ी मेहनत के साथ-साथ कानून के क्षेत्र में विशेष ज्ञान के साथ खून पसीना बहाना पड़ता है। लेकिन, केवल कड़ी मेहनत ही सफलता की कुंजी नहीं है। इसके साथ ही आपको कुछ विशिष्ट कार्य करने की भी जरूरत है। इनमें से, अपने संचार कौशल, वकालत कौशल, परामर्श कौशल और अपने मस्तिष्क का उपयोग कई दिशाओं में करना आवश्यक है। एक वरिष्ठ अधिवक्ता बनना और एक विशेष योग्यता होना इतना आसान नहीं है।

मुद्दा

डॉ. चन्दर सोनाने
लेखक एमपी जनसंपर्क विभाग के पूर्व अधिकारी हैं।

आखिर महिला पहलवानों को कब मिलेगा न्याय ?

जरा याद कीजिए, ओलिम्पिक के खेल हो या राष्ट्रमंडल के खेल में देश की महिला खिलाड़ियों ने जब अपने देश का परचम फहराया था, तब सारे देशवासियों का सीना गर्व से फूल गया था। देश की बेटियों ने विश्वभर में देश का नाम रोशन कर दिया था। यह महिला सशक्तिकरण का सबसे अच्छा उदाहरण था। किन्तु देश के गौरव इन्हीं महिला पहलवानों दिनेश फोगाट, संगीता फोगाट, साक्षी मलिक और अन्य महिला पहलवानों को जिस तरह बीच सड़क पर अमानवीय तरीके से घसीटकर और बर्बरता पूर्वक धरना स्थल से पुलिस ले गई और उनका अपमान किया तथा साक्षी मलिक के सिर पर एक पुलिसकर्मी ने अपना जूता पहना पैर रखा दिया, तब सरकार और पुलिस की बर्बरता पर तब पूरे देशवासी रो पड़े ! पुलिस की ऐसी शर्मनाक हरकत पर केन्द्र सरकार का चुप रहना यह नहीं दर्शाता कि वह आरोपी भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को बचाना चाहती है ? साथ ही केन्द्र सरकार का यह रवैया यह भी दर्शाता है कि केन्द्र सरकार, जो बार-बार 140 करोड़ भारतीयों का प्रतिनिधित्व करती कहती है, वह जनता को अपना मुँह किस तरह से दिखायेगी ?

ऐसा क्यों हुआ ? महिला पहलवानों ने ऐसा क्या कर दिया था कि पुलिस निरंकुश हो गई और बर्बरता पर उतर आई। महिला पहलवानों ने अपने साथ हुए यौन उत्पीड़न पर भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष और भाजपा के सांसद बृजभूषण शरण सिंह पर सबसे पहले इस साल की शुरूआत जनवरी में सबसे पहले गंभीर यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए थे। महिला खिलाड़ियों ने सरकार के आश्वासन पर उस समय जंतर- मंतर पर अपना धरना स्थगित कर दिया था। परंतु आश्वासन पर कुछ काम नहीं होने पर पीड़ित महिला पहलवान दिल्ली के जंतर - मंतर पर फिर से धरने पर बैठ गई थी। करीब एक महीने से धरने पर बैठी महिला पहलवानों के आरोप अत्यन्त गंभीर होने के बावजूद पुलिस ने आरोपी के विरूद्ध एफआईआर तक दर्ज नहीं की। जब महिला पहलवानों को मजबूर होकर सुप्रीम कोर्ट की शरण लेनी पड़ी और सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर ही आरोपियों के खिलाफ दो एफआईआर दर्ज हो पाई।

भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष पर गंभीर दो एफआईआर दर्ज होने के बावजूद अभी तक पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार तक नहीं किया। इस कारण दुःखी होकर महिला पहलवान और उनके साथी श्री बजरंग पुरिया ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जीते गए अपने सभी पदक हरिद्वार में माँ गंगा नदी में बहा देने का फैसला लिया। दुःखी और पीड़ित महिला पहलवान हरिद्वार में गंगा नदी पहुँच भी गए, किन्तु भारतीय किसान यूनियन के प्रवक्ता श्री राकेश टिकैत के वहाँ पहुँचकर समझाने पर महिला पहलवानों ने अपने पदक बहाने का फैसला रोक दिया। तब राकेश टिकैत ने महिला पहलवानों को प्राप्त

सभी पदक अपने पास सुरक्षित रख लिए।

जंतर-मंतर पर शांतिपूर्वक धरना दे रही महिला पहलवानों का आंदोलन समाप्त करने के लिए पुलिस ने बर्बरतापूर्वक कार्रवाई कर धरना तो समाप्त करवा दिया, किन्तु पूरे देश में महिला पहलवानों के प्रति संवेदना की लहर दौड़ गई। इस बीच महिला पहलवानों के समर्थन में खाप पंचायतों की समिति ने फैसला किया कि गिरफ्तारी के लिए दिल्ली पुलिस को आगामी 9 जून तक का समय दिया जायेगा। निश्चित समय तक कुछ नहीं होने पर देशभर में आंदोलन शुरू करेंगे। खाप पंचायतें भी महिला पहलवानों के साथ धरने पर बैठेंगे। खाप पंचायतों ने यह भी फैसला किया है कि वे महिला पहलवानों को न्याय दिलाने के लिए राष्ट्पति और गृहमंत्री से भी मिलेंगे।

इस बीच हाल ही में इंडियन एक्सप्रेस ने महिला पहलवानों द्वारा दर्ज दो एफआईआर का ब्यौरा प्रकाशित कर देशभर मेंतहलका मचा दिया है। इस समाचार पत्र ने अपनी एक विशेष रिपोर्ट प्रकाशित कर बताया कि एफआईआर के अनुसार 6 महिला पहलवानों ने गंभीर आरोप लगाया है कि भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह ने कम से कम 15 बार महिला पहलवानों का यौन उत्पीड़न किया। इसी के साथ महिला पहलवानों ने एफआईआर मेंयह भी बताया कि उनके साथ अध्यक्ष द्वारा अनुचित ढंग से छुने की 10 घटनाएँ भी हुई । इतना ही नहीं एफआईआर के अनुसार 2 घटनाएँ ऐसी भी दर्ज है जिनमें आरोप है कि बृजभूषण शरण सिंह ने उनके कैरियर में आगे बढ़ने के लिए शारीरिक संबंध बनाने की भी मांग रखी थी। पीड़ित महिला पहलवानों के अनुसार सभी घटनाएँ 2012 से गत वर्ष 2022 के बीच की है। कुछ घटनाएँ भारत में उनके साथ हुई और कुछ विदेश में होना भी बताई गई है। महिला पहलवानों में बृजभूषण के प्रति इतना डर समा गया था कि वे अकेली कहीं चल भी नहीं पाती थी और हमेशा समूह में ही आती-जाती थी।

सन 2012 से 2022 के बीच हुई घटनाओं से डरकर पीड़ित महिलाओं ने एफआईआर में अपने साथ हुई यौन उत्पीड़न की घटनाओं का ब्यौरा दिया है। यह सहज ही सोचा और समझा जा सकता है कि पिछले 10 साल केदौरान महिला पहलवानों ने किस प्रकार और कितना यौन उत्पीड़न सहा होगा ? जब सहन सीमा समाप्त हो गई तब जाकर उन्होंने अपने साथ हुए यौन उत्पीड़न की घटनाएँ बताई और आरोपी के विरूद्ध गिरफ्तारी की माँग रखी।

देश की गौरव बताई गई इन महिला पहलवानों के साथ इतना कुछ हो जाने के बावजूद केन्द्र सरकार की चुप्पी अत्यन्त दुःखद और आश्चर्यजनक है। क्या केन्द्र सरकार आरोपी और भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह के प्रति लगे गंभीर आरोप पर मात्र इसलिए चुप है कि आरोपी भाजपा का सांसद है ? यदि ऐसा है तो यह और भी अधिक दुखदायी है। महिला पहलवानों के साथ हो रहे इस प्रकार असंवेदनशील व्यवहार पर देशवासियों की ओर से गंभीर प्रतिक्रिया आ रही है। वे दुखी हैं और चाहते हैं कि केन्द्र सरकार नींद से जागे और बेटी बचाओं- बेटी पढ़ाओं का नारा देने वाली केन्द्र सरकार बेटियों के साथ न्याय करें ! अब भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष पद से सांसद बृजभूषण शरण सिंह को जब तक बर्खास्त नहीं किया जायेगा और गिरफ्तार नहीं किया जायेगा, तब तक महिला पहलवानों को न्याय नहीं मिलेगा !

अमृतकाल में भारत-सुराज संकल्प का 'अमृतकाल'

पुस्तक चर्चा

लोकेंद्र सिंह
समीक्षक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

भारतीय संस्कृति में कहा जाता है, 'नयति इति नायकः', अर्थात् जो हमें आगे ले जाए, वही नायक है। आगे लेकर जाना ही नेतृत्व की वास्तविक परिभाषा है। भारत के माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार वर्ष 2021 में 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान 'अमृतकाल' शब्द का इस्तेमाल किया था, जब उन्होंने अगले 25 वर्षों के लिए देश के लिए एक अद्वितीय रोडमैप को प्रस्तुत किया। अमृतकाल का उद्देश्य भारत के नागरिकों के जीवनशैली में गुणात्मक वृद्धि करना, गांवों और शहरों के बीच विकास में विभाजन को कम करना, लोगों के जीवन में सरकार के हस्तक्षेप को कम करना और नवीनतम तकनीक को अपनाना है। भारत ने 'अमृतकाल' की अपनी यह स्वर्णिम यात्रा शुरू कर दी है। ऐसा कहे जाने का कारण है भारत सरकार द्वारा देश को एक प्रतिबद्ध कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए पिछले कुछ वर्षों में लिए गए अभूतपूर्व निर्णय। देश के प्रख्यात पत्रकार, लेखक एवं वर्तमान में भारतीय जन संचार संस्थान के महानिदेशक प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी ने अपनी पुस्तक 'अमृतकाल में भारत' के तहत, इसकी शुरुआत, अब तक की यात्रा, संभावित बाधाओं और भारतीय राष्ट्र को इसके सही स्थान पर ले जाने के लिए उठाए गए भविष्य के कदमों पर जोरदार ढंग से विचार किया है।

इस पुस्तक के माध्यम से प्रो. द्विवेदी ने यह बताने का प्रयास किया है आज जब हम अमृतकाल में प्रवेश कर चुके हैं, तब अगले 25 वर्ष हमारे देश के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। आने वाले 25 वर्षों में हमें अपना पूरा ध्यान अपनी शक्ति पर केंद्रित करना होगा। अपने संकल्पों पर केंद्रित करना होगा। अपने सामर्थ्य पर केंद्रित करना होगा। इसलिए लोकतंत्र एवं समाज, संवाद और संचार, विकास के आयाम, विज्ञान एवं तकनीक, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और भाषा जैसे विषयों पर उनके द्वारा लिखे गए 25 लेख न सिर्फ नरेंद्र मोदी सरकार के पिछले 9 वर्षों के कामकाज का संक्षिप्त लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं, बल्कि भविष्य के भारत का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

नरेंद्र मोदी सरकार की योजनाओं के

साथ-साथ प्रो. द्विवेदी एक ऐसे प्रधानमंत्री से भी हम सबका परिचय करवाते हैं, जो संवाद कला के महारथी हैं, विश्व के बड़े से बड़े नेता उनके संचार कौशल के प्रशंसक हैं, लेकिन जब अपने देश के बच्चों से बात करने का वक्त आता है, तो वही प्रधानमंत्री उनके साथ च्परीक्षा पे चर्चाज भी करते हैं। नरेंद्र मोदी का हृदय वंचितों और पीड़ितों के प्रति हमेशा संवेदना, करुणा और ममता से छलकता रहा है। नरेंद्र मोदी का भाव रहा है - 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' तथा 'परद्रव्येषु लोष्ठवत्'। हमेशा उनके तन-मन में, उनके मन-हृदय में एक ही बात घुमड़ती रहती है कि समाज के दुःख-दर्द कैसे दूर कर सकते हैं? एक कार्यकर्ता का हृदय कैसा होता है, यह नरेंद्र मोदी के हर कार्य-व्यवहार में देखने को मिलता है। वैष्णव जन का हृदय रखने वाले नरेंद्र मोदी 'पीर पराई' जानते हैं और यह उनका जन्मजात गुण है।

प्रो. द्विवेदी की पुस्तक के अंतिम खंड में जब शिक्षा और सुरक्षा की बात आती है, तो उनके लेखों के माध्यम से यह पता चलता है कि भारत अब शासन के ऐसे रूप को देख रहा है, जिसमें बेरोकटोक कदम और साहसिक निर्णय लेने का चलन है। इसलिए पुस्तक की भूमिका में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान लिखते हैं कि यह समय सही मायनों में भारत की ऊर्जा, सामूहिकता, पारस्परिकता और वैश्विक चेतना को प्रकट कर रहा है। पुस्तक के 25 लेख केवल सरकार की 25 योजनाओं के बारे में नहीं हैं, बल्कि इस बात को भी प्रमुखता से रखते हैं कि मोदी सरकार में नए विचारों को पूरा महत्व दिया गया है और पूरी ईमानदारी से लागू किया गया है।

ऐसे बहुत कम प्रधानमंत्री होते हैं, जो किसी भी योजना को लागू करने और उसकी देख-रेख की प्रक्रिया में ज्यादा समय देते हैं। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए यह साधारण बात है। भारत के राजनीतिक इतिहास में ऐसे उद्धरणों की कमी नहीं है, जहाँ इरादे नेक थे लेकिन उनका अमलीकरण ठीक से नहीं हो पाया। सरकार का दायित्व प्रधानमंत्री से शुरू होता है और उन्हीं पर समाप्त होता है, और जहाँ तक योजनाओं को लागू करने की बात है, प्रधानमंत्री मोदी अपनी जिम्मेदारी को बहुत तन्मन्यता से निभाते हैं।

लेखक प्रो. संजय द्विवेदी की यह पुस्तक उस समय की साहित्यिक रचना है, जब भारत परिवर्तन की गति से गुजर रहा है। हम सभी के प्रयासों से भारत आने वाले समय में और भी तेज गति से स्वर्णिम भारत की ओर बढ़ेगा। यही इस पुस्तक का संकल्प भी है और लक्ष्य भी।

पुस्तक : अमृतकाल में भारत
लेखक : प्रो. संजय द्विवेदी
मूल्य : 599 रुपये
प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस, 4754/23, अंसारी रोड़, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

विखंडित होती समाज व्यवस्था

डॉ. ज्योति सिडाना

अनेक स्तरों से गुजरता हुआ समाज आज परिवर्तन के जिस मोड़ पर खड़ा है उसे उत्तर आधुनिक समाज की संज्ञा दी जाने लगी है। यानी मानव जीवन परम्परागत समाज से आधुनिक और आधुनिक से उत्तर आधुनिक समाज की ओर अग्रसर होता जा रहा है। उत्तर आधुनिकतावादी विचारक यह मानते हैं कि ऐसा लगता है कि वैज्ञानिक ज्ञान और विशेष रूप से विकसित तकनीक ने कुछ मायनों में दुनिया को एक जोखिम भरा और अधिक खतरनाक स्थान बना दिया है जैसे परमाणु हथियार, ग्लोबल वार्मिंग, कोविड, साइबर अपराध इत्यादि। उत्तर-आधुनिक युग ने एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया है जहाँ लोग वास्तविक व्यक्तियों या वस्तुओं के बजाय मीडिया छवियों पर प्रतिक्रिया करते हैं। मीडिया या डिजिटल दुनिया में क्या हो रहा है उस पर सब प्रतिक्रिया करते हैं लेकिन वास्तविक दुनिया में जो हो रहा है उस पर चिंतन करने या प्रतिक्रिया करने की बात तो दूर उस पर चर्चा करन भी लोगों को आवश्यक नहीं लगता। आज के इस युग में तर्क, इतिहास, यथार्थ सभी के अंत की बात की जाने लगी है। लेखक का अंत, विचारधारा का अंत, इतिहास का अंत, कला का अंत, आलोचक का अंत, सामाजिक सम्बन्धों का अंत और तो और मनुष्य की मृत्य की घोषणा भी इस उत्तर आधुनिक समाज का यथार्थ बन चुका है।

प्रतिदिन समाचारों में आने वाली ख़बरों पर यदि नजर डाले तो बहुत हद तक यह सच भी लगने लगा है। प्रेमी के द्वारा प्रेमिका और प्रेमिका के द्वारा प्रेमी की हत्या, पति के द्वारा पत्नी और पत्नी के द्वारा पति की हत्या, भाई के द्वारा बहन और बहन के द्वारा भाई की हत्या, बलात्कार, हिंसा ऐसी ही घटनाएं हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि समाज अपनी समाप्ति के कगार पर खड़ा है. किसी ने कुछ कह दिया या किसी काम के लिए मना कर दिया तो उसकी हत्या, किसी काम या प्रतियोगिता में सफलता न मिली तो आत्महत्या क्या यही सच्चा लोकतंत्र है?

जॉन कीन लिखते हैं कि जब लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों को खराब स्वास्थ्य, निम्न मनोबल और बेरोजगारी से ग्रस्त समाज द्वारा जवाबदेह ठहराया जाना बंद हो जाता है तो लोकतंत्र में अंधेपन और अयोग्यता का खतरा होता है। यह सच है कि दुनिया भर में लोकतंत्र बहुत ही कमजोर होता जा रहा है और लोकतंत्र में धीमी गति से होने वाली गिरावट चिंताजनक स्थिति है। जैसे अफ्रीका, अरब दुनिया और यूरोप में होने वाले युद्ध, नवउदारवाद, निगरानीमूलक पूंजीवाद, मुद्रा स्फ़ीति, महामारी, राजनीतिक दलों का बिखरना, राजनीतिक भ्रष्टाचार, सेक्स स्कैंडल, घरेलू हिंसा, सड़क हादसे, मध्यम वर्ग की बढ़ती चिंताए, धार्मिक असहिष्णुता, झूठ फैलाता मीडिया, प्रजातियों का विलुप्त होना, असंतुलित पर्यावरण, फसलों का ख़राब होना और युवा एवं किशोरों की आत्महत्याएं क्या कमजोर होते लोकतंत्र का संकेतक नहीं है। क्या इसे लोकतंत्र का अंत नहीं कहा जा सकता। पिछले कुछ दिनों की ख़बरों पर नजर डाले तो सामने आता है कि जयपुर में 12 साल के बच्चे की उसके चचेरे भाई ने हत्या कर दी, दिल्ली के शाहबाद में एक युवक ने एक महिला पर चाकू से 40 वार किए और आस-पास से गुजर रहे लोगों ने विरोध भी नहीं किया, हरियाणा के बल्लभगढ़ में एक 15 साल की लड़की ने अपने 12 साल के भाई से गेम खेलने के लिए मोबाइल माँगा उसने नहीं दिया तो उसका गला दबा कर हत्या कर दी। आश्चर्य की बात यह है कि इस तरह की घटनाओं में अधिकांश नाबालिग शामिल हैं। यह किस तरह की पीढ़ी उभार ले रही है। अभिभावक, शिक्षक, राज्य, समाज किस तरह की भूमिका निभा रहे हैं. या उत्तर आधुनिकतावादियों का यह तर्क सचमुच सही है कि समाज, परिवार, सम्बन्धों, भावनाओं और तार्किकता की समाप्ति हो चुकी है।

इन ख़बरों को सुनकर या पढ़कर आपको ऐसा नहीं लगता कि वास्तव में ही मनुष्यत्व का अंत हो गया है। सम्बन्ध निकट के हों या दूर के अब किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता बल्कि सभी लोग केवल अपने तक ही सीमित हो गए हैं या होते जा रहे हैं। लोगों में गुस्सा, असहनशीलता, नफरत, निराशा इतनी अधिक बढती जा रही है कि किसी भी प्रकार का अपराध करने से भी नहीं डरते फिर चाहे वह अपराध उनके अपनों के विरुद्ध ही क्यों न हो। समग्र समाज में होने वाले इस विघटन का उत्तर संभवतः समाज वैज्ञानिक ल्योटार्ड के इस तर्क से मिल सकता है कि वैज्ञानिक अनुसंधान अब विशुद्ध रूप से दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने वाले ज्ञान को उजागर करने के लिए नहीं किया जाता है (जैसा कि प्रारम्भिक ज्ञानोदय विचारकों ने सोचा था) बल्कि केवल उन लोगों को सशक्त और संपन्न बनाने के लिए किया जाने लगा है जो इन अनुसंधान कार्यों को फण्ड (निधि) देते हैं। शायद इसलिए हमारे पास परमाणु हथियार, कृत्रिम बुद्धि संचालित मशीन, कंप्यूटर, और अन्य कई प्रकार की विकसित तकनीक तो हैं लेकिन कैंसर, कोविड जैसी अनेक गंभीर बिमारियों का कोई इलाज नहीं है क्यों।

समाजशास्त्री अलरिच बेक तर्क देते हैं कि वैश्वीकरण के कारण हम एक सूचना समाज का हिस्सा हैं और संभवतः हम एक जोखिम भरे समाज में भी हैं। बेक ने दावा किया कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से समस्त विश्व के लोगों को एक साथ लाने की कोशिश अनेक मानव निर्मित जोखिमों को उत्पन्न कर रही है, विशेष रूप से आतंकवाद, साइबर अपराध, निगरानी, महामारी और पर्यावरणीय क्षति का बढ़ता खतरा। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि आधुनिक समाज का प्रत्येक व्यक्ति इस विकास प्रक्रिया को अपनी जिन्दगी का हिस्सा बनाना चाहता है, अधिक से अधिक आर्थिक लाभ कमाना चाहता है और ज्यादा से ज्यादा वस्तुओं का उपभोग करने में उसे सुख की अनुभूति होती है। प्रतियोगिता, धोखेबाजी, अविश्वसनीयता, आक्रामकता एवं भविष्य के प्रति अविश्वास वे अवयव हैं जो आधुनिक समाजों के मनोविज्ञान को निर्मित करते हैं. लेकिन इस उपभोक्तावादी और दिखावे के समाज में लोकतंत्र और कल्याणकारी राज्य की अवधारणाए कहीं गुम हो गयी हैं या हाशिए पर चली गयी हैं। बड़ी संख्या में किशोर और युवा पीढ़ी भविष्य की असुरक्षा को देखते हुए आत्महत्या की अग्रसर हो रही है। लम्बी बेरोजगारी के कारण युवा अपराध (चोरी, अपहरण, हत्या) और निराशा के जाल में फसने को बाध्य हुए हैं. बच्चे, बूढ़े, महिला, पुरुष सभी डिजिटल नशे के आदी बन चुके हैं। परिवार और नातेदारी जैसी प्राथमिक संस्थाएं भी समाप्ति के कगार पर हैं. लोगो में मैं की भावना इतनी बड़ी हो गयी है कि सामूहिकता से उन्हें परहेज होने लगा है. रेल दुर्घटनाएं, सड़क हादसे, निर्माण कार्यों के दौरान भवनों का गिर जाना, किसी कार्य को करवाने के लिए रिश्वत लेना औए देना, सरकारी नौकरी प्राप्त करने के लिए रिश्वत लेना, पेपर लीक हो जाना क्या ये घटनाएँ भ्रष्टाचार की बढ़ती प्रवृति की ओर संकेत नहीं करते है? क्या इन घटनाओं को समाज में उत्पन्न होने वाले विखंडन के लिए जिम्मेदार नहीं मानना चाहिए। विज्ञान के बारे में कहा जाता रहा है कि विज्ञान व्यक्ति को हिंसा से अहिंसा की तरफ, भय से निर्भयता की तरफ, तथा जकडन एवं असमानता से खुलेपन एवं समानता की तरफ ले जाता है, क्या आज के समय में भी इस तर्क को सही माना जा सकता है यह हम सबके लिए चिन्तन का विषय है। यह भी एक तथ्य है कि वर्तमान में हुए आर्थिक संकट ने विज्ञान एवं सामाजिक संपत्ति (सोशल वेल्थ) के मध्य विसंगति उत्पन्न की है। व्यक्ति ने विज्ञान का सहारा लेकर जिस प्रौद्योगिकी को विकसित किया वह युद्ध एवं हिंसा को प्रोत्साहित करती है। और तो और व्यक्ति ने अपने निकट के सामाजिक सम्बन्धों में युद्ध एवं हिंसा को स्थान देकर अपनी सामाजिक संपत्ति को विघटित कर लिया है। वे वस्तुओं, मशीन, कौशल, ज्ञान, प्रौद्योगिकी इत्यादि से तो लगाव रखते हैं क्योंकि इन साधनों के माध्यम से उनकी आर्थिक संपत्ति (इकनोमिक वेल्थ) में वृद्धि होती है। परन्तु वे सामाजिक सम्बन्धों के प्रति उपेक्षा एवं अधीनस्थता का भाव रखने लगे हैं। आर्थिक उपलब्धियों ने उन्हें इतना अधिक व्यक्तिवादी और अक्खड़ बना दिया है कि वे इस विषय पर कुछ सुनना भी नहीं चाहते। यह भी एक तथ्य है कि वैश्वीकरण और नव उदारवाद के बाद पनपे उत्तर आधुनिक समाज में संस्कृति सतही और अर्थहीन हो गयी है, भावनाएं समाप्त हो रही हैं, संवेदनशीलता समाप्त हो रही है और ऐतिहासिकता की समाप्ति की घोषणा की जा रही है और राज्य तुम वापस जाओ का नारा प्रचलित हो रहा हो तो ऐसे में लोकतान्त्रिक मूल्यों की चर्चा करना कितना उचित होगा। यह बहुत महत्वपूर्ण पक्ष हैं जिन पर सामूहिक बौद्धिक चर्चा होनी चाहिए। यदि सरकार केवल नीति निर्माण तक ही खुद को सीमित रखेगी और उन नीतियों का क्रियान्वयन निजी क्षेत्र के लोगों के हाथों में होगा तो नागरिकों के समक्ष अनेक चुनौतिया उत्पन्न होंगी, उनकी जवाबदेही पर प्रश्न उठाया जा सकता है। ऐसे में लोकतंत्र का स्थान बाजारतंत्र ले लेगा इसमें कोई संदेह नहीं है ।

विश्व पर्यावरण दिवस पर जिला जेल में सात दिवसीय ध्यान सत्र प्रारंभ

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जिला जेल में पिरामिड अनापान सती ध्यान केन्द्र द्वारा सात दिवसीय ध्यान सत्र प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर जेल अधीक्षक श्री योगेन्द्र पमार, पिरामिड अनापान सती ध्यान केन्द्र की संचालिका सुश्री दीपिका भावसार, श्रीमती संतोषी पण्ड्या नागपुर, श्रीमती आरती हमलाई, श्री हेमंत साबले उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा पर्यावरण संवर्धन के प्रति बंदियों को जागरूक किया। साथ ही अनापान सती ध्यान पद्धति से ध्यान लगाने के तरीके तथा ध्यान के लाभों के बारे में बंदियों को जानकारी दी गई। इस दौरान अतिथियों द्वारा जेल परिसर में पौधरोपण भी किया गया।

बी.आर. अंबेडकर कालेज व श्रीराम फार्मेसी कॉलेज में मनाया विश्व पर्यावरण दिवस

बैतूल। बी.आर. अंबेडकर बी.एड. कालेज में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में महाविद्यालय समिति की अध्यक्ष श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल के द्वारा शमी पत्र का पौधारोपण किया। महाविद्यालय के संचालक इंजी ध्रुव प्रकाश अग्रवाल ने पौधारोपण की महत्ता बताई। बी.एड. स्कालर्स एवं स्टाफ द्वारा पौधारोपण किया गया। उसके पश्चात महाविद्यालय एवं आसपास स्वच्छता जागरूकता हेतु कचरा साफ किया। पर्यावरण के स्वच्छता के प्रति सभी को जागरूक होने हेतु अभियान चलाया।

श्रीराम फार्मेसी कालेज बैतूल में मनाया विश्व पर्यावरण दिवस- श्रीराम फार्मेसी कालेज जामठी बैतूल में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य महाविद्यालय समिति की अध्यक्षा श्रीमती सुशीला देवी अग्रवाल के द्वारा शमी पत्र का पौधारोपण किया। महाविद्यालय के संचालक इंजी. ध्रुव प्रकाश अग्रवाल ने पौधारोपण की महत्वता बताई। प्राचार्य श्रीमती रोशनी खातरकर एवं प्रशासनीक अधिकारी श्री अनिल गीद, स्टाफ व स्कालर्स द्वारा पौधारोपण किया गया। पर्यावरण के स्वच्छता के प्रति सभी को जागरुक होने हेतु अभियान चलाया।

अलोक दरवाई को मिला आरबी मॉल का प्रथम पुरस्कार

बैतूल। जून माह में आरबी मॉल में खोले हुए लक्की ड्रा का प्रथम पुरस्कार आलोक दरवाई को मिला है,गौरतलब है कि मॉल में 499/- की अधिक खरीदी पर कूपन भरे जाते हैं जो हर महीने पहले रविवार को कूपन का लक्की ड्रा के माध्यम से खोला जाता है,रविवार को ड्रा के मुख्य अतिथि सतीश साहू, सूर्यदीप त्रिवेदी की मौजूदगी में खोला गया,जिसमें पहला कूपन संस्कार पवार ने निकाला जिसमें लक्की ग्राहक आलोक दरवाई भारत भारती विजेता बने। जिन्हे प्रथम पुरस्कर मिक्सर प्रदान किया गया,जबकि द्वितीय रोशनी पाल और तृतीय पुरस्कार नितिन शर्मा को प्रदान किया गया,विजेताओं को मॉल के संचालक राजू पवार ने बधाई दी ।

3 महीने की बच्ची खौलती हुई सब्जी से 40 प्रतिशत झुलसी

एम्बुलेंस न मिलने से परेशान हुए परिजन

बैतूल/मुलताई। निकटतम ग्राम में एक विचित्र मामला सामने आया है जिसमें एक 13 माह की बच्ची चूल्हे पर सब्जी के बर्तन की चपेट में आकर खौलती सब्जी से बुरी तरह झुलस गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत चोथिया अंतर्गत आने वाले ग्राम बिछुआ खरसाली में बीती रात एक 13 माह की बच्ची अचानक से खोलती हुई सब्जी से झुलस गई और 40 प्रतिशत तक जल गई। बताया

जा रहा है कि ग्राम बिछुआ खरसाली निवासी सुरेश सिंह मरकाम की 13 महीने की सजीता नाम की बच्ची जब उसकी मां घर में खाना बना रही थी तभी अचानक वह सब्जी के बर्तन के पास आई और खौलती हुई सब्जी मे झुलस गई जिससे 40 प्रतिशत तक जल गई। जिसके तत्काल बाद उसे परिजन उसे लेकर मुलताई सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे, जहां अस्पताल में पदस्थ डॉक्टर ने बच्ची का प्राथमिक उपचार कर उसे बैतूल जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया। लेकिन करीब 1 घंटे से भी ज्यादा समय तक एंबुलेंस ना मिल पाने के चलते बच्ची मुलताई अस्पताल में ही भर्ती रही। जैसे ही इस संबंध में जानकारी बीएमओ डॉ अभिनव शुक्ला को प्राप्त हुई उन्होंने तत्काल अपनी निजी कार से बच्ची को बैतूल जिला चिकित्सालय पहुंचाने का निर्णय लिया, बीएमओ बच्ची को अपने वाहन से बैतूल जाने के लिए निकले ही थे कि तभी एंबुलेंस अस्पताल पहुंच गई बीएमओ ने बच्ची को अपने वाहन से एंबुलेंस में शिफ्ट कर सब्जी से झुलसी बच्ची को बैतूल जिला चिकित्सालय भेज दिया। जहां उसका उपचार चल रहा है।

पौधों की आरती और प्रसाद अभिनव पहल : हेमंत खंडेलवाल

जनसहयोग से बंजर जमीन को हरा-भरा करना बेहद प्रशंसनीय : एसपी सिद्धार्थ चौधरी

बैतूल। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को रामनगर महारानी लक्ष्मीबाई उद्यान में पर्यावरण संरक्षण को लेकर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पूर्व सांसद हेमंत खंडेलवाल, पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ चौधरी, स्वछता की ब्रांड एंबेसडर श्रीमती नेहा गर्ग, एसडीओपी सृष्टि भार्गव, नगरपालिका बैतूल सीएमओ अक्षत बुंदेला, ब्रह्मकुमारीज से श्रीमती बीके मंजू, नेशनल मजदूर संघ के अशोक कटारे, रेडक्रास के प्रदेश प्रतिनिधि संजय पप्पी शुक्ला, समाजसेवी शैलेन्द्र बिहारिया, सुनील द्विवेदी, अनंत तिवारी उपस्थित थे। कार्यक्रम में सर्वप्रथम पौधों का पूजन कर सार्वजनिक रूप से पौधों की आरती गीत, संगीत के साथ की गई। पर्यावरण आरती में सबने झूमकर आरती को ओर भी सुंदर बना दिया। पेड़ पौधों की आरती के बाद पौधों का प्रसाद भी उपस्थित जन समूह को बाटा गया, सभी ने पेड़ पौधों का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मैं भी बनूंगा पर्यावरण मित्र, करूंगा पर्यावरण की रक्षा, फ्लेक्स पर हस्ताक्षर अभियान चलाया गया। पेड़ो ने अपनी आत्मकथा चित्रों के माध्यम से कहानी के रूप में प्रदर्शित की।

65 संस्थाओं का हुआ सम्मान- इस अवसर पर पर्यावरण पर काम करने वाली 65 संस्थाओं को मंच से सम्मानित किया गया। उन्हें पर्यावरण प्रहरी सम्मान 2023 से अलंकृत किया गया। शैलेन्द्र बिहारिया ने सभी को पर्यावरण स्वछता व संरक्षण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर पूर्व सांसद हेमंत खण्डेलवाल ने कहा कि पौधों की आरती व पौधों का प्रसाद एक सराहनीय पहल है, प्रत्येक सार्वजनिक कार्यक्रम में पौधे भेंट करना अच्छी पहल है, हम सबको अच्छा काम करने वाले लोगो को सम्मानित करना चाहिए। आज पर्यावरण दिवस पर इतनी बड़ी संख्या में संस्थाओं का सम्मान किया गया यह अभिनव पहल है। पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ चौधरी ने कहा कि जनसहयोग से बंजर जमीन को हरा भरा कर देना प्रेरणादायक कार्य है। रामनगर के लोगो का यह प्रयास पर्यावरण के लिये प्रेरणादायक है। स्वछता ब्रांड एंबेसडर श्रीमती नेहा गर्ग ने कहा कि वेस्ट से बेस्ट को बनाकर भी हम पर्यावरण के क्षेत्र में बहुत कुछ कर सकते है। उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर बैतूल को स्वछता में नंबर वन बनाएंगे। कार्यक्रम में संजय सोलंकी, राकेश एनिया, दीप मालवीय, निमिष मालवीय, पिंकी भाटिया, कृष्णा चौधरी, तुलिका पचौरी, संतोष धनोलिया, सुनील टिकारे, प्रवीण परिहार, दीपाली पांडेय, रजक समाज, दिलखुश ग्रुप, मुख्यमंत्री जनसेवा मित्र, राष्ट्रीय युवा योजना, राष्ट्रीय सेवा योजना, गायत्री परिवार, योग वेदांत समिति, साईं समिति पटवारी कालोनी, राजपूत समाज, शिक्षक परिवार, नगरपालिका स्वच्छ भारत मिशन की टीम सहित 65 संस्थाओं को सम्मानित किया गया।

मानव जाति के संरक्षण के लिए प्रकृति को बचाना जरूरी : सांसद डीडी उइके

बैतूल। सांसद डीडी उइके ने कहा कि मौजूदा परिस्थितियों में पर्यावरण संरक्षण गंभीर चिंतन का विषय है। हमारा समूचा जीवन ही पर्यावरण से जुड़ा है। वृक्षों से हमारा अक्षुण्ण संबंध है। मानव जाति के संरक्षण के लिए प्रकृति को बचाना जरूरी है। हमें धरा को भोगने की प्रवृत्ति त्यागना होगी। प्राकृतिक संतुलन की दिशा में तेज गति से बढना होगा, तभी हम पर्यावरण का संरक्षण कर सकेंगे। सांसद श्री उइके सोमवार को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कलेक्ट्रेट कार्यालय में आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती पार्वतीबाई बारस्कर, प्रभारी कलेक्टर श्री अभिलाष मिश्रा, पर्यावरणविद् श्री मोहन नागर, नगर पालिका उपाध्यक्ष श्री महेश राठौर, जिला योजना समिति सदस्य श्री आनंद प्रजापति सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि, मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री अक्षत बुंदेला, पार्षदगण एवं पर्यावरण प्रेमी उपस्थित थे। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा नगर के पर्यावरण प्रेमियों को सम्मानित किया गया। साथ ही कलेक्ट्रेट परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे भी रोपे गए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में पर्यावरण विद् श्री मोहन नागर ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम आने वाली पीढ़ियों को हरी-भरी धरा देकर जाएं। जो प्राकृतिक धरोहर हमारे पूर्वजों ने दी है, उसको सहेजें। तभी पर्यावरण की रक्षा संभव है। उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति अब समाज में भी जागरूकता एवं चेतना आ रही है। जिले में सतत पौधरोपण का कार्य किया जाकर बंजर पहाडियों को हरा-भरा किया जा रहा है। यह कार्य सतत जारी रहेगा। कार्यक्रम को प्रत्याशा महिला एवं बाल उत्थान समिति की प्रतिनिधि एवं जन अभियान परिषद से संबद्ध समाजसेवी सुश्री तूलिका पचौरी एवं ग्रीन टाइगर्स के श्री तरूण वैद्य ने भी जिले में पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में अवगत कराया। इस दौरान पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाले पर्यावरण प्रेमी श्री मोहन नागर, ग्रीन टाइगर्स संस्था के श्री तरूण वैद्य, प्रत्याशा महिला एवं बाल उत्थान समिति की प्रतिनिधि एवं जन अभियान परिषद से संबद्ध समाजसेवी सुश्री तूलिका पचौरी, रामनगर पौधरोपण ग्रुप के श्री संजू सोलंकी, नगर विकास प्रस्फुटन समिति के श्री निखिल नगदे, बज्जरवाड़ा की ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के श्री पवन परते, प्रस्फुटन समिति/नवांकुर संस्था के प्रतिनिधि श्री राजू आठनेरे, चिचोली के श्री तुलसी गडग़े, आठनेर के श्री दिनेश माकोड़े को सम्मानित करते हुए अतिथियों ने लक्ष्मीतरू के पौधे एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। जिले के समाजसेवी एवं पर्यावरण प्रेमी श्री हेमचंद्र दुबे को भी प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान के लिए नामांकित किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों ने कलेक्ट्रेट परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे भी रोपे। इस दौरान भोपाल में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के मुख्य आतिथ्य में विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम का वर्चुअल प्रसारण किया गया, जिसका अतिथियों एवं उपस्थित सभी लोगों ने अवलोकन किया।

आजादी के बाद पहली बार बनी जम्बाडी पुलिया किंतु अनुपयोगी

सड़क पर झूलते बिजली के तारों से ग्रामीणों को लगता डर

बैतूल/मुलताई। शासन ग्रामीण विकास के नाम पर लाखों रुपए खर्च तो कर रहा हैं किंतु यह देखना भूल जाता हैं कि इतनी बड़ी राशि खर्च होने के बाद नागरिकों के लिए उपयोगी साबित हो रही है या नहीं। इसका एक उदाहरण विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम धारणी जम्बाडी पुलिया है। ग्रामीण जब बताते हैं कि धारणी मात्रा में सब्जी उत्पादक क्षेत्र है। जहां से रोजाना ट्रक पिकअप आदि के माध्यम से सब्जियों को मुलताई पहुंचाया जाता था। लेकिन अब इस मार्ग पर बनी पुलिया के ऊपर बिजली के तार होने के चलते ट्रक और पिकअप का निकल पाना मुश्किल है। ऐसे में जबसे पुलिया का निर्माण हुआ है तब से ग्रामीण परेशानी का सामना कर रहे हैं।इस

पहुंचने के लिए आजादी के बाद से अभी तक मात्र कच्ची सडक़ ही थी, लेकिन कुछ दिनों पहले जम्बाडी से धारणी तक पक्की सडक़ एवं बीच में पडने वाली पुलिया का निर्माण करवाया गया। लेकिन निर्माण करते समय पुलिया की ऊंचाई अधिक होने से पुलिया के ऊपर से जाने वाले बिजली के तार अब पुलिया के करीब आ चुके हैं जिसके चलते यह मार्ग और पुलिया उपयोग हीन हो चुकी है।

इस पुलिया पर से पैदल या बाइक से गुजरने वाले लोग भी करंट की चपेट में आने के डर से इसका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। डर के मारे ग्रामीण पुरानी पुलिया पर से ही बमुस्किल आवागमन करने को मजबूर है। उल्लेखनीय है कि धारणी और आसपास क्षेत्र डैम से सिंचित क्षेत्र होने के कारण बड़ी संबंध में उन्होंने मुलताई क्षेत्र के पूर्व केबिनेट मंत्री विधायक सुखदेव पांसे एवं जिला पंचायत अध्यक्ष दर्जा राज्य मंत्री राजा पवार सहित सभी जनप्रतिनिधियों को अपनी समस्याएं बता चुके हैं। अधिकारियों के संज्ञान में भी ग्रामीणों ने उपरोक्त मामले को लाया था, किंतु अभी तक भी ग्रामीणों को इस समस्या से निजात नहीं मिली है।अधिकारी और जनप्रतिनिधियों का इस ओर ध्यान ना होने के चलते धारणी के ग्रामीणों को आर्थिक नुकसान भी झेलना पड़ रहा है। ग्रामीणों की मांग है कि जल्द से जल्द पुलिया पर से जाने वाले बिजली के तार को हटाया जाए अथवा उसकी ऊंचाई बढ़ाई जाए, ताकि उनका आवागमन सुचारू रूप से बिना डर और भय के संभव हो सके।

बेहतर पर्यावरण संरक्षण हेतु नवीन फ्लोरिन को मिला राज्यस्तरीय प्रथम पुरस्कार, मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के हाथों मिला पुरस्कार

देवास। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बेहतर पर्यावरण संरक्षण के लिए उत्कृष्ट कार्य हेतु शहर के उद्योग नवीन फ्लोरिन इंटरनेशनल लिमिटेड को वर्ष 21-22 हेतु प्रथम पुरस्कार मिला है । सोमवार को भोपाल के रविन्द्र समागम केंद्र में आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान द्वारा कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर राधेश वेलिंग को पुरस्कृत किया गया । इस अवसर पर साईट हेड राजेन्द्र साहू,कारपोरेट ईएचएस हेड दीपक नाईक,विभाग के अभिषेक जैन,और प्रवीण ठाकोर भी उपस्थित थे। साथ ही भोपाल सांसद प्रज्ञा सिंह एवं मध्यप्रदेश प्रदूषण कंट्रोल बोर्ड के सदस्य सचिव चंद्रमोहन ठाकुर भी विशेष रूप से उपस्थित थे।

पर्यावरण दिवस पर हुए अनेक कार्यक्रम

शंकरगढ़ पहाड़ी न्याय वाटिका में विश्व पर्यावरण दिवस पर किया पौधा रोपण

देवास। मप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के निर्देशानुसार जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष प्रभात कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन व श्रीमती निहारिका सिंह सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देवास के निर्देशन पर विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर शंकरगढ़ पहाड़ी पर स्थित न्याय वाटिका में पौधारोपण कर विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में वन विभाग के डीएफओ प्रदीप मिश्रा उपस्थित थे। उनके द्वारा पौधारोपण के रोपण इकाई के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। किस प्रकार से पौधा रोपण कर एक पौधे को वृक्ष के रूप में विकसित कर पर्यावरण का संरक्षण किया जा सकता है एवं उपस्थित लोगों को वन्य संरक्षण पर्यावरण सरक्षण हेतु सहयोग हेतु आश्वस्त किया।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी ने सिविल अस्पताल आमला, उप स्वास्थ्य केन्द्र डहुआ एवं पाढर चिकित्सालय में की स्वास्थ्य पर चर्चा

बैतूल। प्रदेश के लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी द्वारा जिले के सिविल अस्पताल आमला, उप स्वास्थ्य केन्द्र डहुआ एवं पाढर चिकित्सालय में सीधे स्वास्थ्य चर्चा की गई। उप स्वास्थ्य केन्द्र डहुआ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मुलताई में सीएचओ श्रीमती उमा पंवार से सीधी बात कर उनके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं, दवाइयों, भवन एवं उपकरणों एवं उनकी सेवा अवधि की जानकारी लेकर वहां उपचार लेने आये उच्च रक्तचाप से पीड़ित डहुआ निवासी 68 वर्षीय श्री रामप्रसाद पिता श्री रतन बारंगे एवं 64 वर्षीय श्री कचरू श्री रामप्रसाद साबले से वहां मिलने वाली सेवाओं एवं उनसे हुये लाभ की जानकारी ली। दोनों मरीजों द्वारा बतलाया गया कि यहां मिलने वाले उपचार से उन्हें काफी फायदा है और वे अपने को स्वस्थ महसूस कर रहे हैं। साथ ही उप स्वास्थ्य केन्द्र पर सीएचओ द्वारा दी जा रही सेवाओं से वे संतुष्ट हैं।

सिविल अस्पताल आमला में स्वास्थ्य मंत्री डॉ. चौधरी द्वारा डॉ. अशोक नरवरे से ओपीडी, आईपीडी, डिलेवरी, उप स्वास्थ्य केन्द्र सीएचओ और उनके द्वारा किये जा रहे कार्य,

टीकाकाकरण की स्थिति, सिविल अस्पताल भवन एवं कायाकल्प से मिलने वाली राशि की जानकारी ली गई। अस्पताल में भर्ती धात्री महिला श्रीमती वंदना पति श्री रामचन्द्र यादव निवासी सेमरिया जोशी से प्रसव की जानकारी संबल कार्ड की जानकारी ली गई एवं बालिका होने पर उन्हें बधाई दी। स्वास्थ्य मंत्री ने जनरल वार्ड में भर्ती आमला निवासी 26 वर्षीय श्री पूरन पिता कमल से बातचीत कर उनसे आयुष्मान कार्ड अस्पताल की साफ सफाई, मिलने वाले उपचार की जानकारी ली मरीज द्वारा अच्छे उपचार एवं अस्पताल की साफ सफाई पर संतोष जाहिर किया गया।

स्वास्थ्य मंत्री डॉ. चौधरी द्वारा आयुष्मान इनपेनल पाढर चिकित्सालय में भर्ती मरीज चिचोली निवासी 45 वर्षीय श्रीमती किरण आर्य से चर्चा की। श्रीमती किरण ने बतलाया कि उनका तीन वर्ष से डायलिसिस चल रहा है। खमरिया सिवनी निवासी 38 वर्षीय कैंसर पीड़ित श्री जितेन्द्र के परिजन श्री हरीश यादव से स्वास्थ्य मंत्री द्वारा चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि इतना लम्बा एवं खर्चीला इलाज आयुष्मान योजनांतर्गत निःशुल्क हो रहा है। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. चौधरी ने चोरडोंगरी निवासी 26 वर्षीय श्री हेमंत बरखड़े से उनके पैर में हुए इनफेक्शन के इलाज की जानकारी ली। हेमंत ने बताया कि आयुष्मान योजना के अंतर्गत उनके पैर का ऑपरेशन एवं इलाज बिल्कुल निःशुल्क हुआ है। तीनों मरीजों द्वारा आयुष्मान योजना के अंतर्गत निःशुल्क इलाज होने पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी का आभार व्यक्त किया।

2 लाख रूपए की रकम का बेग ऑटो चालक ने लौटाया, दिया ईमानदारी का परिचय

देवास। आज के दौर में लोग पैसो के पीछे भाग रहे है। वही कुछ लोगों में आज भी ईमानदारी जीवित है। एक ऐसा ही मामला सामने आया है। जहां एक ऑटो चालक ने अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए दो लाख रूपए की रकम का बेग लौटाया।

भौंरासा निवासी इरफाना बी पति शरीफ अहमद मिर्जा ने अपने परिवार के साथ 3 जून, शनिवार को शाम 6 बजे फौजी नगर से सुपर मार्केट जाने के लिए एक ऑटो रिक्शा किया था। आदर्श नगर निवासी ऑटो रिक्शाचालक आशिक अब्बासी उन्हें सुपर मार्केट ले गया, जहां सभी परिवारजन सुपर मार्केट उतर गए। परिवार के सदस्यें ऑटो में करीब दो लाख रूपए तक की रकम का बैग भूल गए। परिवार के लोग सुपर मार्केट से अपना काम निपटाकर भौंरासा के लिए निकल गए। घर जाकर परिवारजनों ने अपना सामान देखा तो उन्हें सोने की रकम का बेग नही दिखा, जिससे व काफी घबरा गए और पुनः देवास आ गए। सभी दूर तलाश करने के बाद जब बेग नही मिला तो वे सिटी कोतवाली थाना पहुंचे। शनिवार को देर रात्रि तक बेग का पता नही लग पाया। ऑटो चालक आशिक अब्बासी ने भी बेग लौटाने के लिए इरफाना बी के परिवारजनों को जगह-जगह ढूंढा, लेकिन कोई पता नही लग पाया। सवारी के सदस्यों का नाम, नम्बर व पता नही होने पर ऑटो चालक ने सुरक्षित रूप से बेग अपने पास रख रखा। सिटी कोतवाली थाने में पदस्थ रोहित यादव एवं श्याम बिहारी शर्मा के अलावा भौंरासा पार्षद इरफान शेख, अफजल मंसूरी, हासिम मिर्जा, दिलवर लाला, शाहरूख शाह, कय्युम वारसी के सहयोग से ऑटो चालक का पता चला। ऑटो चालक आशिक ने बताया कि वो डर रहा था कि पुलिस उससे पूछताछ करेगी, इसलिए वह थाने नही गया। उसे अंदाजा था कि सवारी अपना बेग ढूंढते हुए जरूर आएगी। अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए ऑटो चालक ने दो लाख रूपए की रकम का बेग इरफाना बी को सौंप दिया। परिवार के सदस्यों ने उसकी ईमानदारी से खुश होकर ऑटो चालक को 1 हजार रूपए नगद राशि देकर सम्मानित किया

विश्व पर्यावरण दिवस पर विधायक ने किया पौधारोपण-सिटी फॉरेस्ट में लगभग 5 हजार पौधों का रोपण हुआ

देवास। विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून सोमवार को मध्यप्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा नगर निगम के सहयोग से व्यापक पैमाने पर विभिन्न प्रजातियों के पौधों का रोपण मधुमिलन चौराहा स्थित सिटी फॉरेस्ट में सुबह 10.45 बजे विधायक श्रीमंत गायत्री राजे पवार के द्वारा सभापति रवि जैन, विधायक प्रतिनिधि भरत चौधरी, आयुक्त विशाल सिंह चौहान, लोक निर्माण समिति अध्यक्ष गणेश पटेल, स्वास्थ्य समिति अध्यक्ष धर्मेन्द्र सिंह बैस के साथ पौधारोपण किया। पौधारोपण में गुलमोहर, कचनार, शीशम, सप्तपर्णी, मूंगा, अमलताश, नीम, पारस पीपल, आम, आंवला, बड़, बादाम, जामुन, करंज जैसी प्रजातियों के लगभग 5 हजार पौधों का रोपण मियावाकी (सघन) पद्धति से किया गया। इस अवसर पर स्वच्छता सर्वेक्षण 2023 के अंतर्गत टाटा चौराहा स्थित ऐकेवीएन के नवनिर्मित पार्क में अनुपयोगी रिसायकल प्लास्टिक की बॉटलों से स्वच्छता में विश्व किर्तिमान बनाने के लिए 1 किलोमीटर लंबी स्वच्छता की दीवार बनाए जाने का शुभारंभ विधायक द्वारा किया गया। सरला स्व सहायता समूह द्वारा अतिथियों को जूट से निर्मित उपयोगी वस्तुएं भेंट की। इस अवसर पर विधायक श्रीमंत गायत्री राजे पवार ने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा पूरे प्रदेश में बड़े पैमाने पर पौधा रोपण करने का संदेश दिया। पर्यावरण दिवस पर शहर को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए आने वाली पीढ़ी को स्वच्छ व सुंदर वातावरण मिले। इसी संकल्प के साथ हम सभी ने मिलकर पौधा रोपण किया तथा आगे भी निरंतर पौधा रोपण किए जाने हेतु संकल्पित है। उसी की कड़ी में प्लास्टिक की अनुपयोगी बॉटलों को रिसायकल कर स्वच्छता की दीवार 1 किलोमीटर की बनाने जा रहे हैं। जिससे सभी नागरिकगण प्रेरणा लेकर अनुपयोगी प्लास्टिक की बॉटलों का सुदपयोग करके स्वच्छता की दीवार बनाने में सहयोग करेंगे। नगर निगम द्वारा ऐसी अनुपयोगी बॉटलों को रिसायकल कर स्वच्छता की दीवार तैयार कर विश्व किर्तिमान बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इस कार्य के लिए उन्होनें नगर निगम को बधाई दी। इन अवसरों पर ब्रह्मकुमारी बहने, पार्षद रितु सवनेर, राजा अकोदिया, महेश फुलेरी, पार्षद प्रतिनिधि रामचरण पटेल, प्रवीण वर्मा, इरफन अली, पूर्व पार्षद मनोज राय, सुनील योगी, मिलिंद सोलंकी, निगम कार्यपालन यंत्री नागेश वर्मा, सहायक यंत्री जगदीश वर्मा, सौरभ त्रिपाठी, उद्यान प्रभारी दिनेश चौहान, स्वास्थ्य अधिकारी जितेन्द्र सिसौदिया, स्वास्थ्य निरीक्षक भूषण पंवार, हेमंत उपनारे, ओमप्रकाश पथरोड़ आदि सहित गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। इसी अवसर पर करीब 200 स्कूली बच्चों के साथ निगम आयुक्त विशाल सिंह चौहान ने पौधों का रोपण मधुमिलन चौराहा स्थित सिटी फॉरेस्ट में किया।

जल बचाना जीवन बचाने के समान : सचिन दवे

महाराजा भोज स्नातकोत्तर महाविद्यालय में किया गया पौधारोपण

धार। महाराजा भोज स्नातकोत्तर महाविद्यालय धार में विश्व पर्यावरण दिवस पर कॉलेज ऑडिटोरियम के बाहर महाविद्यालय के छात्र एवं अध्यापकों ने दैनिक जीवन में जल बचाने का संकल्प लिया. मुख्य अतिथि पर्यावरणविद विक्रम विश्वविद्यालय कार्यपरिषद सदस्य सचिन दवे एवं देवी अहिल्या विश्वविद्यालय कार्यपरिषद सदस्य आनंद पवार रहे .अध्यक्षता कॉलेज जनभागीदारी समिति अध्यक्ष दीपक बिड़कर ने की . कॉलेज प्राचार्य प्रोफ़ेसर बघेल भी मंच पर उपस्थित रहे .संचालन प्रोफेसर इंजु खान द्वारा किया गया. अतिथियों ने जल को दैनिक जीवन में किस प्रकार से बचाया जा सकता है इसके लिए छात्रों को टिप्स दिए एवं हमारे आसपास स्थित जल स्त्रोत की सफाई करके उन्हें पुनः रिचार्ज करने के लिए आह्वान किया.अतिथि उद्बोधन के पश्चात पर्यावरणविद सचिन दवे द्वारा सभी छात्रों एवं अध्यापकों को जल को सुरक्षित रखने एवं बचाने की शपथ भी दिलाई गई. उसके उपरांत सभी अतिथि एवं छात्रों द्वारा बगीचे में पौधारोपण किया गया .इस अवसर पर बड़ी संख्या में छात्र ,प्राध्यापक उपस्थित रहे, जनभागीदारी समिति सदस्य आशीष बोरासी, अभिषेक मिश्रा सहित एनएसएस और एनसीसी के छात्र अध्यापक विभूते प्रोफ़ेसर सिंगल प्रोफ़ेसर सोनी प्रोफ़ेसर पाठक एनएसएस प्रभारी चौहान सर उदय निगवाल सर आदि उपस्थित थे।

5 सप्ताह ,13 बावड़ी और 1 तालाब

2500 हाथ 30 घंटे श्रमदान 300 ट्राली पॉलीथिन कचरा=स्वच्छ जलधारा अभियान

धार। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर धार नगर का स्वच्छ जलधारा अभियान पहुंचा देवीजी तालाब, जहां पर्यावरण प्रेमियों का सम्मेलन श्रमदान के साथ संपन्न हुआ एवं 1 पेड़ देश के नाम की हुई शुरुआत। 1 घंटे चले इस श्रमदान कार्यक्रम में सैकडो की संख्या में पर्यावरण प्रेमी जुटे एवं 1 घंटे तक तालाब के अंदर किया गया श्रमदान जहा 4 ट्रॉली कचरा,पॉलीथिन,पूजन सामग्री एवं जीर्ण क्षीण हो चुकी देवी देवताओं की फोटो एवं प्रतिमाओं को निकाला गया।श्रमदान के पश्चात मंचीय कार्यक्रम की हुई शुरुआत।मंच पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में पर्यावरणविद पिराग सिंह डावर,कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के प्रांत कार्यवाहक विनित नवाथे,नगर पालिका अध्यक्ष,नगर पालिका सीएमओ निशीकांत शुक्ला, नेहा महेश बोड़ाने मंचासीन रहे।मुख्य अतिथि पिराग सिंह डावर ने अपने उद्बोधन में एक बात कही जो सबके दिलो को छू गई उन्हें कहा की मैने इस धरती को अपनी मां माना है और मेरी मां को हरी चुनरी हमारे कुकर्मो के कारण जीर्ण क्षीण हो चुकी है और मैं उसमे अपने सामर्थ्य से टाके तो लगा सकता हूं इस संकल्प के साथ में सम्पूर्ण देश में पौधारोपण किया है।

साथ ही नवाथे जी ने मंच से एक पेड़ देश के नाम की रूप रेखा रखी

जिसके अंर्तगत धार नगर के प्रत्येक नागरिक को अपने घर में बीज रोपित कर छायादार पौधो की नर्सरी विकसित करनी है और जिस दिन राम लला अयोध्या में विराजित होंगे उसी दिन इन्ही पौधो को धार में एक निश्चित स्थान पर लगाया जाएगा और एक सिटी फॉरेस्ट विकसित किया जाएगा जिसका नाम राम वन नाम रखा जायेगा।इस योजना के अंतर्गत धार नगर की प्रत्येक बस्ती में हरित समिति का निर्माण भी किया जाएगा जिसमे हर सप्ताह श्रमदान किया जाएगा।कार्यक्रम का संचालन पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के राहुल अग्रवाल ने किया,अतिथि परिचय संजय गुजराती द्वारा किया गया ,स्वच्छ जलधारा अभियान की भूमिका पराग भोसले ने रखी एवं आभार प्रदर्शन जसप्रीत सिंह सलूजा ने किया।कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।कार्यक्रम के पश्चात वसुंधरा फाउंडेशन द्वारा स्वल्पाहार का आयोजन किया गया।

इस पूरे अभियान में इन संस्थाओं का रहा सहयोग आओ सहज़े धरा, भू माई फाउंडेशन,भारत विकास परिषद, सेवा भारती,श्री मति उषा देवी सेवा संस्थान, जन अभियान परिषद, लायंस क्लब,रोटरी क्लब, सुपर 60 लालबाग ग्रुप,वसुंधरा फाउंडेशन, टैक्स बार एसोसिएशन, क्रिकेट एसोसिएशन, हॉकी क्लब, फुटबॉल क्लब, पतंजली सेवा समिति।

पर्यावरण दिवस पर नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष ने दिलाई जीवनशैली की शपथ

सुबह सवेरे सोहागपुर

नगर पंचायत परिसर कार्यालय में नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष श्रीमति लता यशवंत पटैल ने पर्यावरण दिवस के अवसर पर पर्यावरण के लिए जीवन शैली की शपथ दिलवाई ।इस अवसर पर रामगोपाल चौबे सहित नगर पंचायत परिषद के कर्मचारी उपस्थित थे।

लाड़ली बहना योजना के स्वीकृति पत्र वितरित किए

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की महत्वकांक्षी योजना लाडली बहना योजना जिसका शुभारंभ 10जून से होना है। आज योजना के स्वीकृति पत्र शास्त्री वार्ड एवं सरदार वार्ड के हितग्राहियों को प्रदान किए गए। स्वीकृति पत्र वितरण के दौरान नप अध्यक्ष प्रतिनिधि यशवंत पटेल के नेतृत्व में घर घर पहुंचकर नगर की लाडली बहनों का यशवंत पटेल ने पैर पढ़कर आशीर्वाद प्राप्त कर प्रमाण पत्र वितरित किए। इस दौरान नपा उपाध्यक्ष प्रदीप आकाश रघुवंशी, पूर्व उपाध्यक्ष जगदीश अहिरवार, पूर्व पार्षद राकेश चौरसिया, पार्षद रवि उइके, विधायक प्रतिनिधि आश्विन सरोज, जिला उपाध्यक्ष अभिनव पालीवाल, अनिल गहरैया, नीरज यादव, अंकित कुबरे, मनोज गोलानी, नगर परिषद के संजय परसाई, सूरज पथरिया, विक्की ठाकुर, राजेश कुशवाहा, राजीव शर्मा आदि उपस्थित थे।

जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल के विरुद्ध एक बार फिर बगावत बुलंद हुई

जिले में भाजपा का बिखराव शुरू..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय। जिले के भाजपाइयों में विगत 9 माह से निरंतर बिखराव और बगावत के चलते दिखाई देने लगा कि भाजपा चुनावों में जीत के लिए संगठित नहीं हो पाई है। अलबत्ता जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल के खराब व्यवहार और मिस मैनेजमेंट के चलते हालात अब और बद से बदतर हो गए हैं। जिले में अब नया बवाल यह हुआ जिसमें मंडल अध्यक्षों को हटाकर दो नए मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति उनके गले की फांस बन गया। इस मामले में नाराज कार्यकर्ताओं ने गत दिनों भोपाल पहुंचकर सबनानी से मिलकर नाराजगी व्यक्त करते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं का आरोप लगाया था कि सिर्फ झूठे वर्चस्व के लिए अहंकारी रवैया दिखाकर कार्यकर्ताओं के कैरियर और सामाजिक प्रतिष्ठा से जिलाध्यक्ष द्वारा खिलवाड़ किया जा रहा, जिनमें अच्छे समर्पित कर्मठ पदाधिकारियों को टारगेट करते हुए अपमानजनक तरीके से हटाया है। कार्यकर्ताओं का कहना था है कि जिलाध्यक्ष ने जिले में इतनी गुटबाजी फैला दी, की उनकी परिक्रमा करने वाले निठल्ले पदाधिकारियों को बढ़ावा देकर उन्होंने कर्मठ कार्यकर्ताओं को किनारे कर दिया। नाराज पार्टी कार्यकर्ताओं ने जिलाध्यक्ष पर घर बैठे बैठे षड्यंत्रों द्वारा भाजपा चलाने का आरोप लगाते हुए सोशल मीडिया पर अपने इस्तीफे फेसबुक और वाट अप प्लेटफॉर्म पर डालने शुरू कर दिए। इसे लेकर हड़कंप मच गया। बनखेड़ी के सूत्रों ने बताया कि कुछ दिन पूर्व दो पूर्व जिलाध्यक्षों ने भी भोपाल में हाईकमान के सामने बनखेड़ी के संजय जैन बंटी की सोसायटी के मामले में एवं जिले में पार्टी के बिखराव को लेकर जिलाध्यक्ष के भूत उतार दिए थे। जबकि अनुशासित और एक अच्छी पार्टी मानी जाने वाली भाजपा आज बिखरती हुई मछली बाजार में तब्दील हो रही है..? जिलाध्यक्ष माधवदास अग्रवाल के विरोध की आंच इतनी तेज है कि उसकी लपेट में संघ प्रचारक अनिल अग्रवाल भी घिरते दिखाई देने लगे, इससे महसूस होता है कि सत्ता के नशे में आखिरकार भाजपा में भी व्यक्ति का महत्व बढ़ गया और विचारधारा गौण हो गई।

जन्मदिवस पर सार्थक पहल: नगर के 14 शिवालयों से बिल्वपत्र ओर शमी के 501 पौधों का किया गया वितरण

सुबह सवेरे नालछा। आज के आधुनिक दौर में जन्मदिवस के अवसर पर जरूरत से अधिक दिखावा कर बड़े बड़े आयोजन करना और बड़े बड़े केक काटकर पूरे शरीर पर केक लगाने की परंपरा के बीच भाजपा जिला मंत्री एवं नालछा जनपद सदस्य पवन कुशवाह ने अपने जन्मदिवस ओर पर्यावरण दिवस के सुखद संयोग पर सार्थक पहल करते हुए अपने जन्मदिवस को यादगार बनाते हुए नगर के 14 शिवालयों से बिल्वपत्र व शमी के 501 पौधों का वितरण करते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया. मुख्य कार्यक्रम नालछा की जीवनदायनी नदी माँ नलकच्छ गंगा के तट पर विराजै श्री गंगेश्वर महादेव मंदिर पर किया गया जहाँ भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक व पूजन अर्चन कर महाआरती की गई..और फिर फरियाली प्रसादी का वितरण किया गया साथ ही श्री सर्वेश्वर एकता परिषद जो पिछले 8 वर्षों से पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन और पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित कार्य करती आ रही है उक्त संस्था के माध्यम से 501 बिल्वपत्र ओर शमी के पौधों का वितरण किया गया .जनपद सदस्य श्री कुशवाह ने बताया कि हमारी सनातन संस्कृति में आदि-अनादि काल से पेड़ पौधों ओर पर्यावरण के संरक्षण का महत्व है जैसे बरगद,पीपल, निम,बिल्वपत्र, शमी,आंवला,पलाश

आदि वृक्षो का पूजन और हिन्दू धर्म मे गोत्र अनुसार एक वृक्ष प्रजाति का संरक्षण इसी बात को ओर पर्यावरण के संरक्षण को दर्शाता है .आज जन्मदिन के अवसर पर 501 पौधों का वितरण के साथ पर्यावरण संरक्षण से सम्बंधित कार्य निश्चित ही अन्य लोगो को भी प्रेरणा देगा.कार्यकम के माध्यम से नशामुक्ति का संकल्प भी दिलवाया गया. इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मोहनलाल शर्मा,पंडित उपेंद्र(राजू)शर्मा,राष्ट्रपति पुरुष्कार प्राप्त शिक्षक सुभाष यादव,राजेश राठौड़,नालछा थाना प्रभारी अभिनव शुक्ला,नालछा सरपंच मोहन डावर,उपसरपंच राकेश कुशवाह,पूर्व उपसरपंच विनोद सिंह ठाकुर,वरिष्ठ कांतिलाल शर्मा,संतोष राठौड़,महेश जायसवाल,शेखर कुशवाह,रूपसिंह मंडलोई,सुरेश दायमा,निखिल ग्वाल,श्याम जायसवाल,करण जिराती दायमा,कपिल बड़गुर्जर,रामेश्वर बड़गुर्जर,देवकरण भगत,गणेश मंडलोई,नंदकिशोर कुशवाह,सोनू मंडवाल,जीवन दायमा,आकाश कुशवाह,राकेश कुशवाह सहित सर्वेश्वर एकता परिषद एवं गंगेश्वर महादेव मंदिर समिति के सदस्यों सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे...

विद्या भारती नर्मदापुरम का नवीन आचार्य प्रशिक्षण वर्ग प्रारंभ ,12 जून को होगा समापन

सुबह सवेरे सोहागपुर

विद्या भारती मध्यभारत प्रांत भोपाल की योजनानुसार सात दिवसीय नवीन आचार्य शिक्षण वर्ग सरस्वती शिशु मंदिर गोविंदनगर में आयोजित किया गया है। इस प्रशिक्षण शिविर में भोजपुर ग्राम भारती जिला रायसेन एवं नर्मदापुरम जिले के नव चयनित आचार्य दीदियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार सात दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण सरस्वती शिशु मन्दिर गोविन्द नगर (बनखेड़ी) में प्रदान किया जाएगा। 12 जून सुबह तक चलने वाले प्रशिक्षित शिविर में शिशु शिक्षा, विद्या भारती का लक्ष्य, शिशु मन्दिर योजना एक परिचय, शिक्षण कौशल, संपर्क सवाद, हमारी वन्दना, प्रार्थना, सांस्कृतिक जीवन मूल्यों की शिक्षा, भारतीय शिक्षा दर्शन, पंचकोशी शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण,

शैक्षिक क्षेत्र की चुनौतिया एवं हमारी भूमिका आदि विषयों पर विस्तार से जानकारी दी जाएगी। सुबह पांच बजे जागरण से लेकर रात्रि 10 बजे तक विविध गतिविधियों, सत्रों के माध्यम से शारीरिक कार्यक्रम, शिक्षण गतिविधि, विमर्ष, चर्चा सत्र, स्वाध्याय, खेल एवं भारत मां की आरती कार्यक्रम प्रतिदिन नियमित रूप से किए जाएंगे। इस प्रशिक्षण वर्ग में विभाग और प्रांतीय पदाधिकारियो का मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। प्रथम दिवस पर प्रातः योगाभ्यास कराया गया । शुभारंभ में अतिथि राकेश रघुवंशी बीआरसी सोहागपुर ने सरस्वती शिशु मंदिर के संस्कार शिक्षा के संबंध में अपनी बात रखते कहा कि सरस्वती शिशु मंदिर व्यक्तित्व निर्माण का कार्य करने के साथ शिक्षा, भारतीय संस्कृति भारतीय शिक्षा नैतिक शिक्षा आदि विषयों पर सारगर्भित बात रखी। रायसेन जिला प्रमुख राजेंद्र ठाकुर ने विश्व पर्यावरण के दिवस पर सभी को पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने का आव्हान किया। इस अवसर पर चरणसेवकजी प्रजापति महेन्द्रसिंह चौहान आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीपप्रज्वलित करके किया गया।

आय.डी.ए. ने किया पौधा रोपण

देवास। इंडियन डेंटल एसोसिएशन द्वारा देवास के देवास विकास प्राधिकरण के परिसर में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर देवास के डेंटिस्ट द्वारा पर्यावरण के प्रति जागरूकता बढ़ाने हेतु वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस अवसर पर कई महत्वपूर्ण जानकारियां आई डी ए प्रेसिडेंट डॉ. अशोक सिंह सेंधव द्वारा प्रदान की गई। उन्होंने बताया कि पर्यावरण को वर्तमान में बढ़ रही कार्बनिक गैसे जैसे क्लोरोफ्लोरो कार्बन और कार्बन मोनोऑक्साइड का स्तर लगातार बढ़ रहा है जो जीवनदायी ओज़ोन परत को नुकसान पहुंचाती है, इसलिए वृक्षारोपण करना बहुत जरूरी है।

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सतपथ ने किया पौधरोपण- दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के आव्हान पर विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सतपथ देवास द्वारा स्थानीय मां दुर्गेश्वरी देवी उद्यान रानी बाग उज्जैन रोड देवास के गार्डन में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के संयुक्त महासचिव महेन्द्र बाकलीवाल एवं उज्जैन रीजन अध्यक्ष विमल जैन के मुख्य अतिथि में दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सतपथ देवास के समस्त दम्पति सदस्यों द्वारा पौधा रोपण का आयोजन किया गया। पौधा रोपण में आम, जाम, नीम, आंवला, चेरी, सफेद गुलाब, लाल गुलाब, जामुन, पेल्टाफॉर्म, गुलमोहर, बादाम एवं 10 तुलसी के पौधों का रोपण दंपति सदस्य द्वारा किया गया। पौधा रोपण के उपरांत सुस्वादु भोजन का आयोजन किया गया जिसके आयोजक एवं प्रायोजक उपाध्यक्ष संजय-बीना जैन कटारिया, कोषाध्यक्ष शैलेन्द्र-प्रीति जैन (टेलीफोन) सहसचिव लोकेन्द्र-अनिता जैन रहे। आभार सचिव शैलेन्द्र जैन दोशी ने माना। उक्त जानकारी ग्रुप प्रचार प्रसार सचिव प्रदीप जैन ने दी।

भारत स्काउट/गाइड जिला संघ देवास ने मनाया पर्यावरण दिवस- जिला शिक्षा अधिकारी देवास पदेन जिला कमिश्नर स्काउट हीरालाल खुशाल के मार्गदर्शन में शास. महारानी राधाबाई कन्या उ. मा. वि. देवास में विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजश्री काले व सुरेन्द्र गायधने भारतीय रेलवे के इंजीनियर तथा कार्यक्रम की। अध्यक्षता मनोज जोशी अध्यक्ष भारत स्काउट/गाइड जिला संघ देवास ने की। विशेष अतिथि अश्विन घोरपडे जिला सह सचिव व मनोज पटेल जिला संगठन आयुक्त स्काउट थे। अतिथियों ने माँ सरस्वती जी की पूजा अर्चना कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। अतिथियों का स्वागत स्काउट परम्परा अनुसार स्कार्फ वागल पहना कर किया। अतिथियों व स्काटर गाइडर ने पर्यावरण के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात निबंध, चित्रकला व वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साथ ही संस्था में सभी ने पौधारोपण किया ओर हरियाली का संदेश देने के लिए रैली निकाली। कार्यक्रम के अंत में सभी अतिथियों ने शपथ दिलाई।

पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करना हम सबकी जिम्मेदारी- वर्मा- पर्यावरण की रक्षा करना, निरंतर पौधारोपण, साफ-सफाई, वायु प्रदूषण कम करना, जल स्त्रोतों को स्वच्छ रखना यहां काम केवल सरकार का ही नहीं है। हम सबको मिलकर पर्यावरण का संरक्षण एवं संवर्धन करना होगा। इस कार्य में युवा वर्ग की महत्वपूर्ण भूमिका है। उक्त विचार नगर निगम पार्षद रुपेश वर्मा ने जन शिक्षण संस्थान द्वारा पर्यावरण दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। जन शिक्षण संस्थान देवास के निदेशक डॉ. मुकेश प्रसन्न ने बताया कि संस्थान द्वारा संचालित समस्त केंद्रों पर पर्यावरण दिवस के अवसर पर साफ-सफाई और पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा की गई। जवाहर नगर में आयोजित कार्यक्रम में संस्थान से प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रशिक्षणार्थियों द्वारा पौधारोपण कर साफ-सफाई की गई। साथ ही वर्ष पर कार्य करने की शपथ ली।

दलित संघ सामाजिक संस्था के अध्यक्ष भाईजी अहिवार नियुक्त

सुबह सवेरे सोहागपुर

दलित संघ सामाजिक संस्था की नवीन कार्यकारणी के चुनाव संपन्न हुए ।जिसमें संस्था ने रजिस्टार फर्म्स सोसाइटी के समस्त नियमों का पालन करते हुए विधिवत सूचना सदस्यों को दी गई थी। संम्पन्न चुनाव में अध्यक्ष श्री भाईजी अहिरवार,उपाध्यक्ष ठाकुरदास अहिरवार, सचिव रतन उमरे, कोषाध्यक्ष अशोक चौरसिया ,सह सचिव सुनील रघुवंशी ,सदस्य लखनलाल अहिरवार, गंगाबाई अहिरवार को सम्मानित सदस्यों द्वारा मनोनीत किया गया। समाजसेवियों, संस्थाओं के पदाधिकारियों ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाइयां दी।

राइट क्लिक

इस्तीफा मांगना और उसे न देना नई राजनीतिक नैतिकता...!

अजय बोकिल

लेखक सुबह सवेरे के वरिष्ठ संपादक हैं।
संपर्क-
9893699939
ajaybokil@gmail.com

आजादी के अमृत वर्ष में भारतीय राजनीतिक नैतिकता का लुब्बो लुआब यह है कि अब देश में लापरवाही और भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सत्ताधीशों से इस्तीफा मांगना और उसे किसी कीमत पर न देना एक सर्वमान्य रिवाज बन चुका है। वैसे लापरवाही और भ्रष्टाचार सगे सम्बन्धी भले न हो, लेकिन दोनो में चचेरा रिश्ता तो है ही। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। फर्क इतना है कि भ्रष्टाचार का सियासी डीजे कानफोडू ढंग से बजता है तो लापरवाही की पुंगी जांच, निलंबन आदि की नक्कारखाने में दब कर रह जाती है। ताजा दो मामले इसी नई नैतिकता के बुरे उदाहरण हैं। ओडिशा के बालासोर जिले के पालनपुर स्टेशन पर सुरक्षा के तमाम दावों के बावजूद तीने ट्रेंने किसी वीडियो गेम की माफिक भयानक ढंग से टकरा गई और करीब पौने तीन सौ बेकसूर यात्रियों की जानें गंतव्य तक पहुंचने से पहले ही चली गईं। लगभग एक हजार घायलों का इलाज अस्पतालों में चल रहा है। इस देश में ट्रेनें पटरी से उतरती रही हैं, यदा कदा दो ट्रेनों की टक्कर भी हुई है, लेकिन तीन ट्रेने आपस में भिड़ जाएं, यह देख पूरी दुनिया हैरान है। इस हादसे के बाद भी जैसा कि होता है कि मंत्रियों-अफसरों के दौरे हुए। मुआवजा वगैरह घोषित हुआ। अलबत्ता एक अलग बात यह हुई कि पहली बार किसी ऐसे हादसे में कोई प्रधानमंत्री सांत्वना देने पहुंचा। पीएम मोदी घटनास्थ पर पहुंचे और उन्होंने कहा कि इस भयंकर हादसे के लिए दोषी किसी को नहीं बख्शा जाएगा। इस हादसे में भी मरने वाले अधिकांश लोग गरीब थे, जो रोजी रोटी के लिए अपने घर से दूर किसी दूसरे शहर या गांव के लिए निकले थे। उधर रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने पहले कहा कि हादसे के पीछे तकनीकी खामी है। बाद में उनको लगा कि इसके पीछे कोई साजिश हो सकती है, लिहाजा मामले की सीबीआई जांच होनी चाहिए। यानी रेलवे को अभी भी यह समझ नहीं आ रहा है कि यह मुआ हादसा हुआ क्यों ? प्रधानमंत्री की परेशानी भी समझी जा सकती है, जब वो लगातार 'वंदे भारत' ट्रेनों को हरी झंडी दिखाकर आधुनिक रेलवे की नई रंगत का अहसास करवा रहे हैं, तब रेलवे ने हादसों का अपना पुराना इतिहास क्यों दोहराया? वह भी इतना भीषण?

इसी के समांतर मामला बिहार का है, जहां भागलपुर जिले में गंगा नदी पर आठ सालों से बन रहा पुल दूसरी बार ढह गया। मुख्य मंत्री नीतीश कुमार ने आला अफसरों को जांच के आदेश दिए। राजद नेता और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने अजीब तर्क दिया कि पुल का कुछ हिस्सा पहले ही गिरा था, सो हमने पूरा ढहा दिया ताकि नया बनाया जा सके। इस पुल के ढहने से 1717 करोड़ रू. भी पानी में बह गए। नीतीश ने अफसरों से पूछा कि यह पुल अब तक क्यों नहीं बना। अब तक बन जाना चाहिए था। यानी मैं तब भी सीएम था, अब भी हूं। अब उन्हें यह कौन समझाए कि बार- बार गिरने वाला पुल पूरा कैसे बन सकता है। वैसे भी नीतीश इन दिनों विपक्ष को एकजुट करने में लगे हैं, ऐसी छोटी बातों के लिए उनके पास वक्त कहां? लेकिन दूसरी तरफ बालासोर रेल हादसे में रेल मंत्री से इस्तीफा जरूर मांगा।

ऐसा नहीं है कि इस देश में पहले रेल हादसे नहीं हुए। एक दलील तो अंग्रेजों के जमाने की रेल दुर्घटना की भी दी गई, जिसमें आठ सौ से ज्यादा लोग रेल हादसे में नदी में डूब कर मर गए थे। मौका देखकर सोशल मीडिया में बालासोर हादसे को साम्प्रदायिक तड़का देने की कोशिश भी हुई, जिसका ओडीशा पुलिस ने दृढ़ता से खंडन किया। वैसे भी गंगा जैसी विशाल और पवित्र नदी पर तथा उसमें भी बिहार पुल बनाना चुनौती भरा रहा है। क्योंकि गंगा का पात्र बहुत बड़ा और धार तेज होती है। बिहार में गंगा नदी पर करीब आधा दर्जन बड़े पुल हैं। अगुवानी से सुल्तानगंज तक इस पुल का निर्माण 2014 से चल रहा था। पिछले साल भी तेज हवा और आंधी से इस पुल का एक हिस्सा ढह गया था। यानी यह पुल दूसरी बार गिरा है। मजे की बात यह है कि नीतीश सरकार अब यह कह रही है चूंकि इस पुल की डिजाइन ही गलत थी और इसके निर्माण में गड़बड़ी थी, इसलिए वह गिरा नहीं, गिराया जा रहा है। यह बात तो कोई अनाड़ी भी समझेगा कि यदि किसी पुल या इमारत को गिराया जाता है तो उसकी सूचना आम लोगों को पहले से दी जाती है। गंगा पर बना यह पुल जिस तरह वीडियो में ध्वस्त होता हुआ दिख रहा है, उसके पीछे केवल भ्रष्टाचार का डाइनामाइट ही है। इसे समझने के लिए किसी यांत्रिक ज्ञान की गरज नहीं है।

अब बात राजनीतिक नैतिकता की। बालासोर रेल हादसे के बाद अपेक्षानुरूप विपक्ष ने रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव से इस्तीफा मांगा। नैतिकता के पुराने हवाले दिए गए (यह बात अलग है कि किसी भी रेल मंत्री के इस्तीफे से रेल व्यवस्था में क्रांतिकारी सुधार हुआ, याद नहीं पड़ता)। रेल नेटवर्क के विस्तार के उलट रेल सुविधाओं और रियायतों में और कमी हो गई। अत्यधिक दबाव के बीच रेल का आंतरिक तंत्र भी कमजोर होता गया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का तो आरोप है कि मोदी सरकार में रेल मंत्रालय का महत्व घटाने की वजह से ऐसा हो रहा है। वैसे विपक्ष के आरोपों का तोड़ मोदी सरकार ने इसका तोड़ वंदे भारत ट्रेन के रूप में पेश किया, लेकिन बालासोर हादसे ने फिर रेलवे और सरकार को आत्मावलोकन पर विवश कर दिया है। पहले रेल मंत्री ने दावा किया था कि हादसे के असली कारण की पहचान कर ली गई है। दुर्घटना प्वाइंट मशीन और इंटरलॉकिंग इंटरफीयरेंस के कारण हुई। लेकिन दूसरे ही दिन उन्होंने मामले की सीबीआई जांच की जरूरत बताई। सरकार को शक है कि तकनीकी गड़बड़ी के पीछे कोई साजिश भी हो सकती है। एक कारण साफ है कि रेल ट्राफिक नियंत्रण व्यवस्था में भारी ढिलाई और लापरवाही है। इस बदहवासी के बीच ताजा खबर यह है कि ओडिशा में एक और रेल पटरी से उतर गई है।

उधर बिहार में नीतीश कुमार ने बालासोर रेलवे हादसे पर तो रेल मंत्री का इस्तीफा मांग लिया, लेकिन अपने ही राज्य 1717 करोड़ का पुल और वो भी दूसरी बार ढहने पर भाजपा द्वारा उनसे इस्तीफा मांगने की बात को टाल गए। नीतीश की गठबंधन सरकार में शामिल कांग्रेस के एक नेता धर्मेन्द्र कुमार ने भी पुल ढहने की जांच सीबीआई से कराने की मांग कर दी। कुल मिलाकर तस्वीर यूं बनी है कि ओडीशा में रेल हादसा होने पर कांग्रेस और जदयू रेल मंत्री से इस्तीफा मांगते हैं और बिहार में पुल हादसा होने पर भाजपा नीतीश से इस्तीफा मांगने लगती है। लेकिन इनमें से कोई भी 'आत्मग्लानि' महसूस कर अथवा नैतिक आधार पर इस्तीफा देना तो दूर, ऐसा सोचने की गलती भी नहीं कर रहा। इससे भी टेढ़ा सवाल यह है कि अपराधों आर्थिक घोटालों की जांच करने वाली सीबीआई तकनीकी गड़बड़ी की जांच कैसे करेगी? क्या वह रेलवे के इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम को हिरासत में लेगी या ध्वस्त हो चुके गंगा पुल पर रेड डालेगी?

जमीनी हकीकत यह है कि हम कितने ही आधुनिक होने और प्रौद्योगिकी विकास की बातें करें, हमारी मूल मानसिकता वही है। हादसों की जांचें पहले भी होती आई हैं, लेकिन किसी मामले में बड़ी मछली तड़पती दिखी हो, ऐसा शायद ही हुआ है। ज्यादातर जांच रिपोर्टें तब आती हैं, जब तक नए हादसे की जमीन तैयार हो चुकी होती है। और जिम्मेदारी तय होने के नाम पर वो बेचारे छोटे मुलाजिम नपते हैं, जिन्होंने बड़ों के दबाव में भ्रष्टाचार को आजीविका की गारंटी माना हुआ होता है। बालासोर हादसे में भी किसी व्यक्ति की जिम्मेदारी तय होगी, इसकी संभावना कम ही है। यांत्रिक गड़बड़ी में लापरवाही का केस बनेगा। आपरेटर टाइप के लोग निपट जाएंगे और रेल गाड़ियां भी करप्शन की पटरी पर नई रिस्क के साथ दौड़ने लगेंगी। वही हाल गंगा पुल का भी होगा। गंगा मैया ने ही शायद भ्रष्टाचार के इस पुल को बनने नहीं दिया होगा। लेकिन उसकी भी एक सीमा है। इस देश मे भ्रष्टाचार अब महासागर की तरह हिलोरें ले रहा है। गंगा पर पुल हो या रेल की पटरियां सब की नियति वही है। ऐसे किसी से इस्तीफा मांग लेना महज एक राजनीतिक कर्मकांड है, जो साल में कई बार दोहराया जाता है, यह जानते हुए भी कि कहीं कोई इस्तीफा देने वाला नहीं है और कभी भूले भटके दे भी दिया तो उसकी भी बड़ी कीमत मांगेगा।

धार के एसपी को लेकर दिग्विजय सिंह की सोशल मीडिया पर तीखी पोस्ट

पुलिस के कार्यक्रम में भाजपा नेता आपके साथ क्यों दिखाई दिए

इंदौर। पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने धार के पुलिस अधीक्षक (एसपी) मनोज कुमार सिंह पर सोशल मीडिया कमेंट किया है। उन्होंने एसपी द्वारा ग्रामीणों को 'राम राज्य' स्थापित करने की शपथ दिलाए जाने पर कड़ी आपत्ति जताई है। दिग्विजय सिंह की आपत्ति का मुख्य कारण सामुदायिक पुलिसिंग के इस कार्यक्रम में भाजपा के प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल की मौजूदगी है।

कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने यह भी लिखा कि आप इस शपथ ग्रहण की सूचना जनता द्वारा निर्वाचित आदिवासी विधायक सुरेंद्र सिंह बघेल को भी सूचित करते? आपने निष्पक्षता से काम करने की शपथ ली है। दिग्विजय सिंह ने फेसबुक पर अपनी पोस्ट का ट्वीट भी किया है। दिग्विजय सिंह ने अपनी पोस्ट में लिखा कि ये संविधान की शपथ लेकर सरकारी यूनिफॉर्म पहने धार के एसपी मनोज कुमार सिंह हैं। बगल में नारंगी कुर्ता पहने भाजपा के प्रदेश मंत्री जयदीप पटेल हैं। धार के पास कुक्षी विधानसभा के डही इलाके में ग्रामीणों को शपथ दिला रहे हैं कि पुलिस पर भरोसा करें। लेकिन, कुक्षी विधानसभा सभा के जनता द्वारा निर्वाचित विधायक जी को एसपी साहब आपने सूचित करने की आवश्यकता महसूस नहीं की।

एसपी साहब आप पर संविधान के अंतर्गत नियमों के अनुसार कार्य करने का दायित्व है। लेकिन, आपके साथ भाजपा के पदाधिकारी दौरा कर रहे हैं। क्या यह उचित है? क्या यह आपकी निष्पक्षता दर्शाता है? क्या शासकीय अधिकारी को इस प्रकार का पक्षपात करना संविधान के अनुसार है? आप जब आलीराजपुर एसपी थे तब जोबट उप चुनाव में क्या आपने निष्पक्षता से कार्य किया था? कुछ उदाहरण मेरे पास हैं। किस प्रकार आपने चुन चुनकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर झूठे प्रकरण बनाए थे। आपकी ज़िम्मेदारी है कि बिना भेदभाव किए सबको मुकम्मल सुरक्षा का भरोसा जगाएँ। आपकी ज़िम्मेदारी है कि बेटियों को बाहर निकलकर पढ़ने लायक सुरक्षित माहौल बनाएँ। आपकी ज़िम्मेदारी है कि अपराधियों पर नज़र रखें और क़ानूनी कार्रवाई करें आपकी ज़िम्मेदारी है कि नियमों के पालन के नाम पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं पर द्वेषपूर्ण कार्रवाई न करें।

आपकी ज़िम्मेदारी है कि ड्यूटी में रहते हुए बीजेपी नेताओं की चाकरी में न घूमें। आपकी ज़िम्मेदारी है कि जनता को मिलनेवाली मूलभूत सुविधाओं की अनियमितता पर नज़र रखें। आपकी ज़िम्मेदारी है कि संविधान के मूल्यों का पालन करते हुए जनता का हक़ उन्हें दिलाएँ। क्या आपकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि आप इस शपथ ग्रहण की सूचना जनता द्वारा निर्वाचित आदिवासी विधायक सुरेंद्र सिंह बघेल को भी सूचित करते? आपने निष्पक्षता से काम करने की शपथ ली है। कृपया आप आत्मचिंतन करें क्या आप भाजपा के एजेंट के रूप में काम नहीं कर रहे? क्या संविधान व नियमों के विपरीत कार्य करना 'राम राज्य' है? क्या होने वाले विधानसभा चुनाव में आपकी निष्पक्षता पर हम भरोसा करें? सोचना पड़ेगा। दिग्विजय!

बेटे ने हाथ पकड़े, तलाकशुदा पति ने गला रेत दिया

चरित्र शंका में महिला की हत्या, बेटे के मन में मां के लिए भर दी थी नफरत

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर पुलिस ने 48 घंटे पहले हुई महिला की हत्या का खुलासा करते हुए बताया है कि आरोपी उसका सगा बेटा और तलाक ले चुका पति है। महिला ने आरोपी से दूसरी शादी की थी। हत्या की वजह चरित्र शंका है। आरोपी तलाकशुदा पति महिला पर शक करता था। उसने उसके सगे बेटे के मन में भी मां के लिए नफरत घोल दी थी।

पूरे प्लान के साथ यह हत्या की गई। सगे बेटे ने मां के हाथ पकड़े, तलाकशुदा पति ने गर्दन पर चाकू मारे। महिला के मरने के बाद कार में डालकर हाईवे पर ले गए और शव को किनारे गड्ढे में फेंक आए। हत्याकांड में दो और लोग शामिल हैं। चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस के मुताबिक, शुरुआत से ही हत्याकांड में आरोपी पति पर शक था। महिला का शव तो मिल गया था, लेकिन बेटा लापता था। इसलिए माना जा रहा था कि कहीं उसके साथ तो कुछ गलत नहीं हुआ। जब आरोपी पकड़े गए तो यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ।

महिला ने 8 महीने पहले ही आरोपी से तलाक लिया था

रानी जाटव (40) ग्वालियर शहर के गोल पहाड़िया इलाके में रहती थी। 22 साल पहले रानी की शादी गोहद (भिंड) में हुई थी। यह शादी 4 साल चली। इसके बाद दोनों ने तलाक ले लिया। पहले पति से रानी के दो बेटे छोटू (20) और विनय (18) हैं। दोनों मां के साथ रहते थे। पहले पति से तलाक के कुछ साल बाद रानी ने गोल का पहाड़या निवासी विजय सिंह निधार उर्फ कल्लू से शादी कर ली। 15 से 16 साल तक यह रिश्ता चला और अभी 8 महीने पहले रानी ने विजय से भी तलाक ले लिया। इस बात से विजय काफी बौखलाया हुआ था। उसने रानी की हत्या करने की भी धमकी दी थी। रानी ने विजय से दूसरी शादी की थी। 15 से 16 साल शादी चली, अभी 8 महीने पहले ही उसने विजय से तलाक लिया था। इसके बाद से ही विजय उसकी हत्या की साजिश रच रहा था। बेटे को भी प्लान में शामिल कर लिया।

रास्ते से कार में डालकर ले गए थे आरोपी

2 जून को रानी शहर में ही अपनी मां से मिलने गई थी। साथ में उसका छोटा बेटा विनय भी था। रात में लौटते समय जब वह अपने घर के सामने पहुंची ही थी, तभी वहां एक ईको कार आकर रुकी। इसमें से उसका तलाकशुदा पति और कुछ युवक उतरे। रानी को जबरन कार में डालकर ले गए। विनय भी साथ हो लिया। पुलिस मौके पर पहुंची तो दुपट्टा, चप्पल और खून पड़ा मिला था।

बड़े बेटे ने देख लिया था घटनाक्रम

एसएसपी ग्वालियर राजेश सिंह चंदेल के मुताबिक, आरोपियों ने पूछताछ में पुलिस को बताया कि रानी की हत्या के बाद उसके शव को पनिहार नयागांव के पास हाईवे किनारे गड्ढे में फेंक दिया था। विनय ने मां के हाथ पकड़े, तलाकशुदा पति ने गर्दन पर चाकू से वार किए। हत्याकांड में दो साथी गोलू कुशवाह और राज जाटव ने भी मदद की। आरोपियों ने दूसरे दिन यानी शनिवार दोपहर पुलिस को फोन कर खुद ही महिला का शव पड़ा होने की जानकारी दी थी। पुलिस ने शाम 5 बजे पनिहार नयागंव के पास से शव बरामद किया। पुलिस के मुताबिक, जिस समय महिला का घर के सामने से ही अपहरण हुआ था, तब घर पर खड़े महिला के बड़े बेटे छोटू ने इस घटना को देखा था। वह कार के पीछे दौड़ा भी था। पुलिस को शुरुआत से ही शक उसके दूसरे पति पर था। गिरफ्तारी के बाद सख्ती से पूछताछ की तो सारा सच सामने आ गया।

परिक्रमा

प्रदेश में विभिन्न समाजों को साधने में लगे शिवराज

अरुण पटेल

लेखक सुबह सवेरे के प्रबंध संपादक हैं।
संपर्क-
09425010804
07999673990

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान इन दिनों प्रदेश में चुनावी मौसम की आहट होने लगी है इसलिए विभिन्न समाजों और वर्गों को रिझाने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दे रहे हैं। जिस ढंग से विभिन्न समाजों के महापुरुषों की जयंती आदि पर अवकाश की घोषणा शिवराज कर रहे हैं उसको देखते हुए अब देखने वाली बात यही होगी कि छुट्टियों के क्षीरसागर में लिटायमान मध्यप्रदेश को और कितने दिन और नये अवकाश के कारण अवकाश-सुख लेने का अवसर मिलेगा। वैसे ही पांच दिन का सप्ताह किया जा चुका है इसलिए यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर कितने कामकाजी दिन दफ्तरों में होंगे।

रविवार 4 जून का दिन विभिन्न समाजों के द्वारा अपनी ताकत दिखाने और राजनीतिक दलों से अधिक से अधिक मोलभाव करने का रहा। शिवराज ने ऐलान कर दिया कि प्रदेश में अब परशुराम जयंती पर सरकारी अवकाश रहेगा। जिन मंदिरों के पास कृषि भूमि नहीं है वहां पुजारियों को पांच हजार रुपये मानदेय मिलेगा। मंदिरों की जमीन को नीलाम करने का हक भी पुजारी को रहेगा। संस्कृत विद्यालय के पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थी को 8000 रुपये, छठवीं से आठवीं तक के विद्यार्थी को 10 हजार रुपये प्रदान किये जायेंगे। घोषणाओं की यह मूसलाधार झड़ी शिवराज ने ब्राह्मण महाकुंभ में लगा डाली। शिवराज ने कहा कि मध्यप्रदेश में लव तो चल सकता है लेकिन जिहाद किसी कीमत पर नहीं चलने दिया जायेगा। ब्राह्मण आयोग गठित करने की मांग पर उन्होंने आश्वासन दिया कि इस पर विचार करके फैसला किया जायेगा। ब्राह्मण समाज के लोगों को टिकट देने की मांग पर उन्होंने कहा कि पर्याप्त प्रतिनिधित्व मिलेगा। ब्राह्मण महाकुंभ हो और उसी समाज के भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष हों तो फिर वह कहां पीछे रहने वाले थे। सांसद विष्णुदत्त शर्मा ने मांग की कि

पांच एकड़ में ब्राह्मण समाज के गरीब बेटै-बेटियों के लिए संस्थान बनाकर बच्चों को प्रशिक्षित किया जाये तथा यह संस्थान में भोपाल में बने। शर्मा ने कहा कि ऐसे कई सेवानिवृत्त आईएएस व आईपीएस अफसर हैं जो यह कार्य करने को तैयार हैं।

इसी दिन आयोजित अखिल भारतीय किरार क्षत्रिय महासभा और अखिल भारतीय धाकड़ महासभा के महासंगम 2023 में शिवराज का कहना था कि यदि हम ठान लें तो बड़े से बड़ा काम हर कोई करके दिखा सकता है। संकल्प लें कि हम गरीब नहीं रहेंगे और गरीबी को पूरी तरह से हटायेंगे। शिक्षा, नशामुक्त समाज, उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे। पर्यावरण की रक्षा और बेटियों का सम्मान करेंगे तथा ऐसे संकल्प लें कि दिल्ली तक आवाज जाये। शिवराज का कहना था कि किरार-धाकड़ समाज का हल और बंदूक से नजदीक का रिश्ता है। हम अत्याचार व अन्याय के विरुद्ध होने के साथ ही अन्न के भंडार भरने वाले हैं। उल्लेखनीय है कि शिवराज सिंह चौहान किरार महासभा के संरक्षक भी हैं और उनकी धर्मपत्नी साधना सिंह किरार महासभा की राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। साधना सिंह ने अपनी समाज से आग्रह किया कि आज के समय में मनचाहे जीवनसाथी की परिभाषा बदल गई है, बेटा-बेटी नाम कमा रहे हैं, इसलिए उनके कैरियर का ध्यान रखें। कलचुरी समाज के महा सम्मेलन में शामिल हुए शिवराज ने कहा कि मेरे निर्माण में कलचुरी समाज का बड़ा योगदान रहा है। समाज से राष्ट्र बनता है, अलग-अलग समाजों की प्रगति होगी तो राष्ट्र की भी प्रगति होगी। समाज के उत्थान के लिए सरकार पूरा-पूरा सहयोग करेगी। समाज की मांगों का उल्लेख करते हुए शिवराज ने कहा कि कलार बोर्ड के गठन को लेकर जो मांग की गयी है उसका स्वरुप कैसा होगा इस पर चर्चा करने की जरुरत है। बोर्ड का प्रस्ताव हम तय कर सकते हैं। इस प्रकार विभिन्न समाजों का प्रयास यही है कि चुनावी सीजन में जितना अधिक से अधिक सरकार से प्राप्त किया जा सके वह कर लिया जाए।

किसी समय मध्यप्रदेश में बहुजन समाज पार्टी का पर्याय रहे फूलसिंह बरैया इन दिनों कांग्रेस पार्टी में हैं और उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ता व किसान सम्मेलन में सुसनेर में कहा कि आगामी विधानसभा चुनाव में भाजपा मध्यप्रदेश में 50 सीटों का आंकड़ा भी नहीं छू पायेगी। अगर भाजपा 50 सीटें लायी तो राजभवन के सामने अपने हाथों अपना मुंह काला कर लूंगा। उनका दावा है कि भाजपा को दलित, मुस्लिम और पिछड़ों का वोट नहीं मिलेगा। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया पर निशाना साधते हुए बरैया ने कहा कि कांग्रेस को डुबोने के लिए वह भाजपा में गये लेकिन वहां जाकर वे स्वयं डूब गये। आने वाले समय में जब प्रदेश में कांग्रेस का झंडा लहरायेगा तब सिंधिया कहां जायेंगे। चुनावी मौसम में बयानवीर नेताओं के ऐसे बयान अक्सर सुर्खियां बनते रहेंगे, भले ही चुनाव में उनका कोई विशेष प्रभाव देखने को न मिले।